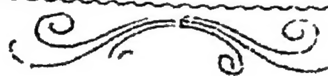


Printed by

Srilal Jain

at the JAINSIDDHANTPRAKASHAK PRESS,

9, *Bishwakosh Lane, Baghbazar Calutta*



भूमिका ।

यह "ज्ञानावली" मेरे परम पूज्य स्वर्गीय पितृदेवने बडे ही प्रेमसे अपने जैनी भाइयोंके स्वाध्यायके लिये संगृहीत की थी। धर्म्मबन्धुओंके बडे आग्रहसे ग्रहण करनेके कारण, उनके जीवन कालमें इस संग्रहको तीन बार छपवानेकी आवश्यकता हुई थी। आज उनके स्वर्गवास को ९ वर्ष होने चला, इधर कुछ दिनोंसे इस पुस्तककी मांग बहुत थी परन्तु नाना कारणोंसे मुझे अवकाश न मिलने और विशेष कर मेरा स्वास्थ्य खराब हो जानेसे इस ग्रन्थके प्रकाशनमें विलम्ब हुआ। जोधपुर (मारवाड़) निवासी प्रख्यातनामा पं० रामकरणजीका मुझे यहां संयोग प्राप्त हो जाने से उन्होंने इस ग्रन्थको सहर्ष संशोधन कर दिया था। अतः मैं इस कष्टके लिये उनका विशेष आभारी हूं। पं० श्रीलालजीने प्रूफ देखनेमें सहायता दी है उनको भी मैं धन्यवाद देता हूं। अच्छी छपाई और कागजके लिये प्रयास किया गया है। जिन भाइयों के लिये यह पुस्तक पुनः प्रकाशित की जाती है उन लोगोंके उपयोगी होनेसे परिश्रम सफल समझूंगा। छपाईमें जो कुछ अशुद्धियां रह गई हों, आशा है कि पाठकगण उन्हें सुधार कर जयणासे इस ग्रन्थको पढ़ेंगे। शुभमिति।

कलकत्ता।
४८, इंडियन मिरर स्ट्रीट
वैशाख सु० १५

निवेदक—
पूरणचन्द नाहर

सूचीपत्र

सिज्झाय

सिज्झाय

लावणी

स्तवन





॥ अथ तेरे (१३) ॥

॥ ढालकी बडी साधु वंदना ॥

॥ दोहा ॥



रिहंत सिद्ध साधु नमो, नमता कोड़ कल्याण। साधु तणा गुणं गायसां, मनमें आनन्द आंण ॥ १ ॥ गुण गाऊं गिरुवां तणा, मन मोटे मंडाण। गिरुवा सहजे गुण करे, सीझै वंछित काम ॥ २ ॥ इणहिज अढी द्वीपमें, जयवंता जग-दीश। भाव करी वंदन करूं, उच्छुक मन अति लीन ॥ ३ ॥ भाव प्रधान कह्यो तिसै, सबमैं भावज जांण। ते भावे सबकूं नमूं, अनंत चौबीसी नाम

॥ ४ ॥ उठ प्रभात समरो सदा, साधु बंदना सार
गुण गावो मोटा तणा, पाप रोग सब जात ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ चाल—चौपाईनी ॥

॥ पांच भर्त पांच ऐरब जाण, पांच महाविदेह बखाण। जेह अनंत हुवा अरिहंत, कर जोड़ी प्रणमूं ते संत ॥ १ ॥ जेहि बड़ा बिचरें जिन चन्द, क्षेत्र विदेह सदा सुख कन्द। कर जोड़ी प्रणमूं तसु पाय, आरत विघन सहु टल जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनंता पनरे भेद, ते प्रणमूं मन धरिय उमेद। आचारज प्रणमूं गणधार; श्री उवझाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सदा प्रणमूं केवली, काल अनाद अनंते बली। जेहि बड़ा बिचरै गुणवंत, साधु साधवी सहू भगवंत ॥ ४ ॥ ते सहु प्रणमूं मन उल्लास, अरिहंत सिध नै साधु प्रकाश। साधु बंदना करूं हितकार, ते सांभलज्यो सहू नरनार ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणही जम्बू द्वीपमें, भरतज नाम क्षेत्र। जिनवर वचन लहि करी, निरमल कीधा नेत्र ॥ १ ॥ तिहां चौवीसे जिन हवा, ऋषभादिक महावीर। पूर्व भव करी प्रणमिये, पांमीजै भवतीर ॥ २ ॥ पूर्वभव

चक्रवर्त्त थया, ऋषभ देव निरभीक । अजितादिक तेवीस जिण, राजा सहु मंडलीक ॥ ३ ॥ लत लेई पूरव चवदै, ऋषभ भण्यां मनरंग । पूरब भव तेवीस जिन, भण्या इग्यारे अंग ॥ ४ ॥ वीस स्थानक तिहां सेविया, बीजै भव सुर राय । तिहांथी चवि चौवीस जिण, ते हुवा प्रणमूं पाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ नमणी षमणी एहनी ए देशी ॥

॥ श्री चक्रवर्त्त पूर्व भव जांण, बैरनाभ तिहां नाभ बखांण। ऋषभ देव प्रणमूं जग भांण, गुण गावतां हुवैं जन्म प्रमांण ॥ १ ॥ विमराई पूर्व भव नाम, अजित जिणेसर करूं प्रणाम । विमलवाहन पूर्व भवराय, श्री संभव प्रणमूं चित लाय ॥ २ ॥ पूर्व भव धर्मसी राजांन, अभिनंदन प्रणमूं शुभ ध्यानं पूरव भव थया सुमत प्रसिद्ध, सुमत जिणेसर प्रणमूं सिद्ध ॥ ३ ॥ पूर्व भव राजा धर्ममित्त, पद्म प्रभुजी नै बांदूं नित्त । पूर्व भव जे सुंदर बाहू, तेह सुपास प्रणमूं जग नाहू ॥ ४ ॥ पूर्व भव द्रगवाहु मुनीस, चंद्र प्रभु प्रणमूं निशदीस । जगबाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं सुबद जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लठबाहू पूर्वभव जांस, श्री शीतल प्रणमूं हुलास । दीन राई कुल तिलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥

इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवंत, वासपूज बांदूं भगवंत। पूर्वभव सुन्दर बडभाग, बांदूं विमल धरी मनराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महिन्दर, तेह अनंत जिन प्रणमूं सुखकर। साधु शिरोमण सिंहरथ राय, धर्मनाथ बांदूं चितलाय ॥ ८ ॥ पूर्वभव मेघरथ गुण गाऊं, शान्तिनाथ जिनवर चितलाऊं। पूरवभव रूपी मुनि कहिये, कुंथनाथ प्रणम्यां सुख लहिये ॥ ९ ॥ राय सुदर्शण मुनि विख्यात, बांदूं अर्जुन त्रिभुवन तात। पूरवभव नन्दन मुनिचंद, ते प्रणमूं श्री मल्लिजिनंद ॥ १० ॥ सींह गिरी पूरब भव सार, मुनिसुब्रत जिन जग आधार। अदीनशत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोडी प्रणमूं नमिनाथ ॥ ११ ॥ संख नरेसर साधु सुजान, रहनेमी प्रणमूं गुणखांण। राय सुदर्शण जेह मुनीश, पार्श्वनाथ प्रणमूं निशदीस ॥ १२ ॥ छट्ठे भव पौटिल मुनि जांण, कोड़ि बरस चारित्र प्रमाण। चौथे भव नन्दन राजांन, कर जोड़ी प्रणमूं वर्द्धमान ॥ १३ ॥ चौवीसे जिनवर भगवंत ज्ञान दर्शण चारित्र अनंत। वारंवार करूं परणाम, अष्टकर्म क्षय करिवा कांम ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मेरु थकी उत्तर दिसे, एहिज जम्बूद्वीप। ईरव

खेत्रं सुहामणो, जिण विध मोती सीप ॥ १ ॥ जिहां चौवीसे जिन हुवा, चंद्रानण वारिषेण । एही चौवीसी में सही, ते प्रणमूं समसेण ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ चाल राग वेराग्री ॥

॥ चंद्रानण जिन प्रथम जिनेसरु दूजा श्री सुचंद भगवन्तक, अगियसेण तीजा तीर्थंकर । चौथा श्री नन्दसेण अरिहंतक ॥ त्रिकर्ण शुद्ध सदा जिन प्रणमूं ॥ १ ॥ ऐरव खेत्र तणां रे चौवीसक । ऋषभादिक स्वांमी अनुक्रम हुया, एक समे जन्म्या जगदीसक ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पांचमा निशदिन थुणीजै, बलिहारी छठां जिनरायक । सोमचंद सातमा जिन समरूं, जुत्तिसेन आठमा सुप सायक ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजियसेण जिन प्रणमूं, दशमा श्री शिवसेण उदारक । देव सम्मा इग्यारमा ध्याऊं, बारमा निषत सहित सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमां असंजल जिन तारक, चवदमा श्री जिननाथ अनन्तक । पनरमा उपसन्त नमीजै सोलमां श्री गुत्तसेन महंतक, ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सतरमां अतिपास सुणीजै, प्रणमूं अठारमा श्री सुपासक । ऊगणीसमा मरुदेव मनोहर वीसमा श्रीधर प्रणमूं हुल्लसक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ इकवीसमा समकोठ सुहंकर,

वावीसमा प्रणमूं अगीसेणक । तेवीसमा अगीपुत्र अनोपम, चोवीसमां प्रणमूं बारीषेणक ॥ त्रि०॥ ७॥ चौथे अंग थकी ए भाष्या, अड़तालीस जिणेसर नांमक। छठे अंग कह्या मुनि सुव्रत, सुख विपाक जग-बाहु स्वामक ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ जिन पचास ए प्रवचन बचने, एम अनंत हुवा अरिहंतक । बहरखांन वली जिनवर बिचरै, केवली साध सहू भगवंतक ॥त्रि०॥९॥ सिद्ध थया वले संप्रति बिचरै, कर जोडी प्रणमूं तसु पायक । हिव जे आगम नाम सुणीजे, ते मुनिवर कहिस्यूं चित लायक ॥ त्रि०॥ १० ॥ प्रथमज जिनवर गणधर समणी, चक्रवर्त्त हलधर बलि तेहक। पूरब भव तसु नांमज गुण गायस्युं, चौथा अंग थकी तेहक ॥ त्रि०॥ ११॥ चौवीसे जिन तीरथ अंतर, कोड़ असंख्य हुया मुनि सिद्धक। कर जोड़ी प्रणमूं ते पो. संम, नाम कहूं हिव जे परसिद्धक ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ राग धन्यासरी—ए देशी ॥

॥ पो सम प्रणमूं ऋषभ जिणेसरु, श्री मरुदेवा सिद्ध सुहंकरु । चौरासी गणधार सिरोमणि, उसभ सेण मुनिवर प्रणमूं सुखभणि ॥ १ ॥ उल्लालो० ॥ सुखभणी प्रणमूं बाहुबल मुनि, सहस चौरासी मुनि।

वीस सहस प्रणमूं केवली वले, सिध थया त्रिभुवन धणी ॥ तीन लाख समणी धुर नमूं, नित नाम ब्राह्मी सुन्दरी । सहस चालीसे केवली बले, नमूं श्रमण चित धरी ॥ २ ॥ आरीसे घर भरथ नरेसरु, ध्यान वले कर केवल लहे बरु । सहस दसे संघाती नरपति, बिचरे जगमें प्रणमूं सुभ मति ॥ ३ ॥ ॥ ऊ० ॥ सुभ मति जम्बूद्वीप पन्नोती बखाणियै, भरतनी परे लहे केवल क्षेत्र इरव जाणिये ॥ वन्दियै चक्री इरवो मुनि भाव सूं नित मन रली । हिवे भरथ पाटै आठ अनुक्रम बन्दिये नृप केवली ॥ ४ ॥ श्री आईजस महाजस केवली, अइवल महिवल तेज विरियें वली । कीरत विरियै दंड विरियें ध्याइयै, जल विरिय मुनि नित गुण गाइयै ॥५॥ऊ०॥ गाइये ताणां अंग मुनिवरे, एह भाष्या संजती । श्री ऋषभ ते वले अजित अंतर, हिवे सुणो कहूं सुभ मति । पचास लाख कोड़ सागर, तिहां असंष्य केवली । जे थया मुनिवर तेह प्रणमूं, असुभ दुरगति निरदली ॥ ६ ॥ अजित जिनेसर नेऊ गणधरू, धुर प्रणमूं सहसेण सुहंकरू । प्रणमूं पो सम फगु साहुणी, हर्ष सूं वांदूं सगड़ महामुनि ॥ ७॥ ऊ० ॥ महामुनि सगड़ तीस लाषै, कोड़ अंतर जे थया । केवली मुनिवर

तेह प्रणमूं, दोय कर जोडी सया॥ श्री संभव चारूं मुनिवर, चित सामा ते गुण रमूं। लाष दशेही कोड सागर, अंतरै सिध सहू नमूं॥ ८॥ श्री अभिनन्दन प्रणमूं गुणपती, वैरनाभ मुनि अजिया सती। सागर लाखै नवकोड़ अंतर, केवली जे थया वन्दियें सुभ परे॥ ९॥ ऊ०॥ सुभ पर सुमत जिणेसर गणधर, चमर कासवि अज्जया। नेऊ सहस कोड़ सागर, विच नमूं जे सिद्ध थया॥ श्री पद्मप्रभु सीस नामी, सुछिये ऋषि वन्दिये। साहुणी तेरइ नामे, प्रणम्यां दुख दूर निकन्दिये॥ १०॥ कोड़ सहस नव सागर विच वली, प्रणमूं मुनिवर जे थया केवली। श्री सुपास जिन विध गुणदधि, प्रणमूं सीमा समणी गुणनिधी॥ ११॥ ऊ०॥ गुणनिधी नवसे कोड़ सागर, अंतरै जे केवली। तेह प्रणमूं भावस्यूं ए, दुख जावै सहु टली॥ श्री चन्द्रा प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये। नेऊ सागर कोड़ अंतर, केवली गुण गाइये॥ १२॥

॥ ढाल ५ मी॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणू—ए देशी॥

॥ सुवध जिणेस मुनिवरा ए, साहुणी वन्दिये चित्त उछाह ए। अंतरो कोड़ नव सागर सहु जिहां,

कालिक सूत्रनो बोह भाखी तिहां ॥ १ ॥ स्वामी शीतल जिन साध आनन्द ए, सती सुलसा नमूं चित आनन्द ए। एक सागर कोडं तणो अंतरो कह्यो, एकसो सागर ऊणो कर संग्रह्यो ॥ २ ॥ सहस छावीस छयासठ लाख ऊपरै, कालिक सूत्र नो छेद इण अंतरै। श्री श्रेयांस मुनि गोथ वधाइयै, धारणी साहुणी वले चरण चित लाइयै ॥ ३ ॥ पूर्व भव गुरु कहूं साध संभूत ए, विस नन्दी वले सुगुण संयुत्त ए। अचल मुनिधुर नमूं पढम हलधरा ए, बंधन नृप पृष्ट केशव शिरंधरा ए ॥ ४ ॥ चौपन सागर बिच थया केवली, वन्दियै सूत्रतो वोह भाख्यो वली। इम बिछेद बिच सात जिण अन्तरै, जाणिये शान्ति जिन-वर लखे इण परे ॥ ५ ॥ स्वामी वासपुज्य जिन साधु सी धर्मधर, साहुणी वले जिहां धरणि उपद्रव हर। सुगुरु सुभद्र सु बंधव वखाणिये, विजे मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि जाणिये ॥ ६ ॥ तीस सागर बिच अन्तरे जे थया, केवली वंदिये भाव भगत सया। विमल जिन वन्दिये साध सिमन्धर वली, समणी धरणी धरा आगम सांभली ॥७॥ गुरु सुदरशन मुनि सागर दत्त ए, भव हरि बंधव भद्र शिव पत्त ए। नव सागर बिच अंतर केवली, जे थया ते सहू वंदिये वालि वलि ॥८॥

स्वामी अनंत जिन प्रणमिये जसु गणो, समणी पोमा नमूं सुगुरु श्रेयांस मुनि । सीस अशोक सु प्रणमूं प्रभावती, भ्रात पुरुषोत्तम केशव नृपती ॥९॥ सागर च्यार नो अंतरो भाखिये, केवली वंदने सिवसुष चाखिये । जिणवर धर्म अरव गणधर कहूं, सती समणां सेवा शिव सुष लहूं ॥ १० ॥ पूर्वभव कृष्ण गुरु ललत तसु सीस ए, राम प्रणमूं सु दरसण निस दीस ए । बंधव पुरस सीह केशव भयो, आ श्रवणंच सुमर पुढवी गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बिच आंतरे भाषिये, पुण्य पल्योपम ऊणो करि दाखिये । तिहां कण राय ऋसी मधव मुनिवर भयो, जे धन छोडिनै सुध संयम थयो ॥ १२ ॥ चौथे चक्रीसर सनत कुमार ए, वंदिये अंत किरिया अधिकार ए । इण अन्तर मुनि मुक्ति गया जिके, केवली वंदिये भाव भगतै तिके ॥ १३ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कर वासा—ए देशी ॥

॥ सोलमां श्री सांति नमूं चक्रि जिनराया, चक्रा युध गणि समणि सु प्रणम्यां सुख पाया । पूर्वभव गंगदत्त गुरु तसु सिस वाराह, बंधव पुरस पुण्डरीक, राम आनन्द उछाह ॥ १ ॥ अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए

सिधां वहु भेद, तेह मुनीसर वंदतां नहि तिरथे छेद ।
चक्री श्रीकुंथु नमूं संभव गणधार, अजुक अज्जा वंद-
ता हुवे जै २ कार ॥ २ ॥ सागर गुरु धर्मसेन शीस
नन्दन हळधार, बंधव केशवदत्त नाम सातमो विचार ।
कोड़ सहस वरसे करि ऊणो पलिये चौभाग, इण
अवसर सहू सिध वहु वांदू धरि राग ॥ ३ ॥ अर्जुन
चक्री सातमो ए कुंभ गणधर गाऊं, ऋषिया समणि
वंदता ए शिव सम्पत पाऊं । कोड सहस वर्ष अंतरे
ए सिधा मुनि वृन्द, सातमी नरक संभव चक्री पहुंतो
मति मन्द ॥ ४ ॥ मल्लि जिनेसर वन्दिये अभिनेय
मुनिन्द, गणनि वन्दू चरण कमल प्रणमूं सुख कन्द ।
सहस पचावन साधवी साधुं सहस चालीस, बत्तिस
सो मुनि केवली प्रणमूं निशदीस ॥ ५ ॥ मल्लि जिने-
सर पूर्वभव महिबल अनगार, तास बले तसु वन्दिये
बले मुनि बारम्बार । अचल जीव थयो पडि बुध
धरणचेन्द्र छाया, पूर्व जीवते शंख वसु रूपी कहाया
॥ ६ ॥ वे समन ते अदिन सत्तु अभिचन्द्र जित सत्तु
लहि केवल मुक्ते गया पूर्वभव मित्तु । मुनिवर नन्दन
नन्दे मित्र सुमित्र बखाणूं, बाल मित्र वले भांणमित्र
अंमरापत आणूं ॥ ७ ॥ अमरसेण महासेण आठे
नाथं कुमार, मिलि संघाते साध थया अंग छट्ठे

विचार । अन्तरो इहां वले जाणिये लाख चौपन्न वास, केवली तिहां बहु वन्दिये धरी हर्ष हुलास ॥ ८ ॥ वन्दूं जिनेसर वीसमा मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्र कुंभ पुस्फवन्ती प्रणमूं सिर नामी । सुरवर सातमे कप्प थयो मुनिवर गंगदत्तो, कित्तिय सोहम इन्द्र पणे सुर श्रीय सम्पत्तो ॥ ९ ॥ राई श्री महा पोम चक्री वांदू कर जोडी, समुद्र गुरू अपराजियो ए गाऊं मन मोड़ी । राम रिषेसर बंदिये ए नाम पौम जेह, केशव नारायण तणो ए बंधव कहूं तेह ॥ १० ॥ लहि केवल मुक्ते गया आठूं वलदेव, नवमी सुर सुख अनुभव लहसि शिव सुख हेव । मुनि सुव्रत नमी अन्तरो ए वरस लाख छै होई, केवली सीधा तेह प्रणमूं सूत्र जोई ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

॥ श्री नवकार जपो मनरंग—एहनी देशी ॥

॥ इकवीसमा श्री नेम जिन वांदू, गणधर सुभ परधानरी माई । समणी अमीला गुण गावतां, सफल हुवे निज ज्ञानरी माई ॥ १ ॥ श्री जिन सासन मुनिवर वन्दूं ॥ ए० आं० ॥ भक्ते निज शिर नामरी माई कर्म हणीनें केवल पाम्या, पहूंता शिवपुर ठामरी माई ॥ २ ॥ श्री नव निध चवदे रैण जिन त्यागी, चक्री

श्री हरिसेनरी माई ॥ ३ ॥ श्री० ॥ बरस वले इहां पंच लप अन्तर, तिहां चक्री जयरायरी माई ९ बले अनेरा मुक्ते पहूँता, ते बन्दू मन लायरी माई ॥ ४ ॥ ॥ श्री० ॥ गोतम समुद्र सागर गाऊं, गम्भीर थम्भीर उदाररी माई । अचल कंपिल अखोभ प्रसेण, दशमो विष्णु कुमाररी माई ॥ ५ ॥ श्री० ॥ पोसम प्रणमूं श्री नेमीश्वर, समण ते सहस अठार री माई । बर-दत्त आद मुनि पन्दरै से, बान्दूं केवल धाररी माई ॥ ६ ॥ श्री० ॥ अक्षोभ सागरसमुद्र वन्दूं, हेमवन्त अचंल सुचंगरी माई । धरिण पुरिण अभिचंद आठमो, भण्या इग्यारे अंगरी माई ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अन्धक-विष्णुसुत धारणी अंगज, मुनिवर एह अठार री माई । वसुदेव देवकी अंगज छऊं, आंणी सेण अनन्त-री माई ॥ ८ ॥ श्री० ॥ अजीसेण नै अणिहय रिपु, देवसेण सत्रुसेण री माई ॥ ९ ॥ श्री० ॥ सुलसा ना घरे सुर जोगे, वधो रमणी वत्तीस री माई । छंडी छठ तप चवदस पूर्वी, संयम बर सेवीस री माई ॥ १० ॥ श्री० ॥ बसुदेव देवकी अंगज आठमो, मुनिवर गज शुकमाल री माई । सहि परसो मुक्ति पहूंतो, ते वन्दूं त्रिकाल री माई ॥ ११ ॥ श्री० ॥ सारुंण दारुण कुमर अणादी, चवदै पुर्वधार री माई ।

वीस वरस संयम आराधी, कीधो कर्म संहार री माई ॥ १२ ॥ श्री० ॥ जाली मयाली नै उवियाली पुरिससेण वारीसेण री माई। बारै अंग सोलै बरसे, पाल्यो संयम तेणरी माई ॥ १३ ॥ श्री० ॥ वसुदेव धरणी अंगज आठे, रमणी तजी पचास री माई। सुमता भावे शिवपुर पहुंता, प्रणमूं तेह उलास री माई ॥ १४ ॥ श्री०॥ सुमुख दुमुख नै कुँवर ए वन्दूं, बलदेव धारणी पूत री माई। वीस बरस संयम धरी सीध्या, चवदे पूरव सूत्र री माई ॥ १५ ॥ श्री० ॥ रुक्मणी कृष्ण कहूं कुमर परजन्न, जम्बुवती सुत सम्ब री माई। परजन्न सुत अनरुध अनोपम, जास वेद रवीं अम्ब री माई ॥ १६ ॥ श्री० ॥ समुद्र विजै सिवा देवी रा नन्दन, सच नेमी दृढ नेम री माई। बारे अंग सोला वरस, रमणी पचासे तेम री माई ॥१७॥ ॥ श्री०॥ समुद्रविजै सुत मुनि रह नेमी, ए सहु राज कुमार री माई। कर्म हणीनैं मुक्ते पहुंता, ते प्रणमूं वारम्वार री माई ॥ १८ ॥ श्री० ॥ यक्षणी आद दे सिक्षणी समणी, सहस चालीस आरज्यां री माई। साधवी सीधी तीन सहस ते, वान्दूं कुमति टाल री माई ॥ १९ ॥ श्री०॥ पोमा नैं गौरी गन्धारी, लपमणा सुसमा नाम री माई। जम्बुवती सतभामा रुपमण,

हरि रमणो अभिराम री माई ॥ २० ॥ श्री० ॥ मूल-सरी मूलदत्ता वेऊं, सम्ब कुमर री नार री माई। अन्त गढ अंगे ए सहु भाखी, पामी भवनो पार री माई ॥ २१ ॥ श्री० ॥ उतराध्यैने राजमती सती, संयम सील री खांण री माई । प्रतिबोधी रहनेमी पाम्यो, सासता सुख निरवाण री माई ॥२२॥श्री०॥

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ गोतम समुद्र कुमार सागर गम्भीर—ए देशी ॥

॥ थावच्चा सुत सुख सेलग आद दे, पंथक प्रमुष मुनि पांच सौ ए । मास सलेषणां करी तप अति घणां, पुंडरीक गिर शिवपुर बरियो ए ॥ राई युधिष्ठिर भीम अति बली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए । राय श्री परिहरी सुध संयम धरी, साधुजी शिव पदवी वरा ए ॥१॥ चवदे पूर्व धरी थिवर धर्म घोष, धर्म धर्मरुची सीस गुण भरियो ए । नाग श्री ब्राह्मणी विष दियौ पापणी, तुंबां नो मास पारणो कायो ए ॥ स्वार्थ सिध अवतरी तदन नर भव करी, क्षेत्र विदेह मै शिव गयो ए । ते मुनि बन्दतां कर्म वलि नन्दतां, जन्म जीवत संफलो थयो ए ॥ २ ॥ समणी गुयालिया तिण सुष मालिया, दिखीया तास हुं गुण भणूं ए । तिमबली सुब्रता द्रोपदी संयुता, नेम सासण गुण थुणूं ए ॥

विमल जिन अनन्त अन्तरै राय महि, बलदेव पदमावती ए। तास तु अंग ए कुमर विरंग ए, तरुणी बत्तीस तरुणी पती ए॥ ३॥ तांम सिद्धत्थ गुरु पास संयम वरु, ब्रह्म लोके सुर ऊपनो ए। चवि बलदेव घरे रेवती उपद्र वर, निषढ नाम सुत संपनो ए॥ नेम पाय अनुसरी अथिर धन परिहरी, रमणी पचास तज ब्रत ग्रह्यो ए। करी बहु सम दम बरस नव संयम, पालीनै सर्वार्थसिध लह्यो ए॥ ५॥ क्षेत्र विदेह मै केवल संयम, सिद्ध होसीरे ते मुनी ए। इण परि अनिवह दोय एगतीस, सहु यती कहूं गुण थुणी ए॥ दसरह दृढरहे महाधनु तेह. सतधनु गुण मुझ मन बस्या ए। नवधनु दशधनु साहिधनु मुनि एह, भाषियो सूत्रवन्नही दशा ए॥ ५॥ पूर्व भव हर गुरु ना द्रुम सेण, ललत त्रि नाम पूरव भवे ए॥ रामबलदेव बली नवमो हलधर. ब्रह्म लोके सुर अनुभवे ए॥ चवि जिन तेरमो नाम निकसाय, थायमी सही सुरतरु समो ए। बंधव केशव एका अवतार. अमम होगी जिन बारमो ए॥ ६॥ सहस्र वले त्यागियां मात मो मासियां, बरस पचास इहां अन्तरो ए। तिहां वले चित्त मुनि सिद्ध सम्पत्त सूं, नाम लेईनें कीरत करूं ए। पूर्वभव तन्धव चक्री ब्रह्मदत्त, सातमी नरक गयो

मरी ए । इण अन्तरे वली नमूं बहु केवली, वेग शिवसुन्दरी ज्यां वरी ए ॥ ७ ॥

॥ ढाल ९ वीं ॥

॥ रामचंद्रके बाग चम्पो मोही रही री—य देशी ॥

॥ तेवीसमां जिन तारक, पुरसा दानीय पास । मुनिवर सोले सहस, गणधर आठ हुलास ॥ आर्ज दिने सुभ्र सुभ घोक, बांदूं बासठ नाम । बले ब्रह्मचारी सोमल, श्रीधर करूं प्रणाम ॥ १ ॥ वीरभद्र जस आद दे, सिद्धा सहस प्रमाण । तेह मुनिवर वन्दतां, हुवे परम कल्याण ॥ साधवी संख्या सहु अढतीस, सहस बषांणूं । पुष्पचूलआदिक सहस दो, सिद्धी ते मन आणूं ॥ २ ॥ समणी सुपासिया सीझसी, भासी धर्म चौ जांम । ए अधिकार कह्यो, श्री ठाणांग सुठांम ॥ चौदस पुर्वी वले, चौनांणी केशी कुमार । परदेशी प्रतिबोधियो, कीधो बहु उपगार ॥ ३ ॥ वरस अंढाइसो अन्तरो, सिद्धा साधु अनेक । ते सहू बंदू सुविनयसूं, आंणी चित्त विवेक ॥ मुनिवर चौदे सहस गुरु, प्रणमूं श्री महावीर । सात सौ केवली वन्दिये, गणधर एकादश वीर ॥ ४ ॥ इन्द्रभूती अग्निभूती. तीजा बान्दू वाइभुई । विगत सुधर्मा वन्दतां. मुझ मत निर्म्मल होई ॥ मंडीपुत्त

मोरीपूत, अकम्पित नित शिवदासे । अचल भ्राता मेतार्थ, प्रणमूं श्रीप्रभासे ॥ ५ ॥ वीर गए वीरजसा नृप, संजई नोजनेय । सेतन सम्ब उदायण, नरपूत संख कहेय ॥ वीर जिनेसर आठेई दीक्षा राई जांण । मुनिवर पोटिल वांधा, गोत्र तीर्थंकर ठांण ॥ ६ ॥ पालक श्रावक पुत्र ते, बान्दू समुद्रफल । पुन्य नै पापै दो खै करी, सिद्धा साधु दयाल ॥ नयरि सावत्थि दोऊं मिल्या, केसि गौतम स्वामि । शिष्यांरी शंका काढनै, पञ्च महवय लीया शिर नामि ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० वीं ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी—ए देशी ॥

॥ महाकुंड नयरी नो अधिपती, नाहण कुल नाभ चन्दो जी । वीर जिनेसर तातज गुण नीलो, ऋषभदत्त मुनिन्दो जी ॥ १ ॥ नित नित वांदू मुनिवर ए सहु० ॥ त्रिकरणे सुध त्रिकालो जी । विध स्युं देई तीन प्रदक्षिणा, करूं अंञ्जली निज भालो जी ॥ २ ॥ नि० ॥ राई उदाईसिंह दशवीर नो, निर्मल संयम धारयो जी । सेठ सुदर्शन मुनि मुक्ते गयो, सुणि महाबल अधिकारो जी ॥ ३ ॥ काल गंवेसी गंगा योगणी, पिंगल नै शिवराजो जी । काम उदाई अैवन्तो मुनि, वन्दता सीझै काजो जी ॥ ४ ॥ नि०

मकाइ मुनि किंकम वन्दिये, अर्जुन माली हुलाशो जी। काशव मघधर जाणिये, केवल रूप कैलाशो जी॥ ५ ॥ नि०॥ मुनि हरचन्द वारं तिये वलि, सुदरशन पूरण महो जी। साध समण भद्र समता आदरैं, सुपइठ समय मन्दो जी ॥ ६ ॥ नि० ॥ मेह मुनीश्वर अैवन्तो मुनि, राय ऋषि अलक्षो जी। श्री जिन सीस ए सहु मुक्ते गया, सेवै सुर नर सको जी ॥ ७ ॥ नि० ॥ सहस छतीसे समणी चन्दणा, आद दे चवदे से सिद्धी जी। देवानन्दा जननी वीरणी, केवल ज्ञान समिन्दो जी॥ ८ ॥ नि०॥ नित २ बन्दूं समणी ए सहु० ॥ समणी जैवन्ती पढम सिझातरी, सिद्धी केवल पामी जी। नन्दा नन्दवती नंदोतरा, वले नन्दसेणिया नामो जी ॥ ९ ॥ नि० ॥ मरुत स मरुता महा मरुता नमुं, मरुदेवा वले जाणो जी। भद्रा सुभद्रा सुजया जिन तणी, पाली निर्मल आंणो जी ॥ १० ॥ नि० ॥ समणा समणी भुइदीना नमुं, राणी श्रेणक रायो जी । मास संलेषण तेरै सिद्ध थई, प्रणम्यां पातिक जायोजी ॥ ११ ॥ नि० ॥ कोली सुकाली महाकाली नमुं, कन्या सुकन्या तेमो जी। महाकन्या वीरकन्या साहुणी, रामकन्या सुध नेमो जी ॥ १२ ॥ नि० ॥ प्रियसेण कन्या महासेण

कन्यका, अै दश श्रेणिक नारो जी। निज २ नन्दन काल सुणे करी, लीधी संयम भारो जी ॥ १३ ॥ ॥ नि० ॥ अै दश समणी ते परेणावली आद दे दश प्रकारो जी। लहि केवल ए सहु मुक्ते गइ, ते वन्दूं बहुवारो जी ॥ १४ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ११ वीं ॥

॥ सुखकारण भविया समरो नित नवकार—ए देशी ॥

॥ श्री धर्म घोष मुनीस्वर, महिबल गुरु सुत धार। जिन पूछ्यो रोहे लोकालोक विचार ॥ वेसाली सावए, पिंगल नाम निहन्त। परवायक पूछ्या, खन्धक समय पहन्त ॥२॥ कालो पुत्र मेहल, आनन्द ऋष यो ज्ञान। वले कासव चौथो, थिवरां पास सन्तान ॥ ३ ॥ मुनि तीस कुरुदत्त, वले नियंतो पूत। धन नारद पुत्र मुनि, सो महती संयुत्त ॥ ४ ॥ सुणिक्षत्र सर्वण भुई, क्षिपर कह्यो आनन्द। जिन ओसो ल्यायो, धन २ सिहीं मुनिन्द ॥ ५॥ वले पूछ्या जिनने, लेस्यादिक बहु भेद। गुण गाऊं महामुनि, माकंडी पुत्र उमेंद ॥ ६ ॥ हिव श्रेणिक सुत कहूं, जाली कुमर मयाली। उवयाली पुरुसेण, वारिसेण आपदा टाली ॥ ७ ॥ देहदन्त नै लटदन्त, धारणी नन्दन होय। वेहल नै वेयास, चेलन अंगज दोय

॥ ८ ॥ इक नन्दा नन्दन, मुनिवर अभय महन्त । देहसेण नै महासेण, लठदन्त नै गूढदन्त ॥ ९ ॥ सुध्रदन्त कुमर हल्ल, द्रुम नै द्रुमसेण ॥ गाऊं महा द्रुमसेण, सींह नै सींहसेण ॥ १० ॥ मुनिवर महासेण पुन्यसेण परधान । ए धारणी अंगज, तेजै तरुण समान ॥ ११ ॥ नृप श्रेणिक नन्दन, एह दस तेरै कुमार । आठ २ रमणि तजी, अणुतर सुर अवतार ॥ १२ ॥ तिण अवसर नयरी, काकन्दी अभिराम । तिण पुर देसे भद्रा, सारथवाही नाम ॥ १३ ॥ तसु नन्दन धन्नो, सुन्दर रूप निधान । तिन परणी तरुणी, बत्तीस रम्भ समान ॥ १४ ॥ जिन वैण सुणीनै लीधो संयम जाग । मुनि तरुण पणे मैं, छंडया रमणी भोग ॥ १५ ॥ नित छठ तप पारुणो, आंबल उंझत भात । जस समण वणी मृग, काई न बंछे तिलमात ॥ १६ ॥ अति दुकर तपस्या, आराधी नव मास । एक मास संथारे, सर्वार्थसिद्ध वास ॥ १७ ॥ काकन्दी सुनि खन्त, राजगृही ईसरीदास । पैलक ए वेऊं, एंकन नगर हुलास ॥ १८ ॥ रामपुत्र नै चन्द्रमा, साकेतपुर वर ठाम । पुटीमां पेढालै, पुत्र वाणिया ग्राम ॥ १९ ॥ हथनापुर पोटिल, सहु ए धंना समान । तरुणी तप जननी, संयम वरसी मान.

॥ २० ॥ हिव बहल कुमर कहूं, राजगृही आवास। सर्वार्थसिद्ध पहुंतो, धर संयम छम्मास ॥ २१ ॥ इक भव शिवगामी, ए श्री जिनवर सीस । सहू नवमे अंगे, भाष्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हिव पौम महा-पौम, भद्र सुभद्र बखान । पौमभद्र नै पौमसेन, पौम गुप्त मन आण ॥ २३ ॥ नलिणी गुल्म आनन्द, नन्दन एह मुनि जाण । कालादिक ना सुत, कप्प बडंसिया ठांण ॥ २४ ॥ मुनि उदग पुछ्या, गोतम नै पच्चषाण । चौ जाम थंकी कीयो, पञ्च तणो परिमाण ॥ २५ ॥ जिन २ मत मंडी, छंडी कुमत अनेक। ते आद्र कुमर मुनि, धन २ बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गर्व भाली बोध्यों, संजय नृप अनगार । मुनि क्षत्री भाष्या, वहुविध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महि मण्डल विचरे, विगत मोह अनाथ । गुण गावंता अहनिश, संपजे शिवपुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणिक नन्दन, मुनिवर मेघ सुजान। तज आठ अन्तेउर, ऊपनो विजय विमान ॥ २९ ॥ अपमाणी रैणा, आदरयो संयम जेह। जिन पालक मुनिवर, सोहम सुर थयो तेह ॥ ३० ॥ हरी चोर चिलायती, सुसमां तात से धन्नो। आराधी संयम, सोहम सुर ऊपन्नो ॥ ३१ ॥ श्री वीर जिनेसर, सासन मुनिवर

नामं। निज भक्ते गाऊं, तेह तणा गुण ग्राम ॥ ३२ ॥

॥ ढाल १२ वीं ॥

॥ त्रिशालिया पिङ्गल—ए देशी ॥

॥ धर्मघोष गुर सीस दत्त, मासनै पारणै तेह सुपत्त, प्रतिलाभ्यो सुभ चित्त। सुमुख थयो भव बिये सुबाहू, सूर थयो संयम गृही साह, गुण तसु गाऊं नित्त ॥ १ ॥ श्री जुगबाहु जिनवर आवे, बिजै-कुमरं प्रतिलाभ्यो भावे, बीजे भव भद्रनन्द। भोग तजी थयो साधु मुनिन्दं, करी सलेखणा लह्यो सुख बृन्द, गुण तसु गातां आनन्द ॥ २ ॥ ऋषभदत्त पहिले भव सन्त, तिण प्रति लाभ्यो मुनि पुष्पदन्त, तिहांथी थयो सु जात। तृंण सम जाणी सहू रिद्ध बात, आदरी आठे प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥ ३ ॥ पूर्व भव नृपति धनपाल, श्रिसमण भद्र नै दान रसाल, देई शिवा शिव थाय। संयम लेई ते मुनिराय. लहि केवल नै शिवपुर जाय. ते बन्दू मन लाय ॥ ४ ॥ पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म्म मुनि नै देई दान, बीजे भव जिनदास। संवरं पाली जे थया सिद्ध, केवल दरशन ज्ञान समिद्ध, बान्दू तेह उल्लास ॥ ५ ॥ मित्राई पूर्वभव जांण. संभूत बिजे नै दोनुं वंखांण, कुमंर ते धनपत होई। वीर समीपे संयम,

लीधो, ततक्षिण कर्म हणी नै सीधो, दिन प्रति बन्दू सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नागदत्त धनेसर, प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, माहिबल नाम कुमार । संयम लेई कारज सारचा, भव सायर थी चेतन तारचा, ते बन्दूं बहुबार ॥ ७ ॥ गृहपति हूंतो धर्म्मघोष, तिण प्रतिलाम्यो अति संतोष, नाम मुनि धम्मसींह । बीजे भव थयो भद्र नन्दी, मुक्ति गयो भव बन्धन छन्दी, ते वंदूं मुनि इह ॥ ८ ॥ पूर्वभव जितशत्रु नरेसर, प्रतिलाभ्यो धर्मब्रत सुलेसर, महिचन्द नाम कुमार । तिण छंडी बहु राई कुमार, पांच से अपछर नैं उणिहार, बन्दूं केवल धार ॥ ९ ॥ विमल वाहन नामे राजान, धर्मरुची नै देई दान, वरदत्त हुवो भव बीजै । संयम लेई सुर श्री पामी, कप्प अंतर जे शिवपुर गामी, कित्ती तेहनी कीजै ॥ १० ॥ पूर्वभव देई दान उदार, बीजे भव थया राय कुमार, त्यां तजी पांच सै नार । सहु थया वीर जिनेसर सीस, सुख विपाके एह मुनीस, पञ्च महाब्रत धारी ॥ ११ ॥ नामे मातङ्ग नै सोमल गाऊं, रामगुत्ती सुदर्शन ध्याऊं, नमूं जमाली भोगाली । किंकम पेलक कालीये तीजो, अन्तगढ अङ्ग वाहिण वीजो, छांणा अंग संभाली ॥ १२ ॥ पूर्वभव महा सोम ते वीजै, तेतली पुत्र मुनि

प्रणमीजै, महापौम पुंडरीक तात । वले वंदूं जितसत्रु सुबुद्धी, कर्मङ्कणी तिण करी विशुद्धी, ते वन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजैघोष बांदूं, बल श्री नाम मृगापुत्र वांदूं । कमलावती इक्षुकार, पुत्र पुरोहित वले तसु नार नाम जसा सम्बेगें सारी, बन्दत्म तिण जयकारी ॥ १४ ॥

॥ ढाल १३ वीं ॥

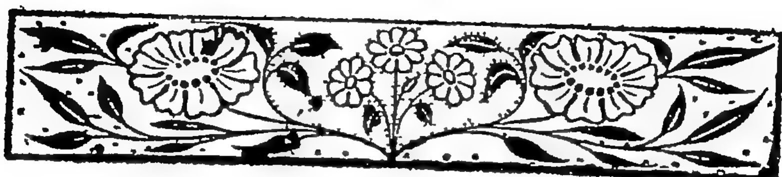
॥ चतुर विचारिये रे—ए देशी ॥

॥ मुनिदास नै धन्नो वले बखाणिये रे सुणि खत्त किंत्तियं संयुत्त । संठांण सालभद्र आनन्द तेतली रे, दशार्ण भद्र अैवन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण गाईये रे० गावंता परमानन्द । शिव सुख साधने करी अउ निश संपजै रे, भाजे भव २ दन्द ॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अंगनी एही ज वीजी वाचना रे, अै दश मुनि वर नाम । नन्दी सूत्र में साध सुभद्द पणे कह्या रे, नन्दी सेण अभिराम ॥ ३ ॥ मु० ॥ विषम नन्दी फल अधिकार धन्नो मुनि रे, धन्नो देव दिन तात । सुव्रता समणी गुरणी सिष्यणी पोटला रे, पुंडरीक कुंडरीक नो भ्रात ॥ ४ ॥ मु० ॥ गुरणी सुभद्रा केरी समणी सुव्रता पूर्णभद्र सुचंग । मानभद्र नै दत्तशिव बल मुनि रे, अंणाढी पुप्फिया उपंग ॥ ५ ॥ मु० ॥ धन ते कपिल

जती अति निर्मल मति रे, तिण तज्या लोभ सन्ताप। इन्द्र परीक्षा अवसर उपसम आदरी रे, नमो नमावे आप॥ ६ ॥ मु० ॥ सुर वर सेवत श्री हरकेशी बल मुनि रे, सम्वर धार सुलेस। सकन प्रेड़ी प्रति संजम आदरचो रे, दशार्ण भद्र नरेश ॥ ७ ॥ मु० ॥ मुनि करकंडु राजा देश कलिंगणो रे, दुमुही पञ्च भूपाल। बले विदेही नृपति नमी नामे व्रती रे, निरधाई गंधार रसाल ॥ ८ ॥ मु० ॥ श्वेतविजै नै महिबल ए सहु राजवी रे, व्रत लेई थया अणगार। काम कषाय निवारी शीतल आतमा रे, थिवर ते कह्या गणधार ॥ ९ ॥ मु० ॥ हिवे श्री वीर जिनेश्वर सीस सुहम गणि रे, तास परम्पर एह। जम्बु प्रभव वलि सय्यं-भव जाणिये रे, मनग पीया मुनि तेह ॥१०॥ मु० ॥ श्री जसोभद्र ने मुनि सम्भूतविजै वलि रे, भद्रबाहु थूलभद्र। एम अनेरा जिनवर आण माही हुवा रे, ते मुनि गाऊं समुद्र ॥ ११ ॥ मु० ॥ काल अनन्ते मुनिवर जो मुक्ते गया रे, संप्रति विचरे तेह। नाण दर्शन नै चरण करण धुर धुरारे, श्री देव वन्दे तेह ॥१२॥ मु० ॥ कलश ॥ इम चौविश जिनवर, प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा। संसार तारक, केवली वलि समण समणी संयुवा ॥ संवेग श्रुत घर साध

सुखकर, आगम बचने जे सुण्या । ज्ञानचन्द गुरु सुपसाये, श्री देवचन्दे संथुण्या ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री बड़ी साधु बन्दना सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ शीलरी नवबाड़ ॥



॥ दोहा ॥



नेमीसर चरण नमूं, प्रणमूं उठ परभात । बावीसमां जिन जगत गुरु, ब्रह्मचारज विख्यात ॥ १ ॥ सुन्दर अपछर सारखी रति सम राजकुमार । भर योवन में जुगतसुं, छोड़ी राजुल नार ॥ २ ॥ ब्रह्मचर्य जिण पालियो, धरतां दुद्धर जेह । तेह तणा गुण बरणवुं, पामें भव जल छेह ॥ ३ ॥ कोड़ केवली गुण करे, रसना सहस बणाय । तोई ब्रह्मचर्य में गुणं घणा, ते पूरा करचा न जाय ॥ ४ ॥ गलित पलित काया थई,

तोई न पूगी आस। तरुण पणे जे व्रत धरे, हूं बलिहारी तास ॥ ५ ॥ जीब विमासी जोय तूं, विषमें राचे गिमार। थोड़ा सुखने कारणे, मती जमारो हार ॥ ६ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, लीधो नर भव सार। शील पल्यो नबबाड़ स्यूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥ शील माहि गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय। थोडासा परगट करूं, ते सुणज्यो चित लाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ मत करो काया माया कारमी जी—ए देशी ॥

॥ शील सुर तरुवर सेविये, ते वरतां में गिरवो छे एह रे। शील सूं शिव सुख पामिये, त्यां सुखांरो कदे न आवे छेह रे ॥ १ ॥ शी० ॥ शील मोटो सब व्रत में, भाष्यो छे श्री भगवन्त रे। ज्यां समकित सहित तिण पालियो, त्यां कीधो संसार नो अन्त रे ॥२॥ शी० ॥ जिन शासन वन अति भली, ते नन्दन वन अनुसार रे। जिनवर पालक तेहना, करुणा रस भंडार रे ॥ ३ ॥ शी० ॥ व्रक्ष तिण वन मे शील रोपियो, तिनरे मुल दृढ समकित जाण रे। सास्वा छे महावरतां तणो, प्रति सास्वा अनुवरत वखाण रे ॥४॥ शी० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, त्यांरा

गुण रूप पत्र अनेक रे । मधुकर मर्म शुभ बन्धनो, परिमल गुणां विसेष रे ॥ ५ ॥ शी० ॥ उत्तम सुर सुख रूप फूलरो, शिव सुख ते फल जांण रे । तिण शील वृक्ष ने जतन करो, ज्यूं वेगो पांमो निरबांण रे ॥६॥ शी० ॥ संसार शील थकी ऊधरे, जे पाले नव कोटी अभंग रे । स्वयम्भू रमण जितली तिरयो, शेष रहो नदी गंग रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ उत्तराधेन रे सोल मे, वंभ-समाइया ठांण रे । कीधो तिण वृक्ष ने राखवा, नव बाड दशमो कोट जाण रे ॥८॥ शी० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिवै कहुं छूं जुई २, शील तणी नवबाड़ । दशमो कोट तो चिहुं दिशा, माहि ब्रह्मचर्य विस्तार ॥ १ ॥ खेत गांव ने गौरवे, न रहे न कीधां बाड़ । रहसी तो खेत इण विधे दोलो कीधां बाड़ ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी विचरे जठै, ठांम २ छै नार । तिण कारण इण शीलरी, वीर कही नव बाड़ ॥ ३ ॥ बाड़ न लोपे तेहनी, रहै बरत अणभंग । वयरागी बिरकत थया दिन २ चढते रंग ॥ ४ ॥ पहली बाड़ मे इम कह्यो नारि रहे तिहां रात । तिन ठांमे रहणो नहीं, रह्यां बरत तणीं हुवै घात ॥ ५ ॥ अथवा नारी एकली,

भलो न संगत तास । धरम कथा कहणी नही, वैसी तिणरें पास ।। ६ ।। तिण थी अवगुण ऊपजे, संका पामे लोक । आवे झूठी आल सिर, वले होवे वरतनो फोक ।। ७ ।। तिणसुं ब्रह्मचारी भणी, रेहण छै एकन्त । हिवे कुण जायगां वरजियां, ते सुणज्यो मतवन्त ।। ८ ।।

।। ढाल २ जी ।।

।। नणदल हे नणदल चुड़ले हे जोवन झिल रह्यो—ए देशी ।।

।। भाव धरि नित पालिये, गिरवो छै ब्रह्मचर्य सार हो ।। ब्रह्मचारी० ।। तिण सुं शिव सुख पांमिये, तूं वाड़ म खंड लिगार हो ।। १ ।। ब्र० ।। या पहला वाड़ ब्रह्मचर्य नी ।। ए आं० ।। जो मञ्जारी संगत रमे, कूंकड मुस मोर ह्रो ।। ब्र० ।। कुशल किहां थी तेहनी, मारे कंठ मरोड हो ।। २ ।। ब्र ।। स्त्री पशनी पोसग तिहां वसे, ज्यां नही रहेवो वास हो ।। ब्र० ।। तेहनी संगति निवारिये, व्रतरो करे विनास हो ।। ३ ।। ब्र० पै० ।। हाथ पाव छेदन किया, कान नाक छेद्यो छै तास हो ।। ब्र० ।। तो पिण सो वरसांरी डोकरी, तोही रहैवो नहीं तिंण पास हो ।। ४ ।। ब्र० पै० ।। सझ सिणगार देवंगना. आये चलावण तास हो ।। ब्र० ।। तिण आगे

तो चलियो नही, तोही रहवो एकन्त वास हो ॥ ५ ॥ व्र० पै०॥ स्त्री हुवे तेहमां वासें रहे, कद्दे चल जावे प्रणाम हो ॥ व्र० ॥ जब दृढ रहणो दोहिलो, भ्रष्ट हुवे तिण ठांम हो ॥ ६ ॥ व्र० पै० ॥ सिंह गुफा बसियो जती, रह्यो बेस्या बिंच साल हो ॥ व्र०॥ तो तुरत पड्यो वस तेहने, गयो देश नेपाल हो ॥ ७ ॥ व्र० पै० ॥ कुल वालवो साध थो, तिण भांग्यो वरत रसाल हो ॥ व्र० ॥ कोनक री वेस्या बस पड्यो, रुलसी अनन्तो काल हो ॥ ८ ॥ व्र० पै० ॥ मूंस मंञ्जारी मेल होय, तो घात पामे ततकाल हो ॥ व्र०॥ नारी हुवे तिहां ब्रह्मचारी रहे, तो भांगे शील रसाल हो ॥ ९ ॥ व्र० पै० ॥ बाड़ सहित शील पालियो, पूरे मनरो खन्त हो ॥ व्र० ॥ या शिक्षा दीधी छै तो भणी, तूं रहिज्यो जायगा एकन्त हो ॥ १० ॥ ॥ व्र० पै०॥

॥ दोहा ॥

कथा न कहणी नार नी, ते जिन कही दूजी वाड़ ।
नारी कथा कहे तेहसूं, बरत रो हुवे बिगाड़ ॥ १ ॥
जे झिल रह्या ब्रह्म वरत में, तिणरै विषै नही मन मांहि ।
तें ब्रह्मचारी ने नारी कथा, करवो शोभे नाहि ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे, मिरचा केरे अङ्ग—ए देशी ॥

॥ जान रूप कुल देशनी रे, नारी कथा कहे जेह । वार वार कहे नारणी रे, तो किम रहे व्रतसुं नेह रे ॥ भवियण० ॥ नारी कथा निवार ॥ १ ॥ ए आ० ॥ चन्द्रमुखी मृग लोचनी रे, बेणी जांणै भुजंग । दीप शिखा जाणै नासिका रे, होय परवाली रंग रे ॥ २ ॥ भ० ना० ॥ वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पांवरा करे बखाण । हंसागति कटि सिंहणी रे, नाभि ते कमल समान रे ॥ ३ ॥ भ० ना० ॥ कुक्ष छे जेहनी अति भली रे, वले अंग उपंग अनेक । त्यांने वारु न सरावणी रे, आणी मनमें विवेक रे, ॥ ४ ॥ भ० ना० ॥ कथा तेह कहतां थकां रे, दोष नही छै लिगार । विन कारण कहवी नही रे, नारी रूप सिणगार रे ॥ ५ ॥ भ० ना० ॥ नारी रूप सरावता रे, वधे विषय विकार । परिणाम चल विचले हुवे रे, वरत रो हुवे विगाड़ रे ॥ ६ ॥ भ० ना० ॥ मल्ली कुमरी नो रूप सांभलीरे, छऊं राजा रा चलिया प्रणाम । त्यां सगाई करवा दूत मोकल्या रे, विगड्यो माहो माहि सान रे ॥ ७ भ० ना० ॥ मृगवती रो रूप सांभली रे, चंड प्रद्योत राजान । कोसंवी नगरी

घेरो दीयो रे, कीधो मिनखांरो घम साण रे ॥ ८ ॥ भ० ना० ॥ तिणरे हाथ न आवी मृगावती रे, हुवो योंही खराब । फिट २ हुवो घणो लोकमे रे, घणी पड़ाई आब रे ॥ ९ ॥ भ० ना० ॥ पदमोत्तर नारद कने रे, द्रोपदी रा रूपरी सुणी बात । देव मंगाइ तिण द्रोपदी रे, सो इज्जत पड़ाई साख्यात रे ॥ १० ॥ भ० ना० ॥ नारी कथां सुण बिगड्यां घणा रे, तिणरो कहनां नावे पार । बले भ्रष्ट हुवा बरत भांगने रे, ते गया जमारो हार रे ॥ ११ ॥ भ० ना० ॥ नीम्बू फलनीं बारता सुण्या रे, मुख पाणि मेल्हैछे ताय। ज्यूं नारी कथा सुणियां थका रे, प्रणाम थोड़ा में चल जाय रे ॥ १२ ॥ भ० ना० ॥ सङ्का कंखा वित कंछां मन ऊपजे रे, शील बरत पालूं के नाहीं। तिणसुं नारी कथा कहणी नहीं रे दूजी बाड़रे माहि रे ॥ १३ ॥ भ० ना० ॥ बार २ असत्री तणी रे, कथा न कहणी ताम। दूजी बाड़ सुध पालसी रे, ते पामसी अविचल ठांम रे ॥ १४ ॥ भ० ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तीजी बाड़ मे इम कह्यो, ब्रह्मचारी नारी सहित। एकण सिज्या नही बैसणी, या जिन मारग रीं रीत ॥१॥ अगन कुंड पासे रहे, तो पिघलै घृतनो

कुम्भ । ज्यूं नारी संगत पुरुष नो, रहे किसी पर बम्भ ॥ २ ॥ ब्रह्मचारी जोगी जती, मत कर नारी परसङ्ग । एकण सिज्या बैसता, होवे वरतनो भंग ॥ ३ ॥ पावक गाले लोह ने, जो रहे पावक संग । ज्यूं एकण सिज्या बैसतां, ले रहे वरत सूं रंग ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ अभिया राणी कहे धायणो—ए देशी ॥

॥ तीजी बाड़ हिवे चित्त विचारो, नारी सहित एकाशन निवारो हो लाल । एकाशन बैठां काम दीपे छे, ब्रह्मचारी ने आछो नही छै हो लाल ॥१॥ ती० ॥ एकण आशन बैठा आसंगो थावे, आसंगो काया फरसावे हो लाल । काया फरसायां विषे रस जागे, इम करतां जावक व्रत भागे हो लाल ॥ २ ॥ ती० ॥ पाट वाजोटादिक सज्या संथारो. एवा आसण अनेक विचारो हो लाल । नारी संघाते बैसो मत कोई, जिनवर वचन सांहमो जोई हो लाल ॥ ३ ॥ ती० ॥ स्त्री सहित वैहसे एकासन, तो लोक पडे छे विमास हो लाल । अछतो हो आल देकर फितूर, वली बोले अनेक विधि कूड़ हो लाल ॥ ४ ॥ ती० ॥ तिण ठामे वैहठी हुवे नारी. तिण ठामे न वैसे ब्रह्मचारी हो लाल । जो वेहसे तो मोहुरत टाली, वेद सभावे ममाली हो लाल ॥ ५ ॥

ती०॥ नारी वेद रा पुदगल तिणथी, नारी विकार वेदे जिण थी हो लाल। इमहीज नारी नै पुरुष जाणो, माहो माहि वेद विकार पिछाणो हो लाल ॥६॥ती०॥ नारी फरस वेध्या हुवे भोगरो रागी, जब जोवै वरत सुं भागी हो लाल। इण कारन एकासन बैसणो नहीं, नारी फरस सुं डरणो मन मांहि हो लाल ॥ ७ ॥ ती० ॥ श्री राणी सम्भूत बांद्या मन सग्गो, कर पद सुं मुनि तन लागी हो लाल, तिण चारित्र खोय नीयाणो कीधो, दुरगति नो पन्थ लीधो हो लाल ॥८॥ ती० ॥ देव थई नै चक्रवर्त्त हुवो, भोग माहि गिरधी थके मुवो हो लाल। सातमी नरक माहै जाय पड़ियो पाप सुं पूरण भरियो हो लाल ॥ ९ ॥ ती० ॥ नारी फरस वेध्यां सूं औगण अनेक, तिणसुं आसन न वैहसणो एक हो लाल। संका कुंखां वितकंछा उपजे मन माहि, शील बरत पाळ के नाहि हो लाल ॥ १० ॥ ती० ॥ इय बाड़ लोपी तिण बरत बिभोयो, तिण दीयो ब्रह्म बरत खोयी हो लाल। ते नरक निगोदमें जाय पडिया, संसार में रंड़बड़िया हो लाल ॥ ११ ॥ ती० ॥ काचर कोहलो फाड़ी कर काटो तिणसुं बाक तुट हुवे खाटो हो लाल। तिण कारण एकासन बैठां ताम, ब्रह्मचारी रो चले परणाम हो

लाल ॥ १२ ॥ ती० ॥ मां बहन बेटो इम जाणो एकासन मती बेसाणो हो लाल । एकासन बैठतां भांगा अनन्त, इम भाष्यो श्री भगवन्त हो लाल ॥ १३ ॥ ती० ॥ इम जाणी ब्रह्म मति लोपो, ब्रह्मचर्य थिर कर रोपो हो लाल । ज्युं शिव रमणी वेगा वरसी, आवा गमण नही करस्यो हो लाल ॥ १४ ॥ ॥ ती० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारी रूप नही निरखणो, या जिन कह्यो चौथी बाड । सूधै मन जो पालसो, त्यां सफल कीयो अवतार ॥ १ ॥ चित्र लिखित जे पूतली, ते पिण जोयवा नाहि । केवली ज्ञानी इम कह्यो, दशमी कालक माहि ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ५ वीं ॥

॥ नारी संगत नही कीजिये—ए देशी ॥

॥ मनोहर इन्द्री नारणी रे, तिण वीठां हो वधै विकार । मृग जाल ज्युं नर भणी रे, पासै रच्यो संसार ॥ १ ॥ सुगुण नर नारी रूप नही जोय० ॥ नारी रूप दीवलो रे, भोगी पुरुष पतंग । हुवे सुखने कारणे रे, दाझै कोमल अंग ॥ २ ॥ सु० ना० ॥ कामण गारी कामणी रे, तिणे वसि कीयो सर्व संसार । आंख्यां

अणी केईक रह्यो रे, सुर नर गया सब हार ॥ ३ ॥ सु० ना० ॥ रूपे रम्भा सारखी रे, वले मीठा बोली हुवे नार। ते निजर भरी निरखियां रे, ब्रह्मचारी रो हुवे बिगाड़ ॥ ४ ॥ सु० ना० ॥ रूपने रूड़ी देखने रे, माहै पड़े काम अन्ध। सुख माणे पिण जाणे नही रे, ते पांड़े दुरगंत नो बन्ध ॥५॥ सु० ना० ॥ रूपमें घणी रलियामणी रे; अपछर ने उणिहार। ते देखी रीझो किस्यूं रे, आमले पुत्र नो भण्डार ॥ ६ ॥ सु० ना० ॥ असुच अपवित्र नो कोथलो रे, बले कले काजल रो ठाम। वारे सुरत बहैं सदा रे, चरम दीवड़ी नाम ॥ ७ ॥ सु० ॥ ना० ॥ देही उदारिक कारमो रे, क्षिण मांहि भंगुर थाय। सप्त धातरो कोथलो रे, जतन करन्ता जाय ॥ ८ ॥ सु० ना० ॥ नारी वेद नरपति थयो रे, बले चक्षु कुशीलियो थाय। बाड़ भांग लांखा भवां रे, रुलियो रूपी राय ॥ ९ ॥ ॥ सु० ना०॥ सेठ वर जांम दीयो रे, नाम इला पुत्र जाण। नटवी देखी मोहियो रे, बसियो नटवारे घरे आण ॥ १० ॥ सु० ना० ॥ बांस ऊपर चढ्यो खेलवा रे, मन माहि हरष न मात। यो बांछै धन राय नो रे; राय बांछे इणरी घात ॥ ११ ॥ सु० ना० ॥ मनरथ बन्धव मारियो रे, मैनरेहारी देखी रूप।

मरण पाम्यो तिण जोगस्यूं रे, जाय पड्यो अन्धकूप ॥१२॥ सु० ना० ॥ अरणक संयम आदर्यो रे, तिण दीधी संसार ने पूठ । ते नारी रूपे मोहियो रे, नारी लीधो तिणै लूट ॥ १३ ॥ सु० ना० ॥ एक क्षत्री आन ले जावतो रे, तिणने मारग मे मिलियो चोर । क्षत्री बांण वाह्या घणा रे, चोर फरसी सुं नाख्या तोड़ ॥ १५ ॥ सु० ना० ॥ एक बांण बाकी रह्यो रे, जब स्त्री दियो निज रूप दिखाय । रूप देखि चोर मोहियो रे, क्षत्री बांण सुं दियो तिणने ठाय ॥१६॥ सु०ना०॥ चोर पड्यो देखने रे, क्षत्री करवा लागो मान । चोर कहै गमैं किसुं रे, ह्मारे नारी नैणारा लागा बांण ॥ १७ ॥ सु० ना० ॥ इत्यादिक बहु मानवी रे, ते कहतां न आवे पार । जे नारी रूपे मोहिया रे, ते गया जमवरो हार ॥ १८ ॥ सु० ना० ॥ नारी रूप काने सुण्या रे, भ्रष्ट हुवा छै अनेक । ते दीठां गुण हुवे किसूं रे, थे समझो नर आण विवेक ॥ १९ ॥ सु० ना० ॥ काची कारी णांखनी रे सूरज सांहमो जोयां अन्ध होय । ज्यूं रूप नारी निरखतां रे, रख्या ब्रह्म-व्रत देवो खोय ॥ २० ॥ सु० ना० ॥ ब्रह्मचारी निरखो मती रे, नारी रुप सिणगार । या शिक्षा दीधी छै तो भणी रे, नहि चूकेला चौथी वाड ॥ २१ ॥ सु० ना०

॥ दोहा ॥

॥ भीतर परघट टाटी आंतरे, तिहां रहता हुवे नर नार। तिहां ब्रह्मचारी ने रहवो नही, ए जिन कहि पांचमो बाड़ ॥ १ ॥ संजोगी पासे रहैं, ब्रह्मचारी दिन रातं । ते तणां सबद सांभल्या, हुवे बरतनी घात ॥ २ ॥ जेह रमे उरखल करी, सबद पडे आय कान । जब चल जाय ब्रह्म बरत थी, लगे विषै सूं ध्यान ॥ ३ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

॥ आनन्द समकित उचरै रे लाल—ए देशी ॥

॥ बाड़ सुणो हिवे पांचमी रे लाल। शील तणां रुख थाभ ब्रह्मचारी रे ॥ ज्यूं बरत कुशले रहे सही रे लाल, वले नावे आछतो आल ॥ १ ॥ब्र०वा०॥ भींत परे जे टाटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरुष रहता हुवे रात ॥ ब्र० ॥ तिहां कुण २ दोष ऊपजे रे लाल, ते सांभलज्यो विख्यात ॥ ब्र० वां० ॥ केल करे निज कन्तसुं रे लाल, बोलती जगावे छे काम ॥ ब्र० ॥ विक्रन्द सबद करे तिहां रें लाल ॥ रोदन सबद करे तिण ठांम ॥ ३ ॥ ब्र० वा० ॥ कोयल ज्युं बोले कन्तसुं रे लाल, गावै मधुरी स्वाद ॥ ब्र० ॥ काम बसे हड़ २ हसें रे लाल, बोलती करे उदमाद ॥ ४ ॥ ब्र० वा०॥

खिण क्रन्द सबद करे तिहां रे लाल, वले पति सबद होवे तांम ॥ ब्र० ॥ तिहां रहेतो एवा सबद सुण्या रे लाल, चल जावे तुरत परिमाण ॥५॥ ब्र० ॥ वा० ॥ गाज तणो सबद सांभल्या रे लाल, रीस पामे पपिया नै मोर ॥ ब्र० ॥ ज्यों भोग समेरां सबद सांभल्यां रे लाल, लागे ब्रत तने खोड़ ॥ ६॥ ब्र० वा० ॥ इम सांभल नै रहवो नही रे लाल सबद पडे तिहां कान ॥ ब्र० ॥ तिहां बार २ रहवो नही रे लाल, ते कह्यो जिनराज ॥ ७ ॥ ब्र० वा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ छठी वाडमे इम कह्यो, चञ्चल मन मति डिगाय। खाधो पीधो विलसियो, ते मति याद आनाय ॥ १ ॥ मनगमता भोग भोगव्या, ते याद कियां गुण नाहि। वाड़ भांगां ब्रत खै हुवे, वलें अजस हुवे लोकां माहि ॥ २ ॥

॥ ढाल ७ वीं ॥

॥ जीव मोह अनुकम्पा न आणे रे—ए देशी ॥

॥ हाव भाव सबद नारी तणा, सुणिया वधे विषय विकार रे। एहवा सबद आगे सुणिया हुवे त्यांनें याद न करणा लिगार रे ॥ छठी वाड़ हिवे सुणो, ब्रिरमचरज नी ॥ १ ॥ बरण गोरादक शरीर

ना, रूप शोभायमान रे । अनन्तरे एहवी स्त्रीसु भोग भोगव्या, ते चितारे नही ब्रह्मव्रत्त रे ॥ २ ॥ छ० ॥ गन्ध चोवादिक नै चन्दना, रस महुरादिक अनेक रे । ते स्त्री संगघाते भोगव्या, ते पिण याद न करणा एक रे ॥ ३ ॥ छ० ॥ हाथ पांव सुखमाल नारी तणा, सुखमाल शरीर सुखदाय रे । एहवी नारी संघात केली करी, ते चितारें नही मन माहि रे ॥ ४ ॥ छ० ॥ सबद रूप गन्ध रस फरस, पांच प्रकार ना काम भोग रे । ते पिण स्त्री संघात भोगव्या, त्यांने याद न करणा जोग रे ॥ ५ ॥ छ० ॥ रम्या सार पासा सुगटादिक, जुवटादिक रामत अनेक रे । ते पिण स्त्री संघाते रामत करी, त्यांने याद न करणी एक रे ॥ ६ ॥ छ० ॥ सबद सुण्यां भांगे बाड पञ्चमी, रूपसुं चौथी बाड़ रे । एक २ सिज्या बैठां तीसरी, स्त्री कथा सुं दूजी बाड़ रे ॥ ७ ॥ छ० ॥ एक याद करे यां माहिलो, तिण सु भागे छठी बाड रे । ते सगली याद कीयां थकां, ब्रह्मब्रत नो हुवे बिगाड़ रे ॥ ८ ॥ छ० ॥ मन गमता भोग भोगव्या, देखे सुरत संभाल रे । तिण बाड़ सहित ब्रत खण्डियो, पाणी किम रहे फूटां पाल रे ॥ ९ ॥ छ० ॥ पुरवला काम भोग चितारं ने, राणी देवी सुं कीधी प्रीत रे । जब

जिनऋष ने जक्ष नाखियो, राणी देवी मारयो विप-रीत रे ॥ १० ॥ छ० ॥ जहर सहित छाछ पीय चालियां, त्यां तो बांको न हुवो वाल रे। बरसां पाछे त्यांने घणा कह्या, तिणसुं मरण पाम्यो ततकाल रे ॥ ११ ॥ छ० ॥ भाइने पवन झुल्यो देखने, भाइने न जणाव्यो ताहि रे। जाण्यो तिण दिन धसको पड्यो, ततकाल छोड़ी तिण काय रे ॥ १२ ॥ छ० ॥ ए मुवा जहर याद अणावियां, पामो अणचितवी असमाद रे। ज्यूं भागे ब्रह्मचारी शील सु, काम भोगाने करयां याद रे ॥ १३ ॥ छ० ॥ काम भोगांजे याद कीया थकां, संका कंखा उपजे मन माहि रे। शील पालूं के पालूं नहि वले, जावक भ्रष्ट हुवे ताहि रे ॥ १४ ॥ ॥ छ० ॥ इम सांभल नै नर नारियां, मत लोपो छठी वाड़ रे। तो शील वरत सुध नीपजे. तिणसुं हुवे खेवो पार रे ॥ १५ ॥ छ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नित अति सरस आहार नै. वरज्यो सातमी वाड। ते ब्रह्मचारी नित भोगवे, तो वरत रो हुवे विगाड ॥ १ ॥ घृतादिक सु पूरण भरयो एहवो भारी आहार। तो धातु दीपावे अति घणो, तिनसुं वधे विकार ॥ २ ॥ खाटो खारो चरचरो मीठो

भोजन जेह। बिबिध पणे रस नीपजे, ते रसना सरब रसं लेह ॥ ३ ॥ जेहनी रसना बस नही; ते खावे सरस आहार। बरत भाग भागल हुवे, खोवे ब्रह्म-ब्रत सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ८ वीं ॥

॥ नित करूं साधुजी ने बन्दना—ए देशी ॥

॥ कवलो करे आहार उपरतां, घृत बिन्दु झरतो आहार भार री ए। एहवो सरस आहार चांप चांपनै, नित २ न.कर ब्रह्मचारी ॥ १ ॥ बाड़ म लोपो सातमी ॥ वय तरुणी रोग रहित छे, ते करे सरस आहारो ए। ते आहार रूड़ी रीत परगमे, तिणसुं बधे अत्यन्त विकारो ए ॥ २ ॥ वा० ॥ विकार वध्यां ब्रह्मबरत नै, दोषण अनेक विध लागें ए। बले अंग कुचेष्टा उपजे, जाबक ब्रत तिहाँ भागी ए ॥ ३ ॥ वा० ॥ सरस आहार नित चाँप २ किया, ब्रत भांगे बिगड़े बहु लोगो ए। संसार मै दुखी हुवे, बधता जावे रोग नै सोगो ए ॥ ४ ॥ वा० ॥ वय तरुणी काया जीरण पड़े जे करे सरस आहारो ए। पेट फाटे पड्यो तड़फड़े, वले आवै अंजीरण डकारो ए ॥ ५ ॥ वा० ॥ बिबिध पने रोग ऊपजे, नित सरस आहार कीयां भारी ए। अकाले मरे धरम खोयने, वले होय जावै अनन्त,

संसारी ए ॥ ६ ॥ वा० ॥ वय तरुण पणे धनी इण विध मरे, नित कीधां सरस आहारो ए । तो बूढारो कहेवो किसूं, तिणरे पेट तुरत होय जाय भारो ए ॥ ७ ॥ वा० ॥ दूध दही पक्कवान ने, सरस आहार खावे रहै सूतो ए । पाप समणो कह्यो उत्राध्ययन मे, तो साध पणाथी बिगूतो ए ॥ ८ ॥ वा० ॥ चक्रवर्त्तनी रसवती भोगवी, भूत दे ब्राह्मण छोड़ी ने लाजो ए । काम बिड़म्बना तिण लही, बहन बेटी सूं कीधो आकाजो ए ॥ ९ ॥वा०॥ सरस आहार तणो लंपटी, घणो भंगु आचारज थयो ए । ते मरणे गयो व्यंतरीकमे, संजम लारे उडाई खेहो ए ॥ १० ॥ वा० ॥ सेलगराय ऋखेसरू, सरस आहार तणी हुवो गिरधी ए । ते जिह्वा वस पडियो थको, क्रिया अलगी धर दीधी ए ॥ ११ ॥ वा० ॥ कुण्डरीक रस लम्पटी थयो पाछो घरमे आयो ए । भारी आहार सुं रोग ऊपजै मुवो, पडियो सातमी नरकमे जायो ए ॥ १२ ॥ वा०॥ इत्यादिक बहु साध साधवी, लोप न सातमी वाड़ ए । ब्रह्मचरज व्रत खोयने, गया जमारो हार ए ॥ १३ ॥वा०॥ सनिपातियो दूध मिश्री पीवे, तिण सनिपात वधतो देखो ए । ज्युं ब्रह्मचारी सरस आहार सुं, विकार वधे विसेषो ए ॥ १४ ॥ वा० ॥ इस साँभल

ने नर नारियां, नित भारी म करज्यो आहारो ए। शील ब्रह्म सुध पालने, आवागमन निवारो ए॥ १५ ॥ वा० ॥ सरस आहार तो ज्यांई रह्यो, लूखोई पिण आहारो ए। चाँप २ नित करणो नही, हिवै कहस्युं आठमो बाड़ो ए ॥ १६ ॥ वा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ आठमी बाडमे इम कह्यो, चाँप न करणो आहार। प्रमाणो लोप बधको करे, तो वरतरो हुवे विगाड़ ॥ १ ॥ अति आंहार थी दुख हुवे, गल रूप बलगाय। परमाद रोग निद्रा आलस हुवे, वले अनेक रोग होय जाय ॥ २ ॥ अति आहार थी विषे वधे, घणोइज फाटे पेट। धान अमाऊ ऊरे तो, हांड़ी फूटे नेठ ॥ ३ ॥ केई बाड़ लोपे बिकल थका, करसी अधिको आहार। त्यांरे कुण २ अवगुण नीपजे, ते सांभलज्यों विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ९ वीं ॥

॥ विमल केवली एक रे चम्पा नगरी—ए देशी ॥

॥ भर जोबन रे माही रे देही नीरोगी होवे, मांही से जस री जोड़ी घणो ए चाँपे कीधां आहार रे, पंछे सतावै सु, तो बिषे वधे तिण रे घणी ॥ १ ॥ जव गमता लागे भोग रे, ध्यान मे माठो रहें, वले गमतो

लागे असत्री ए ॥ २ ॥ शील पालके नाहि रे, संका ऊपजे पछे भोग, नारी वञ्छा ऊपजे ए ॥ ३ ॥ मोने लाभ होसी के नाही, शील बरत पालियां, पिण सांसो ऊपजे ए ॥ ४ ॥ जब भ्रष्ट हुवे बृत भांग रे, भेष माहि थका, केई भेष छोड हुवे गिरसती ए ॥५॥ चांपे कीधां आहार रे, पछे अछित रे, तो इसड़ो अनरथ नीपजे ए ॥ ६ ॥ केईकाँरे हुवे रोग रे, ते आहार इधको करें, वले सास आवे अबधो थको ए ॥ ७ ॥ फाटे पेट अनन्त रे, बन्ध हुवे नाड़िया, वधें असाता पेट नी ए ॥ ८ ॥ होवे अजीरण रोग रे, मुख तासे बुरी चले, पेट झाल आफरो ए ॥ ९ ॥ ते ऊठे उकाला पेट रे, चालें कलमती, वलै छूट मुख थूकनी ए ॥ १० ॥ डोल फिरे चकडोल रे, पित्त घूमे घणा, चालै मुखडे मुलकणी ए ॥ ११ ॥ आवे माठी घणी डकार रे, वले आवे गुचलका, जइ आहार भाग ऊलटो पडे ए ॥ १२ ॥ चाले मरोडा पीड रे, पेट दूखे घणो, वले लोहीठांण परो हुवे ए ॥ १३ ॥ नाड्यामे ऊपजे रोग रे, ते आहार झले नहीं, ज्युं खावे ज्युं निकले ए ॥ १४ ॥ वले ताव चढे ततकाल रे, बन्ध हुवे मातरो, अधिको आहार कियां ए ॥ १५ ॥ घणी देही पडे कुशाल रे, आहार भावे नहीं, जब मांस लोही

दिन २ घटे ए ॥ १६ ॥ खीण पड़े जब देह रे, निर्ब-
लाई पड़े वले, हाथ पगाँ सो जो चढ़े ए ॥१७॥ थम्भे
नहीं अतिसार रे, औषध करे घणा, दिन २ फरी
इधको हुवे ए ॥ १८ ॥ पछे जावक छूटे अन्न रे,
चूके धर्म ध्यान थी, वले बोले घणी दयामणो ए
॥ १९ ॥ वले हुवे सास ने खास रे, जलोदर घणो
बधे, सुन्य बून्य देही पड़े ए ॥ २० ॥ बधे अपचो
रोग रे, आहार पचे नहीं ए, औषद कोई लागे नही
ए ॥ २१ ॥ वले ऊपजे दाह सरीरे, बलण लागी रहे
रे, पेट सूल चाले घणी ए ॥ २२ ॥ वेदना हुवे आ-
ख्या कान रे, खाज हुवे घणी ए, वले रोग पिंजर
ऊपजे ए। २३ ॥ इत्यादिक बहु रोग रे, ऊपजे आ-
हार थी, हूं कहि २ ने कितरो कहूं ए ॥ २४ ॥ ए
हुवे आहार थी रोग रे, नाम ले वलि अवर नो, त्यांरे
कूड़ बधे घणी ए ॥ २५ ॥ ते चाँप करे आहारो रे,
गिरधी पेट रो, तिणने साच बोलनी दोहीलो ए
॥ २६ ॥ कोई साधु राम रे, यो आहार अधिको
करें, तो घणी कुडे तिण ऊपरे ए ॥ २७ ॥ जो मि-
लण कहें अनेक रे, तूं आहार इधको करें, तो ही
कह्यो न माने एकनो ए ॥ २८ ॥ पूरण भरे नित पेट
रे, इधको चाँपने, जब पाणी पूरो मावे नही ए ॥ २९ ॥

तिरखा लागे अनन्त रे, पेट दूखे घणो, टलबलाट करे घणी ए ॥ ३० ॥ खावें आवलिया डील रे, जक नही तेहने, अजक घणो वेजे जेहने ए ॥ ३१ ॥ इसड़ो पड़े विपत्त रे तोही गिरधी पेट रो, निज अवगुण छोडै नही ए ॥ ३२ ॥ जब रोग पीड़ लै आण रे, मरे माठी रीत रे श्री जिन धर्म्म गमाई ने ए ॥३३॥ चारूं गत रे माही भ्रमण करे घणो, अनन्त काल दुख भोगवे ए ॥३४॥ कुण्डरीक रे ऊपनो रोग रे, आहार इधको कीयां, मरणे गयो नरक सातमी ए ॥ ३५ ॥ हांडी फाटे नेठ रे, इधको ऊरियां, तो पेट न फाटे किण विध ए॥ ३६ ॥ वृह्मचारी इम जाण रे, अधिको नही जीमिए, अनोदरी मे गुण घणा ए ॥ ३७ ॥ उत्तम अनोदरी तपरे, करतां दोहीलो, वैराग विना हुवे नही ए ॥ ३८ ॥ ए कही आठमी वाड रे ब्रह्मचारी भणी, चोखे चित्त आराधजै ए ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवमी वाड विरमचर्यनी, विभूषा न करणी अंग । विभूषा कीधां थकां, थाये वरत नो भंग ॥१॥ शरीर विभूषा जे करे, करे तन सिणगार । रहे घठा, रियां माठारिया त्यां लोपी ब्रह्मव्रत वाड़ ॥ २ ॥ शरीर विभूषा जे करे, ते संजोगी होय । ब्रह्मचारी तंन

न सोभवे ते कलपे नही कोय ॥ ३ ॥ बाड़ भांग्या किण बिध रहे, अमोलक शील रतंन्न । तिण सूं ब्रह्मचारी ब्रह्मवरत ना, किण बिध करे जतन्न ॥ ४ ॥

॥ ढाल १० वीं ॥

॥ धीज करे सीता सती रे लाल रे—ए देशी ॥

॥ शोभा करणी देहनी रे, नही करणी तन सिणगार रे ॥ ब्रह्मचारो०॥ पीठी उगटणो करणो नही रे लाल, मरदन करणो लिगार ॥ १ ॥ ब्र० ॥ नवमो बाड ब्रह्मचर्य नी रे लाल ॥ ऊना ठण्डा पाणी थकी रे, मूल न करणों अंगोल । ब्र० । केशर चन्दण नही चरचणा रे लाल, दांत रंग न करणो चोल ॥ २ ॥ ब्र० न० ॥ बहुमाला ने ऊजला रे लाल, वस्त्र पहरणा नाही । ब्र० । टीका तिलक करणा नही रे लाल, नवमी वाड रें माहि रे ॥ ३ ॥ ब्र० न० ॥ कंकण कुण्डल मूंदड़ी रे लाल, माला मोती नो हार । ब्र० । ब्रह्मचारी पहरे नही रे लाल, गहणा बिबिध प्रकार ॥ ४ ॥ ब्र० न० ॥ नही रहणो घटरचो मठरायो रे लाल, केशादिक नं सिणगार । ब्र० । वस्त्रादिक पिण पहरणा रे लाल, मूल न करणो सिणगार ॥ ५ ॥ ब्र० न० ॥ बिभूषा अंग छै कुशील नो रे लाल, तिणसुं चींकणा कर्म बन्धाय । ब्र० । पड़े संसार सागर माहि

रे लाल, तिणरो पार वेगो नही आय ॥ ६ ॥ ब्र० न० ॥ सिणगार कियो रहे तेहने रे लाल, अस्त्री देवै चलाय। ब्र०। भ्रष्ट करै देवै तेहने रे लाल, ढाली कर देवे ताय ॥ ७॥ ब्र० न० ॥ रतन हाथे हुवे रांकने रे लाल, ते देखि खोस लेस्ये राज । ब्र०। ज्युं ब्रह्मचारी विभूषा कीया रे लाल, स्त्री शील रतन खोसले ताय ॥ ८ ॥ ब्र० न० ॥ ब्रह्मचारी इम सांभलो रे लाल, विभूषा मति करज्यो लिगार। ब्र०। ज्यूं शील रतन कुशले रहे रे लाल, तिणसुं उतरो भव पार ॥ ९ ॥ ब्र० न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवमी वाड कही ब्रह्मचर्यनी, हिवै दसमो कहूं कोट। ते वाड दोली वींटी रह्यो तिणमे मूल न चालें खोट ॥ १ ॥ कोट भांग्यां जोखम छै वाड ने, वाड भांग्यां वरतने जाण। तिणसुं कोट डिगणे दैवै नही, ते डाहो चतुर सुजाण ॥ २ ॥ कोट भाग वारे पड्यां थकां वाड भागतां कितियक वार । तिणसुं विसेष कोट रो, करवो जतन विचार ॥ ३ ॥ सहर कोट सैंठो हुवे, तरे चिन्ता म पामे लोक। ज्युं अडग कोट ब्रह्मचर्यनो, तो शील न पामे दोष ॥ ४ ॥ ते कोट करणो किण विध कह्यो. किण विध करणो

जतन्न। तिणसूं ब्रह्मचारी विवरा सुध, सांभलज्यो धर मन्न ॥ ५ ॥

॥ ढाल ११ वीं ॥

॥ बिनारा भाव सुण गुणोण—ए देशी ॥

॥ मन गमतो सबद रसाल, अण गमतो सबद विकराल। गमतो सबद सुण्यो नही रीझे, अण गमतो सुण्या नही खीजें ॥ १ ॥ काला नीला राता पीलां धोला, पांच प्रकार ना रूप बोहीला। राग न आंणे भला रूप देख, माठा देख न आंणे द्वेष ॥२॥ गन्ध सुगन्ध दुरगन्ध दोय, गमता अण गमता सोय, गमता सुरत नही होय ॥ ३ ॥ रस पांच प्रकार ना जाणो, त्यांरा सबदादिक अणेक पिछाणो। गमती सूं राग नही रमणो, अण गमती सूं धेक न धरणो ॥ ४ ॥ फरस आठ प्रकार ना ताम, त्यांरा जुदा २ छै नाम। राग गमती अण गमती रो द्वेष, यां दोयां सूं रहणो निरापेख ॥५॥ सबद रूप गन्ध रस फरस, भला भूँडा हलका भारी सरस। त्यांसूं राग द्वेष करणो नही, शील रहसी एहवा कोट मांहि ॥ ६ ॥ शील रतन ब्रत छै भारी, तिणरा इण विध करणा जतन्न। सघला ब्रतां माहि ब्रत मोटो, तिणरी रक्षा तणो कह्यो कोटो ॥ ७ ॥ जे सबदादिक सूं

हुवे राजी, तो कोट जावै छै भाजी । कोट भांज्यां बाड चकचूरो, ब्रह्मव्रत पिण पडि जाय दूरो ॥ ८ ॥ तिणसुं कोट रा कणा जतन्न, तो कुशल रहै शील रतन्न । टल जावै सगिलाई दोष, तिणसुं पामै अविचल मोक्ष ॥ ९ ॥ इम सांभल ने ब्रह्मचारी तूं, कोट म खण्डी लिगारो ज्युं । दिन २ इधको आनन्द, इम भाष्यो छै श्री वीर जिनन्द ॥ १० ॥ ए कोट सहित कही नव बाड, इम सांभल नै नर नार । इण रीत सूं ब्रह्मब्रत पालो, ज्यूं मिटै सब आलजञ्जालो ॥ ११ ॥ उत्तराध्येन सोलमै मझारो, तिण बोलै इणे अनुसारो । तो कोट सहित कही नव वाडो, तिण रो संक्षेप कह्यो विसतारो ॥ १२ ॥ फागुण वदिं छठ गुरुवारो, इगचालीस समत अठारो । जोड कीधी सहर पादु मझारो, ते तो समझावण नर नारो ॥ १३ ॥

॥ इति श्री शीलरी नववाड़ सम्पूर्णम ॥



॥ अथ श्री देवकीजी री चौंपाई ॥

॥ दोहा ॥



भद्दिलपुर नाम नगर, भरिया ऋद्ध भण्डार। तिहां वसै नाग गाथापति, सुलसा छै तसु नार ॥ १ ॥ सुलसा छै मृत बांझड़ी, घणी पुत्र की चाह। हरिणगमेषी देवरो, सेव करे चित लाय ॥ २ ॥ अनुकम्पा आणी देवता, सुलसा विलखी जाण। छय बेटा देवकी तणा, मेल्या सुलसा घर आंण ॥ ३ ॥ अनुक्रमे मोटा हुवा, कला बहोत्तर जाण। नव अंग सुता जागिया, डाहा चतुर सुजांण ॥ ४ ॥ एकण कुलरी ऊपनी, कन्या राज-कुमार। परणाई छै जुई २, बत्तीस २ नार ॥ ५ ॥ दीधो माय ताय दायजो, सुणज्यो थे विस्तार। ऋद्ध तणो बरणन करूं, धरज्यो चित्त मझार ॥ ६ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ श्री नवकार जपो मन रङ्गे—ए देशी ॥

॥ बत्तीसे तो कोड़ सोनइया, बत्तीस रूपारी कोड़ी माई। बत्तीस बाजूबन्ध दीधा, बत्तीस कांकण री जोड़री माई ॥ १ ॥ पुन्य तणा फल मीठाई जाणो,

बत्तीस तो हार टंकावली । बत्तीस नवसरा जाण री माई । बत्तीस तो अठोतरिया दीना, बत्तीस तेसरिया जाणरी माई ॥ २ ॥ पु० ॥ बत्तीस तो प्याला सोनैरा, बत्तीस रूपैरा वखाण री माई । बत्तीस तो थाल सोनैरा, बत्तीस रूपैरा वखाण री माई ॥ ३ ॥ पु० ॥ बत्तीस तो पिलंग सोनैरा, पागा रतन जडावरी माई । बत्तीस तो बाजोट सोनैरा, बत्तीस रूपैरां सरावरी माई ॥ ४ ॥ पु० ॥ इम रीते तो छऊं कुमरां ने, सरस दातांरी जोड री माई । पगे लगण रा सासु दीना, एक सौ बाणवे बोल री माई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

आगे धन छौ अति घणो, आयो दायजो दान ।
पूरब कमाई भोगवे, पुन्य तणे परमाण ॥ १ ॥
मादल बाजे अति घणा, घर चिन्ता नही कोय ।
बत्तीस बिध नाटक पड़े, राच रह्या तिण मांहि ॥ २ ॥
एहवा सुख आवी मिल्या, पुन्य तणे संजोग ।
धरम करम मन नहि ओलखे, विलसण लागा भोग ॥ ३ ॥
जाली गोखां विराजिया, गोखां रतन जडाय ।
काल न दीसे जावतो, मन गमता सुख थाय ॥ ४ ॥
भवस्थिति पाकी तेहनी, मिल्या अपूरव आंण ।
किण बिध समझे धरम में, ते सुणज्यो हित आंण ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ धीज करै सीता सती रे लाल—एदेशी ॥

॥ तिण कांले नैं तिण समै रे बावीसमा जिनराज रे । भविक जिन० । गाम नगर पुर विचरता रे लाल, तारण तरण जिहाज रे ॥ १ ॥ भ० ॥ श्री-नेम जिनन्द समोसरया रे लाल । आय उतरिया बागमैं रें, भवि जीवां भाग रे । भ० । मारग बतावै मोक्ष नी रे लाल, उपजावै बैराग रे ॥ २ ॥ भ० श्री० ॥ एक २ मुनिवरु एहवा रे, तप कर सोखी काय रे । भ० । सोलै रोगां पर तेहना रे लाल, खँखार लगायां क्षय जाय रे ॥ ३ ॥ भ० श्री० ॥ एहवी ऋद्धतणा धणी रे, श्री नेम जिनन्दजी रा साध रे । भ० । ज्यांनै तो वान्दो भावसूं रे लाल, बरते सदाई समाध रे ॥ ४ ॥ भ० श्री० ॥ सहस्र अठारै मुनिवरू रे, आरज्यां सहस चालीस रे । भ० । ज्यांरी आंण मनावता रे लाल, ऊतरे भव पार रे ॥ ५ ॥ भ० श्री० ॥ केइक हाथी केइ पालखी रे, केइक पाला जाय रे । भ० । होडा होडी नीसरया रे लाल, सुणवा जिनजी नी वांण रे ॥ ६ ॥ भ० श्री० ॥ एक २ नै बोलावता रे, मन मैं हरषित थाय रे । भ० । आप आपरा समझावता रे लाल, भेला होयने जाय रे ॥ ७ ॥ भ० श्री० ॥

केइक परशन पूछवा रे, केइ बांदण नें काज रे। भ०। केइक अरथ अवधारवा रे लाल, केइक दरशण काज रे ॥ ८ ॥ भ० श्री० ॥ केइ कतूहल जोयवा रे, केइक कुल आचार रे ॥ भ० ॥ केइक सांसो भांजवा रे लाल, केइक लोक विवहार रे ॥ ९ ॥ भ० श्री० ॥ जिण दिन पिण हूंता घणा रे, भारी करमा मूढ रे। भ०। अवगुण अण हूंता काढनै रे लाल, झाली मिथ्यात नी रूढ रे ॥ १० ॥ भ० श्री० ॥ इतरगति नी पारख्या रे, केइक विरला जांण रे। भ०। मोक्ष तणी ज्यांनै आसता रे लाल, पालें जिनवर आंण रे ॥ ११ ॥ भ० श्री० ॥ घणानै जातां देखनै रे; [illegible]सरिया छऊं भाय रे। भ०। भवस्थित पाकी तहथी रे लाल, श्री नेम बान्दण नै जाय रे ॥ १२ ॥ भ० श्री० ॥

॥ दोहा ॥

बन्दना कीधी भावसूं, बैठा सनमुख आय।
भगवन्त दीधी देसना, सगलां नै हित लाय ॥ १ ॥
जीवादिक नव तत्वना, भाख्या भिन्न २ भेद।
मोक्ष तणा सुख साश्वता, सरधी आंण उमेद ॥ २ ॥
वाणी सुणनै परखदा, आया जिण दिश जाय।
छउ भाई वैरागिया, बोलै किण विध वाय ॥ ३ ॥ हाथ
जोडनै इम कहै, सरध्या तुमरा वैण। थे तारण भव

जीव रा मिलिया साचा सैण ॥ ४ ॥ मात पिता नै पूछनै, लेस्यो संयम भार । संसार जाण्यौ कारमो, मोक्षतणा सुख सार ॥ ५ ॥ वलता इसड़ी जिन कहे, दिक्षा दिलमैं भाय । जिका घड़ी जावै ब्रत बिना, ते फिर पाछो नही आय ॥ ६ ॥ मात पिता नै पूछनै, लीधो संयम भार । तिणरा भाव कह्या घणा, जमाली ज्युं विस्तार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ तप सरीषो जग कौन—एदेशी ॥

हाथ जोड़ी करूं बीनती, नीचो सीस नमाय हो स्वामी । बेले २ पारणो, दीजे मोहि करार हो स्वामी ॥ १ ॥ अरज करूं प्रभु बीनती० ॥ पहिले पोरसि सिझाय नो, बीजे ध्यान ज ध्याय हो स्वामी । तीजी पोरसी गोचरी, एह अभिग्रह कराय हो स्वामी ॥ २ ॥ अ० ॥ वलता जिन इसड़ी कहै, जिम थांनै सुख थाय हो स्वामी । इण अवसर कर्म काटनै, पहुंता शिवपुर जाय हो स्वामी ॥ ३ ॥ अ० ॥ नेम जिनन्द आज्ञा दिये, मनमैं हरष अपार हो स्वामी । भावसहित तप आदर्यो, चोखे चित्त लव लाय हो स्वामी ॥ ४ ॥ अ० ॥ द्वारका नगरी पधारिया, बावीसमा जिनराज हो स्वामी । आय उतरिया,

बाग मै, ए पिण आया साथ हो स्वामी ॥५॥अ०॥

॥ दोहा ॥

लोक आया छै अति घणा, सुण वाणी घर जाय।
छऊं साध लैवा पारणो, पात्र पड़िलहैं आय॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ राग यत्तनो ॥

पहिली पोरसी करिये सिझाय, बीजी पोरसी ध्यान ज ध्याय। तीजी पोरसी गोचरी काल, आज्ञा लै ऊठ्या ततकाल ॥ १ ॥ नेम जिनन्दरो ले आदेश, द्वारका मांहि कीधो परवेश। छव साधांरा तीन सिंघाड़ा, ऊठ्या गोचरी अणगारा ॥ २ ॥ ग्रद्धपणै टालै अण विसेष, ऊंच नीच कुल मध्य विसेष। भमर तणी पर ल्यावै भिक्षा, विनयवन्त पालै गुरु शिक्षा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

छऊं सहोदर सारसा, नल कुवेर अणुहार।
नयन न धापै निरखतां, हियड़ै हर्ष अपार॥
तीन सिंघाड़ा जुव जुवा, वहिरै माता हाथ।
परगट होवै किण विधै, ते सुणज्यो विख्यात॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलना जी—एदेशी ॥

बसुदेव जी के घर आविया जी, देवकी हरषित थाय। सात आठ पग साहमी आयने जी, लुलि लुलि लागी पाय ॥ १ ॥ साधुजी भले पधारया आज ॥ आज कृतारथ हूं थई जी, मुनिवर आया बार। ज्यां पुरषांरी चाहिना जी, ज्यांरो मै दीठो दीदार ॥ २ ॥ सा० ॥ आज भली जागी दिसा जी, दीठी मुनि तणी जोड़। आज भले दिन ऊगियो जी, पूरी म्हारा मनड़ा री कोड़ ॥ ३ ॥ सा० ॥ मोदक थाल भरी करी जी, देवकी मांहि सूं ल्याय। कृष्णजी रे जीमण तणा जी, बहिराया ऊलट भाव ॥ ४ ॥ सा० ॥ मुनिवर बहिर पाछा बल्या जी, लागी थोड़ीसीं वार। बीजो सिंघाड़ो वले आवियो जी, देवकी रे घर सार ॥ ५ ॥ सा० ॥ मोदक बहिराया वले भाव सूं जीं, बहिरे चाल्यां मुनिराय। देवकी पोंहोंचाय पाछी वली जी, बैठी सिंघासण आंय ॥ ६ ॥ सा० ॥ तीजो सिंघाड़ो बले आवियो जी, देवकी रे घर मांहि। मोदक बहराया वले भावसूं जीं, मनमै रलियायत थाय ॥ ७ ॥ सा० ॥ बार २ घर आयां मांहरे जी यो नहि साधु आचार। सांसो

पड्यो मन मांहरे जी पूछ करूं निरधार ॥८॥सा०॥
लाज करी पूछूं नही जी, संका रहि मन मांहि।
पूछ्यां क्रोध आवै सही जी, दीसे मोटा मुनिराय
॥ ९ सा० ॥

॥ दोहा ॥

चतुर बिचक्षण जे हुवे, काढ़े तुरत निकाल।
साचा हुवै ते सरदहै, खोटा देवै टाल ॥ १ ॥
साँची समकित तेहनी, आपो काढ़े केम।
कुगुरु छोडै पलक मै, करै सुगुरुसूं प्रेम ॥ २ ॥

॥ ढाल ६ ठीं ॥

॥ जगत गुरु त्रिसलानन्दन जी,—एदेशी ॥

भगवंत नगरी द्वारिका जी, बारै जोजन परमाण। कृष्ण नरेसर राजियो जी, ज्यांरी तीन खण्ड मै आंण ॥१॥ मुनिसर एक करूं अरदास०॥ देवलोक सरिखी द्वारिका जी, देख्यां हरषित थाय। घर छै घणाई सामठा जी, पेख्यां चित उल्लास ॥ २ ॥ मु० ॥ वहुत्तर कोड़ घर बाहिरे जी, नगरी मै साठ किरोड़। लोक सहू सु या वसे जी, राम कृष्ण री जोड़ ॥ ३ ॥ मु० ॥ लाखां किरोड़ां धनी जी, नगरी मांहे लोक। खाणे पीणे खरचणे जी, पुन्य सूं मिलिया थोक ॥ ४ ॥ मु० ॥ रागी घणा

जिन धर्मना जी, सेठ सेनापति राजान । साधु रा दरशण बिना जी, मुख मै न घालै धान ॥५॥ मु० ॥ भावज अचरिज कारण जी, मांहरे मनमै समाय । कह्यां मैं लालच को नही जी, बिन कह्यां रह्यो न जाय ॥ ६ ॥ मु० ॥ हूं पूछूं इण कारणै जी, साधां े न लाधो आहार । मांहरे भागरा खांचिया जी, आया तीजी वार ॥ ७ ॥ मु० ॥ मै तो शास्त्र मै ांभली ज़ी, नही आवे बारम्बार । ए सांसो मुझने ड्यो जी, पूछ करूं निरधार ॥ ८ ॥ मु० ॥ बलता ुनिवर इसड़ी कहै जी, नगरी मै बहोत दातार । ीन सिंघाड़ा आविया जी, मे छां छऊं अणगार ९ ॥ देवकी संका मूल ने आंण० ॥ किण नगरी बासिया जी, क्या रिद्ध हुतो जी ताह । किण माताारा जनमिया जी, कांई पितारो नाम ॥ १० ॥ दे० ॥ नागसिरी रा डीकरा बाई, सुलसां मांहरी माय । भद्दलपुर रा बासिया बाई, घर छोड्या छऊं भाय ॥ ११ ॥ दे० ॥ बत्तीस २ रम्भा तजि बाई, बत्तीस से २ दात । कुटम्बी छोड्या सहु रोवता बाई, विल २ करती माय ॥ १२ ॥ दे० ॥ नेम तणी वाणी सुणी बाई, जाण्यो अथिर संसार । प्रतिबोध्यां छऊं जणा २ बाई, लीधो संयम भार ॥ १३ ॥ दे० ॥

सुण साधांरां बचन मै बाई, संका मूल न आंण
थांरै बहिरनै गया बाई, ते तो बीजा जांणं
॥ १४ ॥ दे० ॥

॥ दोहा ॥

बचन सुण्या मुनिवर तणा, मन मैं हरषित थाय।
मोही विलुँधी देवकी, जोय रही चित लाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

॥ परिडत पांचसें पूजित परपदारे—एदेशी ॥

नैणां निहाले हो राणी देवकी रे, ए छे बे अणगार । रूप तणी यांरै छे सम्पदा रे नल कुवेर अणुहार ॥ १ ॥ नै० ॥ सुरत मै दीसे अति सोभता रे, घणा जीवां रे हेत । जिण घर मै सूं ए छऊं नीसरचा रे, लार रहिया केत ॥ २ ॥ नै० ॥ इण उणिहार मांहरे राजमैं रे, अवर न दीसै कोय। के तो हुवै मांहरे कानजी रे, ए म्हानै अचिरज होय ॥ ३ ॥ नै० ॥ सगपण कोई निजर आवै नही रे हिवणा सगपण एह। म्हानै सुध खबर न को पडी रे, इम किम जाग्यो नेह ॥ ४ ॥ नै० ॥ श्रावक रो चारित्रिया ऊपर रे, हुवे धर्म सनेह। सो ज्युं परवस कोउ ना पड़े रे, इम किम जाग्यो नेह ॥५॥ नै० ॥

॥ दोहा ॥

करत बिमासन देवकी, हूं बलिहारी तास।
एहवा मुनिवर देखने, पामी बहुत हुलास ॥ १ ॥

॥ ढाल ८ मीं ॥

॥ चन्दगुपत राजा सुणो—एदेशी ॥

बाल पण मोने कह्यो हूँतो, अयवन्तो अणगारो रे। आठ जने सी देवकी, नही कोई भरत मझांरो रे ॥ १ ॥ करय बिमासन देवकी० । भरत क्षेत्रमे सामठा किण मातारा जाया रे, तीन सिंघाड़ा आविया, मै हाथां सूं बहराया रे ॥ २ ॥ क० ॥ जोतिक भाष्यो थे बिचारमे, वचन पड़तो हेठो रे। पुत्र देख पारका सांसो पड़ियों मोटो रे ॥ ३ ॥ क० ॥ आज्ञा देता मातारो, जीव हुही छै केमो रे। यां बेटांरे ऊपरे, केम उतरयो प्रेमो रे ॥ ४ ॥ क० ॥ संसार छोड़ी नीसरया, लागो धर्मसूं प्रेमो रे। यां बेटां विना मायड़ी, दिन काढे छे केमो रे ॥५॥ क०॥ सुन्दर रूप सुहामणो, जाणे देव कुमारो रे। जोति कांति कर दीपता, ए छउं अणगारो रे ॥६॥ क० ॥ एहवो सुत जन्म्या विना, क्योंकर होय आनन्दो रे। यो मोने सांसो पड्यो, भांजे नेम दिनन्दो रे ॥ ७ ॥ क० ॥ पूछण चाली देवकी, ए थांहरे घर आया रे।

आगूंच भाष्यो श्री नेमजी एतो थांहरा जाया रे
॥ ८ ॥ क० ॥

॥ दोहा ॥

वचन सुण्या जिनवर तणा, मनमे हरष अपार ।
एहवा सुत मैं जनमिया, धन माहिरो अवतार ॥१॥

॥ ढाल ९ मीं ॥

॥ वे वे मुनिवर वहिरण पांगुर्या जी—एदेशी ॥

देवकी तो आई नन्दन बांदवारे० । ऊभी रही छै साहमी नाल रे । कस तूटी कंचू तणी रे, छूटी छै दूधा केरी धार र ॥ १ ॥ दे० ॥ तन मन हियड़ो ऊलस्यो रे फूल नै फूलीछै तिणरो देहरे । वलियां मै बांह मावै नही रे, देखतां लोचन तृपत न थाय रे ॥ २ ॥ दे० ॥ सासो तो भांज्यो नेमजी रे, ए छै छउं थाहरा वाल रे । आंख्यां माहि आंसु पड़े र, जाणे तूटी छै मोत्यांरी माल रे ॥ ३ ॥ दे० ॥ देवकी तो मुनिसरचांने वांदनै रे, पाछी आई महलां मांहि रे । सोच फिकर मै वैठी देवकी रे, आरत ध्यान रही छै ध्याय रे ॥ ४ ॥ दे० ॥

॥ दोहा ॥

इण अवसर श्रीकृष्णजी, माता वन्दन जाय ।
वतलायां बोलै नही, ऊभा कृष्ण महाराय ॥ १ ॥

बलता कहै श्रीकृष्णजी, कहो चिंता थई आज ।
सोच फिकर राखो मती, सारूं तुमारा काज ॥ २ ॥
थेई जो चिन्ता करो, औरण सुखिया कोय ।
माहरे इण संसार मै, मात समो नही कोय ॥ ३ ॥
आज्ञा लोपी किण आपरी, माहरा अन्तेवर मांहि ।
तिणरो नाम बताय द्यो काढूं हाथ समाय ॥ ४ ॥
बहुयां थांहरा कथन मै, लुलि लुलि लागूं पांय ।
सगलां नै पग लगावतां, काल कितो एक जाय ॥५॥

॥ ढाल १० वीं ॥

॥ ढंढण ऋषजीने बांदना हूं वारी—एदेशी ॥

हूं तुझ आगल सी कहूं कानइया, वितक दुखनि बात रे ॥ गिरधारी लाल० । जगमें सुखणी छै घणी ॥ क० ॥ घणि दुखियारी थांरी मात रे ॥ १ ॥ गि० हु० ॥ एक नही हुलराविया ॥ का० ॥ गोद न लियो खिण मात रे ॥ २ गि० हु० ॥ छऊं बंधिया सुलसा घरे । का० । आई परतिख देख रे ॥ गि० ॥ बात कही श्री नेमजी । का० । तिणमैं मीन न मेख रे ॥ ३ ॥ गि० हुं० ॥ छव तो इम मोटा हुवा । का० । एक रह्यो तूं पास रे ॥ गि० ॥ तों खमाया रा राखता । का० । आवै छे छमास रे ॥ ४ ॥ गि० हुं० ॥ बालपणे रा बोलड़ा । का० ।

एक न पूरी आस रे ॥ गि० ॥ आसा अलुधी हूं रही । का० ॥ भार मुई दश मास रे ॥ ५ ॥ गि० हुं० ॥ हरष न दीधो हालरो । का० । पालणियें ने पोढ़ाय रे ॥ गि० ॥ हालरियो देवा तणो । का० । हूंस रही मन मांहि रे ॥ ६ ॥ गि० हुं० ॥ आंगण न कराया इथड़ा । का० । आंगुलीयां बिचु लगाय रे ॥ गि० ॥ सहु जाया तीना मिल्या । का० । जामण केम कहाय रे ॥७॥ गि० हुं० ॥ सोल बरस छांनो वध्यो । का० । तुं पिण जमुना तीर रे ॥ गि० ॥ नन्द यशोदा ने घरे । का० । नाम दियो छे अहीर रे ॥८॥ गि० हुं० ॥ बालपणे छांनो वध्यो । का० । अब उघड़िया थांहरा भाग रे ॥ गि० ॥ जमुना जल मैं जायने । का० । नाथ्यो कालो नाग रे ॥ ९ ॥ गि० हुं० ॥ जग मैं मोटी मोहनी । का० । उदय थई माहरे आज रे ॥ गि० ॥ के जीव जाणे माहरो । का० । के जाणे जिनराज रे ॥ १० ॥ गि० हुं० ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण कहे हो मातजी. आरत ध्यान निवार ।
लघु बन्धव होसी माहरे. मत करो फिकर लिगार ॥ १ ॥
घणा सन्तोषी मातने. आया पोषदसाल ।
मित्र देव आराधियो. तेलो कीधो तिण काल ॥ २ ॥

तीन दिवस पूरा हुवा, ऊभो देवता आय।
किण कारण आराधियो, कारज नाम बताय ॥ ३ ॥
कृष्ण कहै सुण माहरे, बन्धव री छै चाह।
इण कारण आराधियो, बिलखी जाणी माय ॥ ४ ॥
बन्धव होसी ताहरे, देव लोकथी आय।
बालपणे दीक्षा लेसी, इम गयो देव जणाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ११ वीं ॥

॥ जम्बू जुगत सुं प्रभव नें उपदिसे—एदेशी ॥

बचन सुणी देवता तणो, कृष्ण आया माता पास रे । घणी सन्तोषी मात नै, हिवड़े अनन्त उल्हास ॥ १ ॥ हि० ॥ पुत्र वसुदेवरा गज सुकुमाल मोक्षगामी रे (ए आंक०) काल कितोयक गयां पछै, चवियो देवलोकसुं आय रे । वसु राजा राणी. देवकी, ऊपनो कुक्षमे आय रे ॥ २ पु० ॥ सवा नव मासे जनमिया, सुखमाल शरीर सरूप रे। कीधो महोछव कृष्ण जी, मन हरष धरी न चूंप रे ॥ ३ ॥ पु० ॥ तीजे दिन चन्द्र सूरज नो, दरशण दिखायो ताम रे । सूतक निकाल्यो दिन बार मै, गज सुक्माल दियो नाम रे ॥ ४ ॥ पु० ॥ मात पिता बंल कृष्णजी, व्हालो घणो जीवन प्राण रे । अष्ट वर्ष, बीतां पछै, हुवो बहोत्तर कलारो जाण रे ॥ ५ ॥ पु० ॥

एक दिन नेम पधारिया, द्वारका नगरी मझार रे। कृष्णजी सुणी बधावणी, मन नै हरष अपार रे॥ ॥ ६ ॥ पु० ॥ स्नान मंजन कीया कृष्ण जी, चन्दन लेप लगाय रे। चतुरंगी सेन्या सझी, श्री नेम बान्दण नै जाय रे ॥७॥ पु० ॥ गज सुकमाल साथे लीयो, पाछें हुवा कृष्ण यदुराय रे। हस्तीस्कन्धे वैसी निसरिया, ढोले चँवर विंझाय रे ॥ ८ ॥ पु० ॥ राज मारग जातां थकां, दीठी कन्या अनूप रे। लावनता कर सोभती, कृष्णजी तिणरे रूप रे ॥ ९ ॥ पु० ॥ गज सुकमाल परणायवा, ऊपनी कृष्णजी रे मन मांहि रे। चाकर पुरस तेड़ी कहे, पुत्री माँगो सोमल पास जाय रे ॥ १० ॥ पु० ॥ चाकर सुण हरषित थयो, पुत्री माँगी सोमल पासे जाय रे। सोमल कहे में टीकियो, पुत्री परणै कृष्णजीरो भाय रे ॥ ११ ॥ पु०॥ सोमल री लेई आगन्या, कुमरी कीधो महिलां मांहि रे। कुमरी अन्तेवर में रहे, जाय वसांणी ताहि रे ॥ १२ ॥ पु० ॥ ए सगपण कर नीसरचा. आघा चाल्या यदुराय रे। अतिसय दीठा भगवन्त रा, हेठा उतरिया दोऊ भाय रे ॥ १३ ॥ पु० ॥ पाँच अभिगम साचवी. लुलि २ लागू पाय रे। परदक्षणा दीधी प्रेम सूं. दोनु सनमुख बैठा आय रे ॥ १४ ॥ पु० ॥

भगवन्तं दीधी देशना, सुणि हरषित थाय रे । लोका-
लोक तत्व तणा, भिन २ दीना बताय रे ॥१५॥पु०॥

॥ दोहा ॥

वाणी सुणने कृष्णजी, आया जिण दिश जाय ।
गज सुकमाल वैरागियो, बोले किण बिध बाय ॥१॥
हाथ जोडी नै इम कहै, सरधा तुमारा बैण ।
थे तारक भव जीवरा, मिलिया साचा सैण ॥ २ ॥
मात पिता नै पूछनै, लेसूं संयम भार ।
संसार जाणो कारमो, मोक्ष तणा सुखसार ॥ ३ ॥
वलिता जिन इंसडी कहे, जो दिक्षा आई दाय ।
जिका घडी जावै तिका, फिर पाछी नही आय ॥४॥
बन्दना करी श्री नेमसूं, आया माता पास ।
आज्ञा माँगे किण विधै, ते सुणज्यो उल्हास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १२ वीं ॥

॥ चंद्रावली की चालमें—एदेशी ॥

वाणी श्री जिनराय तणी काने सुणीरी माई
अन्तर हीयारी आंख आज माहरी ऊघडी ॥ बलती
बोले माय हूं वारीं थांहरी रे जाया । सुणिय जिनंदरी
वाण रूडी गत ताहरी ॥१॥ पुत्र कहे मैं बात, सांची
कर सरदही री माय । मीठी लागे मोहि साकर दूधां
जिसी रे माई ॥ दीजे अनुमति मोय संयम लेस्युं

सही रे माई।न करी अगन्यारी जेज कुमर इसड़ी कही ॥ २ ॥ बचन अपूरब माय कुँवर रा सांभल्या रे माई। घणी मुरझा गति आय असक धरणी ढली री ॥ खलको हाथांरी चूण केसर वेणी वीखरथा रे माई। ओढणी गई दूर धसक मोकल पन्या ॥ ३ ॥ मोह तणे बस माय सुरत चलती रही रे माई। ठंढा शीतल बाय सावचेत वैठी करी ॥ पुत्र ज साहमो जोय रही मा जोवती रे माई। मोह तणो बस वैण बोले माय रोवती ॥ ४ ॥ साध पणो नही सहल जाया जामन कहे रे माई। तुं नानडियो बाल परिसा किम सहे ॥ त्रिविध २ कर पञ्च महाव्रत पालवा रे माई। नान्हा मोटा दोष अहोनिस टालवा ॥ ५ ॥ दोष बयालीस टाल करी रेवैठे गोचरी रे माई। भमर भमै जेम चिन्ता मने लोचरी ॥ रहणो साधांरे पास विनैसुं भापणो रे माई। रात पञ्यां पछै शीत न वासी राखणी ॥ ६ ॥ रतन कचोला छोड़ लैणी रे वछ काछली रे माई। जाव जीव लग वाट न जीवणी पाछली ॥ अरस निरस रो आहार करणो वछ पातर रे माई। ए सुख सेझां छोण सोवणां साथरे ॥७॥ नावे धोवे नाहि मुहणे राखे मुहपती रे माई। पहरू मयला वेश जिके जैनरा जती ॥ मरण

जीवण री वात माता जी थां कही रे माई। द्यो अनुमत आदेश संयम लेस्युं सही ॥ ८ ॥ कायरने छै दुरलभ माताजी थां कही रे माई। सूरा नै छै सहज कुंवर इसणी कही ॥ सोमला नामे नार परणाऊं पदमणी रे माई। सोमल री बेटी परधान कला चतुराई धणी ॥ ९ ॥ परणो पुनवन्ता नार जाय कुण हुवे जतीरे माई। कृष्ण सरीसा बीर रहणो द्वारामती ॥ लीना परणामांनै घेर विषै महा पापणी रे माई । जग मुं सगलीं नार माता कर थापणी ॥ १० ॥ लीनां परणामां नै घेर विषै महा तेवडी रे माई । अशुच २ रो भण्डार जामन नारी कही ॥ स्वारथी रो सगाई जामण कें जिनवर कही रे माई । मल मूत्ररो भंडार जाण परणूं नही ॥ ११ ॥ करणी उग्र बिहार सहिणी सीताबड़ी रे जाया । माहरो कहियो मान तू नानडिया बड़ो ॥ नही पलकरी आस जाणो काल झम्पियो रे माई। औ जग मरतो देख जामण हूं कम्पियो ॥ १२ ॥ द्वारमती रो राज दिराऊं वछ तो भणी रे जाया । हाथी घोड़ा रथ पायक प्यादल घणी ॥ पलटे रंक पतंग फिरे तिणरो इसो रे माई। तिण ऊपर विसास जामण करणो किसी ॥ १३ ॥ सहस बहोत्तर माय पुत्र वसुदेव रा

रे माई । जीवरो प्राणाधार कृष्ण बलदेव रा ॥ भो-
जायां सहस बत्तीस तणी मै मोकलो रे जाया । तुझ
अनुमति देवा कुण करसि एकलो ॥ १४ ॥ बहुला
माल क माइ ते गया रे जाया । परवाई ज्युं अनन्त
ज्ञानी देवा कह्या ॥ श्रीनेमप्रभु पास महाव्रत आदरी
रे माई । जाव जीव लग बात न करूं परमादरी
॥ १५ ॥ हाथ जोड़ी नै अरज करे मा खु रे माई ।
द्यो अनुमति आदेश मनोरथ मुझे फलै ॥ जों तुम
होवे सुख वालुडा तिम करो रे जाया । ज़ादव कुल
उजबाल मुगति बेगी वरो ॥ १६ ॥ चढिया मन
बैराग मोह कर्म तोड़िया रे जाया । कड़ा मोती हार
गहणा सहु खोलनै रे जाया ॥ दिक्षा द्यो श्रीनेमि
भली पुल जोयनै ॥ १७ ॥ जीव जीव लगे सेवा
करूं तुझ आकरी रे जाया । मूल थकी जड़ काटूं
कर्म विपाक री ॥ माहरै खिमा गढ़ फौज माहें आऊं
चली रे जाया । वारे भेदे तप यूथ चोकि चढूं ॥ १८ ॥
वारे भावना री नाल चढ़ाऊं कांगरै रे जाया । तोडूं
आठे कर्म विराजूं मोक्ष मैं ॥ काउसग कीनो जाय
काय मन करी रे जाया । जीता परिसा घोर पहुंता
शिवपुरी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णजी सुण आया इहां, बोलै वाणी एम।
हियडो काठो भीडनै, तुं चारित्र लेवै केम ॥ १ ॥
सुख भोगवो संसारना, ऐ मत काढ़ो बात।
मारे एकज बन्धवो, बिरहो खम्यो न जात ॥ २ ॥

॥ ढाल १३ वीं ॥

॥ रे जाया तो विन घड़ी रे छमास—एदेशी ॥

कृष्णजी सुणतां देवकी रे, बोलै एहवी बाय। राज बैठ तू नानुडा रे, मांहरे देखणरी मन मांहि रे ॥ १ ॥ बन्धवं कह्या हमारो मान० । इम सांभल बोल्यो नहीं रे, देवकी हरषित थाय। भली हुई घरमै रह्यो रे, देस्यां राज बैठाय रे जाया ॥ तो बिन घडी रे छ मास० ॥ २ ॥ विनयवन्त श्रीकृष्णजी रे, माता नै दुखणी जाण। बले मोह भाई तणे रे, राज वैसाणै सही रे जाया ॥ ३ ॥ तो० ॥ करय मोटे मंझाण सूं रे, मेल्यां सगला साज। सहाथे गज सुकमाल नैं रे, कृष्ण बैसांणै राज रे ॥ ४ ॥ बन्धव सुखै पालज्यो राज० ॥ द्वारामती नो राजवी रे, तूं सगलांरो नाथ। हाल हुकम सब थाहरा रे, थाहरी कोय न लोपे कार रे ॥ ५ ॥ वं० सु० ॥ राज ऋद्ध सहु थाहरा रे, सगलांनै थांहरी आंण। कृष्ण कहै मन हरषसूंजी, ऊभा

राणो राण रे ॥ ६ ॥ वं० सु० ॥ कुँवर कहै सुण बन्धवा रे, म्हानै कीयो सगलांरो नाथ। लाऊं ओघा नै पातरा रे, म्हारी आण म लोपो वात रे ॥ ७ ॥ वं० द्यो अनुमति आदेश० ॥ काम नही कोइ राज सूं रे, लेणो संयम भार। घरमै रती पांमूं नही रे, जांण्यो अथिर संसार रे ॥ ८ ॥ वं० सु० ॥ वचन सुणी नै कृष्णजी रे, हुवा घणां दिलगीर। वले विलखी थई देवकी रे, नयणां ढलक्यो नीर रे ॥९॥ जाया इम किम दीजै छेह० ॥ समरथ नही कोई राखवा रे, गज सुकमाल कुमार। कीयो महोछव कृष्णजी रे, सूत्रमै घणा विस्तार रे ॥ १० ॥ जाया झटक न दीजै छेह० ॥ मात पिता वले कृष्णजी रे, गज सुकमाल लै साथ। नेम जिणन्दने आंगणे जी, बोलै जोडी हाथ रे ॥ ११ ॥ जिनेसर० ॥ (मुझ वीनतडी अवधार०) केई आहार वहिरावै सूझतो रे, वस्त्र पात्र नै जाण। कुँवर हुवो वैरागियो रे, आप समीपे आण ॥ १२ ॥ जिनेसर० सु० ॥ दे भोलावण देवकी रे, ईशाण कूण मै जाय। गहिणा वस्त्र उतार नै जी, जीव लहरियां जाय रे ॥ १३ ॥ जाया इम किम दीजै छेह० ॥

॥ दोहा ॥

माता पलगट मांडियो, गहणा ले तिण वार ।
आंसू छूटा किण विधे, जाणे मेघाधार ॥ १ ॥
ढीले डोरे हार पोवियो, मादल खस्या तिण वार ।
तूटे हार मोती पडे, जाणे आंसू धार ॥ २ ॥
हियडो फाटे मातनो, साहमो जोय तिवार ।
मांईतांरो जीव छै, बीछडवाणी छे वार ॥ ३ ॥
सीख देवे माता हिवे, म्हांने छोडे आज ।
बहुत जतन कर राखजे, सारो आतम काज ॥ ४ ॥
पाँच प्रसाद जो परहरे, आलस आंगम आंण ।
आराधो जिन आगन्या, पहुंचैं ज्यो निरवाण ॥ ५ ॥
आगन्या दीधी श्रीनेमजी, आया जिंन दिस जाय ।
गज खुकमाल संयम लीयो, बोले किण विध वाय ॥६॥

॥ ढाल १४ वीं ॥

॥ डाभ मूलादिकनी डोरडी—एदेशी ॥

जन्म मरण री लायो, जीव झिल रह्यो चहूं गत मांयो । एहवी लाय वारे काढीजे, सामायिक चारित्र दीजे ॥१॥ नेम दीधो संयम भारो, सिखायो सरब आचारो । विनय करी बोले जोडी हाथो, म्हाने आगन्या द्यो जगनाथो ॥ २ ॥ जो हूं मसान भूमिका जाऊं, बारमी पडिमा ठाऊं । नेम बोल्या अमृत वाणी, मुनि जोथानें सुख आणी ॥ ३ ॥

आगन्या हुई गज सुकमालो, गया मसांण भूम, महाकालो। जठै कायर रो फाटे हीयो, तिण ठामे काउसग लीयो ॥ ४ ॥ सोमल आयो तिण कालो, कोप्यो देखी गज सुकमालो। काली हीण अमावस रो जायो, म्हारी बेटीनै दुख लगायो ॥५॥ म्हारी कन्या अकन कुँवारी, घर माहि ले जाय बैसाणी। तो मारूं नै काढ्डूं बैस, जोइयां मिनख न दीसै नैडो ॥ ६ ॥ भीनी माटी ल्यायो तिण कालो, बांध्यो मस्तक ऊपर पालो। खेराणा खरा लाल अंगारो, घाल्या मस्तक ऊपर तिण वारो ॥ ७ ॥ खीचडी ज्यूं खदबद सीजै, लोही मांस ऊकलतो छीजै। तड तड नाडां ते तूटन्ती, सबद बोलै कपाल फूटन्ती ॥ ८ ॥ मुनि सीस धुण्यो नही कोई, खिमा कीधी समता दिल आई। सोमल ऊपर रोस न आंण्यो, आपरो सिंच्यौ पातक जांण्यो ॥९॥ ध्यायो निरमल सुकल ध्यानो, उपजायो केवल ज्ञानो। धड तूटे नै कर्म सोखे, मुनि जाय विराज्या मोक्षे ॥१०॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन श्रीकृष्णजी, कर मोटे मंडाण।
नेम वन्दणे नीसरया, हरष घणे मंडाण ॥ १ ॥
मारग में इक मानवी, ईंट ले जावे दुख देख।

अणुकम्पा आणी कृष्णजी, ईंट उपाडी एक ॥ २ ॥
सांथे सेन्या अति घणी, इक २ ईंट उठाय।
फेरा टाल्या तिण पुरुष रा, आणि मूंकि घर माय ॥३॥
जाय बन्द्या श्री नेमनै, बैठा सनमुख आय।
गज सुकमाल दीसै नही, पूछै कृष्ण महाराज ॥४॥

॥ ढाल १५ वीं ॥

॥ बीछीयांरी चाल—एदेशी ॥

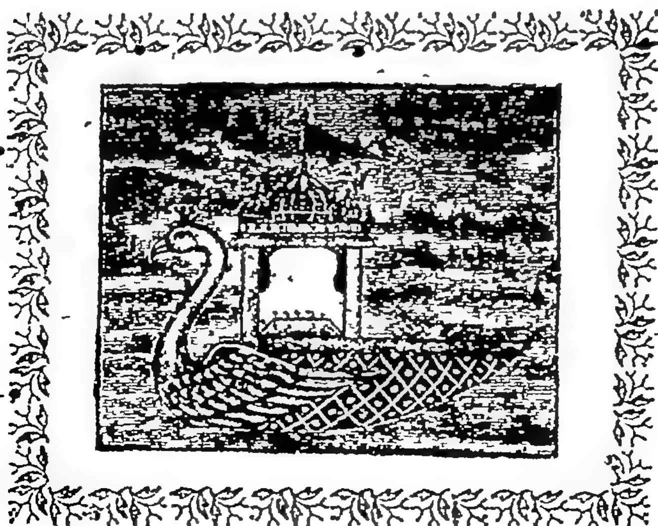
हांरे लाला फूलअङ्गोछो फूटरो, किणने लाधो होय तो बतायहो। हांरे लाला हाथ जोड़ि करूं बीनती, बलीं नीची सीस नमाय हो स्वामी, गज सुकमाल दीसै नही, बन्दनरी मनमाहि होंस हो स्वामी, अरज करूं थांसूं बीनती ॥ १ ॥ बन्धव गज सुकमाल नै, नेम कहे सुणो कृष्णजी; साधु गज सुकमाल हो कान्हा। जिण कारण दीक्षा लीया, सारचा आतम काज हो कान्हाः कर्म खपाय मुगते गया ॥ २ ॥ श्री मरण समाधी पामियो, किम सारचा आतम काज हो स्वामी। मारग में इक मानवी, आपनें दीधो सांज हो कान्हा ॥ हा० ३ ॥ वाणी सुणी नै श्रीकृष्णजी, आयो क्रोध अपार हो स्वामी। बन्धव गज सुकमाल नै, कुण छै मारणहार हो कान्हा ॥ ४ ॥ बन्दणरी मनमें रही, काली अमाव-

सरो जन्मियो, हीण चवदस रो रात हो स्वामी, काण न राखै मांहरी । अकालै कीधो बन्धव घात हो स्वामी ॥ हा० ५ ॥ नेम कहै सुणो कृष्णजी, आया बन्दण काज हो कान्हा, मारगमें इक पुरषरा, फेरा टाल दीया तें दे साल हो कान्हा, समताथी सुख पामिये ॥ ५ ॥ गज सुकमाल अणगार रा, फेरा टल्या अनंत जाण हो कान्हा । क्रोध करो किण कारणै, जाय पोंहचा निरवाण हो कान्हा ॥ स० ६ ॥ नाम बतावो तेहनो, नेम बोल्या तिण वार हो कान्हा धसके पड़सी तुम देखने, जुदा होयसी जीव नै प्राण हो कान्हा ॥ स० ॥ बन्दना कर श्री नेमने, आया नगरी मांही हो कान्हा । आरत ध्यान ध्याता थका, मोह तणै वस थाय हो कान्हा ॥ स० ॥ सोमल डरप्यो अति घणो, पूछा करसी यदुराय हो स्वामी । नेमसूं वात छानी नही; देसी मोहि बताय हो स्वामी । का मोनै कुमोत मारसी ॥ १ ॥ जाणूं कृष्ण आघो काढै नही, हूं जाऊं मूंडो लेय हो, इम चिन्तवी घरसूं नीसरया, साहमा मिलिया कृष्णमहाराज हो, सोमल डरप्यो अति घणो ।१०। धडहड लागो धूजवा धसको पडियो मामी नाल हो. धरणी ढल्यो तिण अवसर. सोमल कर गयो काल हो, मरीने माठी गति गयो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण कहै इण सोमलै, मार्यो गज सुकमाल ।
पगां बन्धावो जेवडा, द्वारका मांहिथी टाल ॥ १ ॥
तीन च्यार मारग मिलै, आमो सामी तांण ।
मुखमें थूको एहने, कोय न राखो कांण ॥ २ ॥
इम कहि चाकर पुरष नै, आया आपण ठांम ।
मोह तणै वस जाणज्यों, धर्म तणो नही काम ॥ ३ ॥
आठ पुत्र जाया देवकी, सात पहुंता मोक्ष ।
आठमां श्री कृष्णजी, करसी करमांरो सोक ॥ ४ ॥
गज सुकमाल तणो चरित्र, सांभल नै नर नार ।
साधु श्रावक व्रत आदरे, जे करै खेवो पार ॥ ५ ॥

इति श्री गजसुकमाल राजऋषि माता देवकीजी री चौपाई संपूर्ण ।



॥ अथ अंजणा सतीरो रास ॥



॥ दोहा ॥



अञ्जणा मोटी सती, पाल्यो सील रसाल।
अशुभ कर्म उदय हुवा, आयो अनहुतो आल ॥ १ ॥ सील पाल्यो तिण किण विधै, किण विध आयो आल। हिवै धुर सूं उत्पत्ति कहूं, सुणज्यो सुरत सम्भाल ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ कड़खानी चालमें—एदेशी ॥

माहिन्द पुरी जुग जाणिये, राजा हो महिन्द वसै तिण ठामक, तसु पटराणी छे रूवड़ी। मांनवेगा राणी तेहनो नामक, सो पुत्र राणी तिण जनमिया; ते रूप मैं रूवड़ी छे अभिरामक ॥ त्यांरे केडं जाई एक वालिका. अञ्जना कुमरी तेहनो नांमक; सतीरे शिरोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ आ० ॥ मात पिता नैं व्हाली घणी. वन्धव सगलां नै गमती अत्यन्तक; रूपमें छे रलियामणी। नैण दीठां घणो हरप धरंतक, सजन सगानें सुहामणी; सखी स्हेल्यां में रही नित

खेलक ॥ विद्या भणी मुख अति घणी, दिन दिन बाधै जिम चम्पक बेलक; सतीरे० ॥ २ ॥ अञ्जना कुमरी मोटी हुई; चिन्तवी नै राय चित्त मझारक; पछै बेग प्रधान तेडावियो। कहे अञ्जना वर तणी करो रे विचारक, जब एक कहे रावण नै दीजिये; एक कहै दीजिये मेघकुमारक ॥ ते पुत्र छै राजा रावण तणौ, तिणरो जोबन रूप घणो श्रीकारक; सती० ॥ ३ ॥ जब एक कहै इम सांभलो, वरस अठार मै मेघकुमारक; चारित्र लेसी बैराग सूं। वरस छाबीस मै जासी मोक्ष मझारक, तो कन्या नै सुख किहां थकी; सघलाई कर देखो मनमै विचारक ॥ मेघकुमार नै द्यो मती, और बिचारो कोई राजकुमारक; सती० ॥ ४ ॥ रत्नपुरी तणो राजवी, राय पैलाद विद्याधर तामक; तेहनो पुत्र अति दीपतो। पवन कुमार छै तेहनो नामक, अञ्जना नै वर जोग छै; ए राज कीयो बचन प्रमाणक ॥ पाछै दूत मेल्यो तिण नगरी मां, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक; सती० ॥ ५ ॥ रूपनै गुण अञ्जनां तणो, परगट हुवो छै लोकमां तांमक; ते पवन कुमारजी सांभल्यो। जब प्रहस्त मंत्रीने कहै छै आंमक, कहै आपे जावां रूप फेरने, जोवानै अञ्जणां नो रूप तिण बारक ॥ पाछै

मती करी दोनूं नीकल्या, ते आय ऊभा रह्या महल
तले तिण वारक; सती० ॥ ६ ॥ हिवे पवनजी
निरखै छै अञ्जणां, प्रहस्त नीचो घाली रह्यो दिष्टक;
रूपमें जांणे देवांगणा। बाणी बोलै जाणे कोयल
बांणक, चम्पक बरण चतुर घणी; आंख्यां जांणै मृग
नैण समानक; सती० ॥ ७ ॥ अञ्जणां बैठी छे सिंहा-
सने, दोऊ पासे अनेक सखियां तणै बृन्दक; वस्त्र
आभूषण अंगे धरया, शोभ रही जाणे पूनम चंदक।
हिवे वसन्तमाला इम उच्चरै; बाईनैं जोग जोडी
मिल्यो श्रीकारक, जेहवो पवनजी जाणिये; तेहवी
पांमी छै अञ्जणां नारक; सती० ॥ ८ ॥ हिवै बीजी
सखी इम उच्चरे, पहिला तो वर मन चिन्तव्यो
जेहक ॥ तहवो पवनजी वर नही ।. वरस अठार
में चारित्र लेहक ॥ पांचूं इंद्री नें जीपतो । वरस
छावीशमै चालसी मोक्षक ॥ तिहां कारण उर वरति
यो । कन्यानै वर तणो जांणियो दूखक; सती० ॥९॥
हिवे अञ्जणां सुण इम ऊचरे, देई धन धन ते नर नो
अवतारक; करम करणी कर ए कारणे, वेगो हो
जासी मुगत मझारक, गुण गावो तिण पुरुषना;
पवनजी सुणीनें वाल्यो अति द्वेषक ॥ आतो रे नार
कुलक्षणी । ऊपनो रे क्रोध विशेषक; सती० ॥ १० ॥

हिवै पवनजी मन मांहें चिंतवै, आ रूपमें रूवडी अत्यन्त बखाणक; मन मांहि मैली रे पापणी । चित चोखो नही एक ठिकानक, पुरुष परायां सूं मन करै; तो हिवै करणो कवन उपायक ॥ जो छोड़ं तो एहुनें बर घणा, परणूं नै परहरूं जुं दुख थायक; सती० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम चिंतवि तिहां पवनजी, पाछा चाल्या तांम ।
आया नगरी आपरी, भोगवै सुख अभिराम ॥१२॥

॥ ढाल तेहिज छै ॥

हिवै मात पिता अञ्जणां तणो, लगन लिखावियो मोटै मण्डाणक; विवाह करवा अञ्जणां तणो । रतनपुरी वेग मेलियो जांणक, महोछव मांडियो अति घणो; बाज रह्या तिहां ढोल निशाणक ॥ मंगल गावै तै गोरडी ऊछव कर रह्या तिहां कोड किल्याणक ॥ सती० ॥ १३ ॥ हिवै राय पलाद तेडाविया, जांन में जावो बडा २ राजानक । हय गंज रथ सझिया घणा, नेहतर्‌या सजन नै दीयो घणो सनमांनक ॥ धन साथे दीयो खरचवा, मोटे मण्डाण चाल्या लेई जांनक । सामंत साथे दीया घणां, जोधा सुभट सेन्या सावधानक ॥ सती० ॥

॥ १४ ॥ हिवे बींद वणाव कीयो घणो, गेहणां, आभूषण पहरिया ताहिक । सखियां गावै रे सोहला, देवै आशीस केतुमती मातक ॥ लूण उतारै रे बैनडी, रूप देख मन हरषित थायक । जांचक बोलै, विरुदावली, इण विध पवनजी परणवा जायक ॥ सती० ॥ १५ ॥ सेन्या सिणगारी चतुरंगणी, गाजेजी अम्बर बाजैजी तूरक । सजन सगा मिलिया घणा, जानज चालै जांणै गंगानो पूरक ॥ वर विद्याधर दीपतो, सोभ रह्यो तिणरो वदन सनूरक । चिहुं दिश साथे सेवक घणा, हाथ जोडि रह्या ऊभा हजूरक ॥ सती० ॥ १६ ॥ महिंदपुरी नैड़ा आविया, आई वधाई राजी हुवो रायक । दीधी वधामणी तेहने, हरषित हुई अञ्जणां तणी मातक ॥ आरत्ती नो महोछव करै, महिंद राजा मन हरष न मायक । सजन सगा मिलिया घणा. सेन्या लेई राजा साहमो जि जायक ॥ सती० ॥ १७ ॥ महिन्द राजा साहमो आवियो. ढोल दमामा नै घुरे निशानक । राणा हो राण सहु मिल्या: व्यापियो तिमिर नै आथम्यो भाणक । सुसरो सांभल आवियो: पवनजी हम्मनें आणंद थायक । धवल मंगल गावै गोरडी. लोक अञ्जनां नो वर जोयवा जायक ॥ सती० ॥ १८ ॥

महिन्द राजा मोटा राजा भणी, अति घणो दियो आदर सनमानक। उछरंग मन मांह अति घणो, भाव भगति सूं मिलियो राजानक॥ जांन ऊतरी रे आंणने, आपियो भोजन विविध पकवांनक। ऊपर सिखरण साचवै, खादिम स्वादिम आप्या घणा मिष्टा-न्नक॥ सती०॥१९॥ हिवै तोरण पवनजी आविया तोहि अञ्जणां ऊपरै घणो अभावक। नाम सुण्यां ही राजी नही, मिलण ही मन तेहनी चावक॥ धवल मंगल गावै गोरडी, पूरण सासू करै बहु भांतक।पिण मनमे न भावै पवनने, यो तो परणै रे अंजणां ने बालवा दाहक॥ सती०॥२०॥ रूपा तणो रे मण्डप रच्यो, सोना तणी रचे तिहां बेहक। जोवन पाट मीन्या जड्यो, अंजणां ने पवन बेठा छै तेहक॥ हथलेवै हाथ मेल्यो तिहां, नयन निहाल छै अंजणां नारक। पिण पवनने मूल गमै नही, धेष जागे पैहली बिचारक॥ सती०॥२१॥ हिवै पवनजी परण नै ऊतर्‌या, कीधी पहरावणी अंजणां नै तातक। गयवर आपिया अति घणा, ताजा तुरंग दीधा विख्यातक॥ कनक रत्न बहु आपिया, आपी छै रूपातणी बहु कोडक। बस्त्र माला दासी आद दे, पांचसै दासियां सरीखी जोडक॥ सती०॥ २२॥

हिवै परणी ने रतनपुरी सञ्चरया, साहमो आयो तिहां पैहलाद रायक । अंजणां मन हरष थई, सासू सुसराना पूजिया पायक ॥ पांचसौ गांव राजा दीया, आप्या छे आभरण रतन बहु मोलक । आया छे बींद बींदणी, आया छे तिहां वाजते ढोलक ॥ सती० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

हिवै काल कितोएक गयां पछै, आयो भेटणो रांय ।
तिहां पवन रो द्वेष परगट हुवै, ते सुणज्यो चित लाय ॥

॥ ढाल २ जी ॥

तहिज०—

पीहर थी आवी रे सूखडी, वस्त्र आभरण आपिया तासक । वस्तमालाने देई करी, अंजणां मेलिया पवन रे पासक ॥ सूखडी पवन खाधी नहीं, वस्त्र गहणा न परहरिया अंगक । अंजणां सूं धेष आंणने वस्त्र गहणा आप्पा मातंगक ॥ सती० २४ ॥ वस्तमाला विलपी थई, आय कही अंजणां कने वातक । स्वामी आपां ऊपरे, हेत न दीसे कोई तिल मातक । अंजणां आंस्यां आंसू झरे, मैं सूखडी भगत कीधी रे अनेकक । यो तो नर दीसे छे निरमलो, आपने दीसे छे कर्म विशेषक ॥ सती० २५ ॥

हिवे अंजणां बैठी रे मालिये, पवनजी तुरिय खेलावण जायक। आवतां जावतां निरखती, तिम तिम मनमें हरषित थायक ॥ पवनजी कोपै रे परजले, निजर दीठां मूल न सुहायक। नारी निहालै रै मो भणी, गोखे आडी दीनी भींत चिणायक ॥ सती० ॥ २६ ॥ पांचसो गांव पोते कीया, मात पिता कहै सांभलि पूतक। अंजणां सती रे सुलक्षणी, बहूने सूंपिये निज घर सातक ॥ मोटे रे कुल तणी ऊपणी, राजा हो महिन्द्र तणी वहै लाजक। अंजणां सूं आदर कीजिये, इम कहे केतुमती महाराणिक ॥ सती० २७ ॥ बापरा आंणां पाछा मेलिया, आंणो आयो वलै बडो घोरक। अंजणां कहे नवी आवियै मेल्या बापा आभरण अदभुत चीरक ॥ स्वामी रै मन मान्या नहीं, पीहरै आवनै सी करूं बातक। इम कही बन्धव मोकल्यो, दुख धरै घणो माय न तातक ॥ सती० ॥ २८ ॥ इम बार बरस बीचमें गया, ए कथा ऊपर एतो ई सम्बन्धक। हिवै रावण नै वरुण कटकी थई, माहो मांहि ऊपनो अंगि द्वेपक। हय गज रथ सजिया घणां, पाला व्हाला पुरषां झाली समसेरक। त्यांने सुध सिंगारिया, चालियो कटक बाजी रण भेरक ॥ सती० ॥ २९ ॥ एक तेडो रतन

पुरी आवियो, पैहलाद राय करे जावाने साजक ।
पवनजी हाथ जोडी कहै, हवै तो बापजी हम तणो
काजक ॥ तुम घर बैठा लीला करो, पुत्र जाया ने
एह प्रमाणक । इम कहने अवध साला सञ्चरचा,
हाथ में धनुष ते लीने तवे बाणक ॥ सती० ॥ ३० ॥
पवनजी चालै रे कटक में, मन मांहे चिन्तवै अञ्जणा
नारक । दूर थकी पाए लागस्यां भाव कुभाव देखो
एक वारक ॥ वस्तमाला माहरी वैनडी, दहीनो
कचोलौ तू भरीनै आणक । सुकन रूडा मनावस्यां,
मारग मांहे ऊभी रही आंणक ॥ सती० ॥ ३१ ॥
सुकन मिसे पीउ देखस्यां, नमण करीने सुझी लागसूं
पायक । लोक सहू इम जांणसी, दहीनो कचोलो
देखसी ताहिक ॥ कटक जाता पीउ वांदस्यां, अञ्जणां
आदरी पवन कुमारक । जिहां लगे स्वामी आवे
नही, तिहां लगे जाणसी लोक मझारक ॥ सती० ॥
॥ ३२ ॥ हिवे गयन्द बैसी दल सञ्चरचो, मात पिता
ने नमावी सीसक । मजन मह रे मन्नोपिया,
अंजणां ऊपर अति घणी रीसक ॥ दूर थकी दृष्टे
पडी, चतुर चितारां नो जोवो चित्तरामक । पूतली
लिखी रम्भा जिमी एह चितारानें देखो हनामक
॥ सती० ॥ ३३ ॥ मंत्री कहे नही पूतली, भीन उठे

ऊभी अंजणां नारक। सांभल पवन कोप्यौ घणो, कांई मिली मोनै मारग मझारक॥ दूर ठेली आघी करी, आस्या अलूंधी मेली आयो जातक। बस्तमाला मोडै करड़का, मुख न देखावज्यो तुम तणो नाथक॥ सती०॥ ३४॥ अंजणां कहै दासी भणी, पोते छे म्हारे अति घणा पापक। गेहली ए गाल न बोलिये, कटक जाता कांई दीधो सरायक॥ आस मोटी मन मांहरे, कांई कुसांबण काडियो एहक। देई उलम्भा दासी भणी, बांह डाली ले गई घर मांहक॥ सती०॥ ३५॥ हिवै अंजणां कहै सुण सुन्दरी, मोने दुख मांहे दुख ऊपनो आजक। पांणी मांहे करि पातली, सासरे पीहरे गई म्हारी लाजक॥ चारित्र लेवो मोने सही, करणी करि सारूं आतम काजक। नाम जपूं जगदीसनो, तेसूं पांमियै अविचल राजक॥ सती०॥ ३६॥ हिवै नगर थकी दल सञ्चरयो, मारगमें दूर कीयो रे मलाणक। चकवो चकवी तिहां टलवले, व्यापियो तिमिर नें आथम्यो भांणक॥ पवन जी मन्त्री ने इम कहे, अंजणां नो भूल न लीजियै नामक। पुरुष पराया सूं मन करै चकवा चकवी नी परे मूकी किनारक॥ सती०॥ ॥ ३७॥ मन्त्री कहे सुणो कुँवरजी, तुमे ए वडी

कांई आंणो मन में रीसक । मोटकी सतीछे अंजणां अह निस सेवती जिन तणो धर्मक ॥ पुरुष परायो वाञ्छे नही, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेपक । आ सील सरोवर झूलती, गुण कह्या शिव ज्ञानी जाणो विशेषक ॥ सती० ॥ ३८ ॥ हिवे पवनजी कहै सुणो मन्त्रवी, हूं कटक जाऊं छूं नारीनै सन्तापक । पाछो जाऊं तो परजा हंसे, मैहला मांहे लाजे म्हारो वापक ॥ मन्त्री कहे छाना जावस्या तेड़ी सेनापति कहे तूं रुख वालक । अमे जात्रा करीनै पाछे आवस्यां, तिहां लग कटक नी तूं रुख वालक ॥ सती० ॥ ३९ ॥ हिवै प्रछन्न पणें दोनूं आविया, आवीनै अंजणां नो उघाड्यो किंवाडक । वंस्तमाला तव आवै रे उतावली, वोलै गाली दोय च्यारक ॥ कहे सूरो पुरुष गयो कटक मै, कौण रे लम्पट आयो इण ठामक । प्रभाते राजा नैं वीनवूं, विदाय देसूं हूं तेहनो गांमक ॥ सती० ॥ ४० ॥ प्रहस्त मन्त्री इम उच्चरे, इहां आयो छे पेहलाद नो नन्दक । अंजणां तणो है शिरधणी, वंस विद्याधर दीपक चन्दक ॥ वस्तमाला आवी ओलख्यो, नयण निहाली तव पांमी आनन्दक । किंवाड खोली नै मांहि लीया, वस्तमाला वधाव्या नरिन्दक ॥ सती० ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

अंजणां सती तिण अवसरे, बेठी सामायक मांहि।
कर्म धर्म सम्भालती, रही धर्म लव लाय ॥
बस्तमाला तिण अवसरे, हाथ जोडि कहे आम।
सतरै सामायक तिहां लगै, राजा करो विश्राम ॥

॥ ढाल ५ ॥ ते०—

हिवै अंजणा सामायक पूरीकरी, हाथ जोड़ि लागी पीऊनैं पायक । पवनजी कहै तूं मोटी सती, लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक ॥ वचन बुरासे मैं दूहवी, तिण वातरो मैं परमारथ लाधक। हाथ जोड़ि करूं बीनती, क्षमज्यो ए सती म्हारो अपराधक ॥ सती० ॥ ४२ ॥ अंजणां पाय नमी कहे, एहवा बोल बोलो कांई स्वांमक। जैहवी पग तणी पानही, तेहवी पुरुष नें असतरी जाणक ॥ हाथ जोडी नै आंण ऊभी रही, मधुर सुहामण बोलती बैणक। कहे प्रापति बिण किम पांमिये जांणे पथर गालीनै कीधो छे मैणक ॥ सती० ॥ ४३ ॥ तीन दिवस रह्या तिहां पंवनजी, तिहां भाव भगति तिण कीधो विशेषक। बाय ढोलै बीझणै करी, षट रस भोजन आपिया अनेकक ॥ हाव भाव करे छे अंजणां, प्रीतम सूं घंणी सांथरी रीतक। पवनजी आनंद पायो घणो,

अंजणां सूं धरी अति घणी प्रीतक ॥ सती० ॥४४॥ हिवै पवनजी पाछां नीकले, अंजणां बोले छे जोडि जी हाथक । आसा रहे कदास म्हारे, लोक मांने किम म्हारी वातक ॥ तिणसूं मात पिताने जणावज्यो, वांहना आभरण आप्पा अहनांणक । संका पडे दिखालज्यो, माता पितादिक सहू लेसी जांणक ॥ सती० ॥ ४५ ॥ हिवे वसन्तमाला ने तडी तिहां, पवनजी देई सनमांणक । मांहरे अंजणां राणी सारां सिरै, प्रतक्ष चिन्तामण ने समांणक ॥ तूं करजे जतन घणा तेहनां, जिम दांतनें जीभ भेला रहे जेहक । जिम अंजणां नै तूं भेली रहे, किम दीजे घणी भोलावणी तेहक ॥ सती० ॥ ४६ ॥ वस्तमाला नें माणक मोतियां, बीजोई धन दियोरे विशेपक । घणी सन्तोपी छे वचन सूं, वस्तमाला हुई हरप विशेपक ॥ प्रहस्त मन्त्री ने इम कहे, जतन कीज्यो कुमारजी ना तेहक । कुशले क्षेमे वेगा पधारज्यो, में वाट जोवां जांणे उमट्यो मेहक ॥ सती० ॥ ४७ ॥ सीप देवे अंजणां चालतां, रण मांहे आवे घणां पुरुष दुष्टक । सो पुरुष आवे छे रुण रा, तेहने आगल रखे फेरवो पूठक ॥ दुरजन कटक छे रुण नो, लोहनां बांण जांणे अंगारक । तिहां शस्त्रां तणी

रीत राखज्यो, मरण भलो पिण नही भली हारक ॥ सती० ॥ ४८ ॥ हिवे पोल थकीरे पाछी वली, नैणांमें छूटी छै जल तणी धारक । मैं कटुक वचन कह्यो कन्तने, मुंह ढांकी नें रोवै तिण वारक ॥ बस्तमाला आय धीरपे, हिवडा आयो छे सामायक कालक । देव गुरु धर्म हीये धरो, ब्रत पचखाण थे लेवो सम्भालक ॥ सती० ॥४९॥ हिवे अंजणां सती तिण अवसरे, रूडी रीते पाले ब्रत रसालक । कर्म धर्म सम्भालती, सुखे रें गमावे इणविध कालक ॥ ध्यान धरे देव गुरु तणो, संसार नी जांण वै काची जी कायक । बोल सिझाय गुणे थोकडा, इण पर अंजणांरा रात दिन जायक ॥ सती० ॥ ५० ॥ हिवे उदर आधान जांणी करी, अंजणां मन मांहे हरष अपारक । धन खरचे करे धूपटा, लोकीक दान देवे सुभ कारक ॥ भावना भावें ऊलट मने, पात्र सुपात्र देवै मुगतनै हेतक । उछरंग मनमांहे अति घणी, दान देती न गिणे खेत कुखेतक ॥ सती० ॥ ५१ ॥ हिवे केतुमती राणी राजा भणी बीनवे, सांभलो विनती म्हारी आपक । अंजणां करे धन उडावणां, इण सु धुर लगे पवन ने न कीधो मिलापक ॥ तोहीं मनं मांहे मान राखे घणो, कटक जातां पडी एहनी

मांमक। आप कहो तो हूं एहने, बरजवा काजे जाऊं, तिण ठामक॥ सती०॥ ५२॥ राजा पिण दीधींछे आगन्या, हिवै केतुमती चाली मोटे मण्डानक। साथे सहेल्यां लीधी घणी, मन मान घणी बहु इणरे आंणक॥ आगे वधाउडांनै मेलिया, अञ्जणा सुणनै हरषत थायक। भाव भगत करी घणी, सांहमी आइनै भेटिया सासू रा पायक॥ सती०॥ ५३॥ आदर सनमान दे अंजणा, सासूने ले गई निज घर माहिक। आसण देवे रे बैसवा, हाथ जोडि लगी वेसणै मुख आयक॥ कहै मनुष्य निज करि मोने लेखवो, म्हारा मनोरथ पूरिया आजक। माईतां रे विना इम कुण करै, माहरी सासरे पिहरे वांधो छै लाजक॥ सती०॥ ५४॥ हिवै वहूना चैन देखि करि, केतुमती राणी धार्‌यो मन धेपक। वहू थाहरा अंगना एहवा, चिन्ह क्यूं दीसै विशेपक॥ तूं मोटारे कुल तणी ऊपनी, वंश विद्याधर दोनुं पक्ष सारक। तूं साचा मुझनें आखर कहे, उदर आधांन के उदर विकारक॥ सती०॥ ५५॥ अंजणा मनी तिण अवसरे, आभरण अनांण आय मूप्या देखायक। कटक थी कुमर पाछा वली, विरहणी जाणिनें आविया ताहिक॥ तीन दिवस रह्या घर मांहिं,

छानै आया नै छानै गया तासक। आभरण अैनाण इहां मैलने, हिवै हुवो छै माय मुझ सातमो मासक ॥ सती० ॥ ५६ ॥ बहूना वचन कांने सुण्या, केतुमती राणी बोले छे एहक । पूरवै अलग तोनै परहरी, मुझ पुत्र नै तुझथी किसो सनेहक । आज लगे अंलखावणी, तूं आभरण चोरी नै निरमल थायक। बिणठो रे दूध कांजी थकी, हिवै सासरा थी तूं परी पीहर जायक ॥ सती० ॥ ५७ ॥ सासूरा बचन काने सुंण्यां, अंजणां रे मन ऊपनो दोहक। पुत्र तुमारो पाछो बलै, तिहा लगे मुझनै राखो घर मांहिक ॥ सासरामैं सासूजी तुम तणी, कहो तो अैंठ खाईनै काढू दिन रातक। चरण कमल सूं गिर रही, हूं कलंक लेई किम पीहर जायक ॥ सती० ॥ ५८ ॥ केतुमती रांणी क्रोध चढी पग करी क्रोधसूं ठेलियो सीसक। अंग मरोडी ऊभी थई, धड हड धूणीनै अति घणी रीसक। अलगी रहै मुझ आंखथी, जिहां लग म्हारा नगर नी सीमक। जिहां लग अंजणां इहां रहै, तिहां लगे मुझने अन्न पांणी तणो नेमक॥ सती० ॥ ५९ ॥ वस्तमाला ने तेडी करी, बन्धण बांधने टेरी छै तेहक। तें चोरयां आभरण म्हारा पुत्रना, चोर देखाल के छेदसूं देहक।

तेरे घडी रे टेरी रही, बाजै छे तरजणा रोवती तेहक। वस्तमाला इम मुख भणै, चोर तो पवन जी साह तो तेहक ॥ सती० ॥ ६० ॥ हिवै कालो रे रथ आणावियो, कालाई तुरंग जोतरचा तेहक। काला ही वस्त्र पहराविया, काली ही झूसरी दीधी छै तेहक। काली हो मस्तक राखडी, अंजणां वस्त्रमाला वैसाणवी ताहिक ॥ सती० ॥ ६१ ॥ अंजणां चाली पीहर भणी, दुख घणो धरती अति मन मांहिक। हिवै चालियो रथ उतावलो, आयो छे बाप तणी भूम तेहक ॥ दूर थकी मैहल देखिया, सारथी रथ पाछो वाल्यो तेहक। जुहार करे अंजणां भणी, सारथी चित्त मांहे चिन्तवे आमक ॥ दुष्ट अकारज मैं कीयो, मैं वन मांहे अंजणां मेली इण ठांमक। ॥ सती० ॥ ६२ ॥ हिवे सांझ पडी दिन आथम्यो, रयण विहाणी घोर अन्धारक। हाथो हाथ सूझे नहीं, इण वेला मुझने कुंण आधारक ॥ नाम जपूं जगदीसनो, इण विध काढे दुख भरी रातक। सुध समायक उच्चरे, एतले सूरज ऊग्यो प्रभातक ॥ सती० ॥ ६३ ॥ हिवे अंजणां कहे सुणो सुन्दरी, म्हारा मनमें अति घणी दुखक। मोने कूडो रे कलंक चढावियो, हिवे नातने केम दिखालसूं

मूखक ॥ माता मोसूं मन किम मेलसी, किम करूं भाई भोजाया सूं बातक । जिहां लग स्वामी आवै नही, तिहां लगे किम काढूं दिन रातक । सती० ॥ ॥ ६४ ॥ वस्तमाला वलती कहै, जिहां लग निरमल ऊजला आपक । तिहां लग सहुं मै सुहामणी, हरषथी बोला वश्यै तुम तणो बापक ॥ माता मनोरथ पूरसी भाई भोजाई सहू मिलसी आयक । जिहां लग स्वामी आवे नही, बैठो तिहां लगे पीहर हो आपक ॥ सती० ॥ ६५ ॥ हिवे नगर सेरीये सञ्चरी घूंघट काढी नें नींची जोयक। हंस तणीं गत चालती नगरना लोक जोवै सहु कोयक ॥ सजन विछोहो ए कामणी, नाथ बिहूणी ए दीसै छे नारक । पिछाड़ी से प्रजा मिली घणी, इण पर पोहुंती छे बाप दुवारक ॥ सती० ॥ ६६ ॥ पोले ऊभी राखी पोलियै, मालुम कीधी रायने जायक । दोनु हाथ जोडी नीची नमी, अंजणा बाहिर ऊभीछे आयक ॥ राय सांभल हरषित हुवो, नगर सिणगार नै करो विख्यातक । सनमुख मोकलो पालखी, आघो तेडावो राज पहलाद नी साथक ॥ सती० ॥ ६७ ॥ कानमें छांनै सेवग कहे, अंजणा सासरे जे हुवो तेहक । तिण बात कही सर्व मांडने, राय सांभल

दुख व्यापियो देहक ॥ मुरछागत आय धरणी ढल्यो, सचेत थयो कीधो क्रोध विशेषक। म्हारा कुलनै रे कलंक लगावियो, आवा मति द्यो म्हारी पोल मझारक ॥ सती० ॥ ६८ ॥ पोलियो पाछो आवी कहै, तुमे ऊपर रूठो छे महिन्द रायक। माहे आवा मत द्यो एहने, बचन सुणीने विलषी जी थायक। माता रा भवनमे संञ्चरी, आघा पाछा पग पडे तिण वारक। मन मांहि दुख धरती थकी, विलषी थई आवी माता ने दुवारक ॥ सती० ॥ ६९ ॥ मान वेगा तिण अवसरे, आय अंजणा दीठी विरंगक। शरीर नो रंग ते फिर गयो, कालारे वस्त्र पहरणा अंगक ॥ आहेनांण दीसे छे वार का, नयन झरे जाणे मोत्या नो वृन्दक। मुख कुमलानो दीसे बुरो जाणे राहु रे अन्तरे दब गयो चन्दक ॥ सती० ॥ ॥ ७० ॥ इम देखी माता धरणी ढली, सचेत थई रोवे बागांजी द्वारक। हूं नेकायन मिरजी रे बांझडी इण कलंक आण्यो म्हारा कुलरे मझारक ॥ हूं सगा सम्बन्धी में किम फिरूं, आणो कटारो ने धूंस म्हारी कूंपक। जिण कूंप अंजणा ऊपनी दीधो छे दुख मैं दुख विशेषक ॥ सती० ॥ ७१ ॥ राणी ने रोवती देखने, दास्यां मिल आई अंजणा

नें पासक । आदर बिहूणी ऊभी किमे, माय छूटी बाई तुम तणी आजक ॥ सुसरा ने सासू लजाविया, लजावियो पीहर माथ मुसालक । कुवंस बिगोवण ऊपनी, हिवै पापणी तूं मूढोमती देखालक ॥ सती० ॥ ७२ ॥ बसतमाला वलती कहे, एहवी अंचुकी थे बोलो ए वायक । पवन कुमार घरे आवसी, पूछ कीजो निरणो मन मांहिक ॥ आ सती तो संजम लै सही, गलै छै गर्भ तणो अति पासक । ए कलंक आयां काया नही धरे, पवनजी आवारी राखे छै आसक ॥ सती० ॥ ७३ ॥ इम कही दोनुं पाछी नीकली, भाई भोजायां तणे घर जायक । बन्धव माहै वैसी रह्या, अञ्जणा आणे ऊभी छै आयक ॥ आई भोजाई मिली तिहां, मन बिना तिण आपीछै बांहक । आंगली लेई दांतां धरी, आवा न दीधी तिणनै घर मांहिक ॥ सती० ॥ ७४ ॥ इम अञ्जणा घर २ हींडी घणी, किण ही न दीधो आवा घर मांहिक । दीन बचन मुख बोलती; नयन झरी मुख रोवती तेहक ॥ भूख तृषा करी आकुली, अन पाणी आपै कुण तांमक । ऊभी छै दीन दयामणी, नाखे निसासा ऊभी तिण ठामक ॥ सती० ॥ ७५ ॥ हिवे मिलने भोजायां ते इम कहे, बाई थे आपरो आपो

संभालक । धुर लगे डाह, जी ज्युं न हुवा, एह करयो किस्युं कर्म चण्डालक। हमै तो अँवला संका करां, आंगणे ऊभा रहो ने लिगारक । अव घर आया राय जाणसी, तुम तणा ने काढ़सी वारक ॥ सती० ॥ ७६ ॥ बन्धव किण ही न पूछियो, सजन किण ही न हो कधो रे सारक । जिण दीठी छै अञ्जणा सती, तिहां प्रोहित प्रधान मूंदिया दुवारक ॥ लोकां रो आसंग किम हुवे, अञ्जणा ने तेडीं राखे घर मांहिक । आदर भाव किहांई नही, एहवा कर्म उदै हुवा आयक ॥ सती० ॥ ७७ ॥ अंजणाने देखे आवती, लोक आडा देवै किँवाडक । घर में कोई आवण देवै नही वचन वोले लोक विविध प्रकारक ॥ अंजणा दुख व्यापे घणा, जाणें के वाही छै खडग योधारक । दुख माहे दुख साले घणो, अमरस घरे मन माहि अपारक ॥ सती० ॥ ७८ ॥ हिवे अंजणा तिसांरे करि टलवले, जल लेई आयो ब्राह्मण तीरक। रायकुमरी पाणी पीयो, शीतल उत्तम निरमल नीरक ॥ वलती अंजणा कहे तहने, नगर माहे तो नही पीऊं पाणक । पोल वाहिर जल पीयस्युं, इहां तो छै म्हारा वापनी आंणक ॥ सती० ॥ ७९ ॥ नगर वाहिर जल वापरे, अंजणा वसन्तमाला ने कहे

छै आमक । गहन बन मोटी उजाड मे, ऊंचा हो पर्व्वत विषमी ठामक ।। जिहां सूर्यं किरण न सञ्चरे, रात दिवस नी खबर न कायक । मानस को मुख नही देखिये, तिण बन मांहे तू मुझने ले जायक ।। सती० ।। ८० ।। हिवे बसन्तमाला तिण अवसरें, अंजणा नो वचन कीधो प्रमाणक । दोनूं जणा तिहांथी नीकली, माहोमाहि बोलती मोहकारी बाणक । ऊझे बन माहे सञ्चरो, जोयबै परबत अति महन्तक । खांधे लेई अंजणा भणी, परबत जायने बैठे एकन्तक ।। सती० ।। ८१ ।। अंजणा बन मांहि सञ्चरी, लोक माहोमाहि बोले छै एमक । अंजणा नै बाहिर काढ़ने, राय कीधो अति भूंड़ो जी कामक । आंण देवाडी रे घरघरे, आवण नही दीधी किण ही घर माहिक । पेटनी पुत्री ने परहरी, राय नी अकल गई ढंकायक ।। सती० ।। ८२ ।। हिवे माता कहे रे दासी भणी, अंजणा ने जोवो रही किण ही ठांमक । दासी कहे बनमें गई, माता मन मांहे चिन्तवे आंमक ।। अंजणां ऊपरे म्हारो, बालपणे हुंतो अति घणो रागक । हिवे बनमांहि सिंहादिक बिनाससी, इम चिन्तवी ने धरै दुख अपारक ।। सती० ।। ८३ ।। नित भोजन जीमती रे बालका, मनमें गम्यां नाहि

च्यारूं ही आहारक । मन मांहे फिकर करे घणो, सेहरमें नही उजाड मे जायक । अन पाणी किंम पांमसी, मैं मनमें जांण्यो घरे कोई राखसी वीरक ॥ इम चिन्तवी ने घणी चिन्ता करे, रोवती आंख्या में सूं काढ़ती नीरक ॥ सती० ॥ ८४ ॥ हिवे वस्तमाला इम ऊचरे, वाई थांरो वाप छे मूढ़ गिवारक । मूरः खणी माता छे तुम तणी, भार्यां में अकल न दीसे लिगारक ॥ अंगणै नही राखी रे इक घडी, कलंक री सुध न पूछी रे कायक । वाई थांहरा पीहरे ऊपरे, कोई आचिंत्यो धसको पडज्यो जायक ॥ सती० ॥ ॥ ८५ ॥ अंजणा कहे सुण सुन्दरी, म्हारो वाप छे चतुर सुजाणक । माता विचक्षण अति घणी, भाई छे म्हारो घणो वुधवांनक ॥ पिण पाप छे पुरवलो म्हारो अति घणा, तूं मन मांहे मूल न रोस न आंणक । आपां पूरव पुन्य कीधा नही ए सहू अपने करमारो दोसक ॥ सती० ॥ ८६ ॥ हिवे राजा राणी कने आडने, वोल मुख थी गहवी वायक । चिन्ता करो किण कारणे वेटी आपां जोगी नही छे तेहक ॥ मोटो अकारज इण कियो, कलंक आणी म्हारा कुल रे मझारक । जो पाछी आंणु घरे अंजणां, तो नगरनी नार हींडे अनाचारक ॥ सती० ॥ ८७ ॥

हिवे गिरवर गुफा सांहमो जोवतां, तिहां दीठो छे मुनिवर ध्यान वर धीरक। निरदोष आचार पालतां, तप जप षप करी सोषस्यां शरीरक॥ अवध ज्ञाने करी आगला, अंजणां जाय भेट्या तसु पायक। अति दुख मांहि आनन्द हुवो, भव२ होज्यो स्वामि तुम तणो सरणंक ॥सती०॥ ८८॥ हिवे हाथ जोड़ि अंजणां कहै पूर्व किसूं कियो कर्म चण्डालक किण कर्मां सेती म्हारे इण भव में आवो अणहूतो आलक॥ सासरां सूं काढी मो भणी, पीहर राखी नही घर मांहिक। आप किरपा करो मों ऊंपरे, सगलोई सम्बन्ध देवो नी सुणायक ॥सती०॥ ॥८९॥ हिवे साधु कहै बाई सांभलो, पाछिय भवरो कहूं विरतन्तक। थांरे शोक हुंती लिखमावती, श्रावक धर्म पालती कर खन्तक॥ सिंहरथ पुत्र थो तेहने, ते चोरि पाड़ोसण नें सूंपियो तेहक। तेरे घड़ी थांरी शोक टलवली दुख घणो धरती मन मांहिक ॥ सती० ॥९०॥ थांहरी शोकरे एक निंहचो हुतो, जो साध होवे तिण नगर मझारक। तो बांदियां पैहला तेहने, अन पाणी नो हुतो परिहारक॥ विलाप कीधो तिण अति घणो, जव तें पुत्र पाछो दीयो सूंपक। अन्तराय पड़ी दरसण तणी,

हको, देखत है निज नैन । अरु सालत ते हृदयन. में, बालक मुखके बैन ॥ १० ॥ रहि न सकत राजा तिहां सालति त्रिय अहि ठाण । करि कन्धे सुत ले चले, चतुर समय को जान ॥११॥ ईक त्रीयके बिरह को, देखत निज नयनाह । अरु सालत है हृदय में, बालक मुख बयनाह ॥ १२ ॥ बहोत भूम अवगाह के, आयो इक वन मज्झ । बहोत नदी बह रालही, तिहां उतरणको नहीं सज्झ ॥ १३ ॥ पार उतारें नीरकूं, पेठो सायर लेन । नदी बुहायो साथनैं, गयो न सम्बल सेन ॥ १४ ॥ कहां चन्दन कहां मलयागिरी, कहां सायर कहां नीर । ज्यूं २ पडे अवस्था, त्युं २ सहे सरीर ॥ १५ ॥

॥ इति श्री चन्दन मलयागिरी बारता तृतीय कलिका सम्पूर्णम् ॥

॥ इक कठिया पटियन पायके, बिलग्यो बांह पसार । राजा चन्दन कुशल स्यूं; करम धर्‍यो ले पार ॥ १ ॥ ता तटि गहे आनन्दपुर, एक नगर बिश्राम । राजा चन्दन पथिक ज्यूं, उतर्‍यो एकण धाम ॥२॥ ता घर घरणी अति निपुण, रसिक छबीलीं बैण । अंग २ जोबन नवल, यक्ख रह्यो है फेल ॥ ३ ॥ चन्दन आवत देखके, ऊठ दियो सनमान । उतरो अपने धाम हुं, हम तुम है पिहचान ॥ ४ ॥

भरि पानी झारी दई, अरु दांतनकी दइ फार । प्रेम निजर निरखत खरी, मुखतें घूंघट काढ ॥५॥ कहो ने अपने हृदयकी, हमकुं खरो बिचार । कहांसे आये हो बहुर, कहां कूं चालनहार ॥ ६ ॥ कहा कहूं तुमसे सुन्दर, ना कछु कहनेकी बात । सुन्दर पूछो क्या कहूं, टूटे तरवर पात ॥ ७ ॥ हमसों भले जो पंखियन, जिसका जंगल बास । इकठै मिलि चूनहि चुगे, पलक न छंडे पास ॥ ८ ॥ हम सु ते वनमृग भले, दिन २ बन बिचरन्त । रात २ मिलि आपनी सुख दुख कथा करन्त ॥ ९ ॥ जैसी हमकूं रात है, तैसाही दिन जाइ । जोगी भोगी कछु नहीं, कर्यो बिजोगी मांइ ॥ १० ॥ जोर नही जगदीस सें, नही करम सों जोर । किसकी जोडी जोरि है, किसकी देत है तोड ॥ ११ ॥ इकसठ रूप बिलोकिकैं, अरु विरही जन जान । सुन्दर मदनातुर भई, बोली तज कुल मान ॥ १२ ॥ तुम परदेशी लोग हो, कैंन किसीके हाथ । जो रहिस्यो तो जनम लग, हम तुम्ह एकी साथ ॥ १३ ॥ चन्दन बोल्यो सुनतही, सुन्दर कौन विचार । हम तुम जुरि है साथ कों, शिर सावत भरतार ॥ १४ ॥ बात ज इह है हालकी, जो तुम्ह जोरो जीव । तो तबही ले आपनो, मारूंगी निज

पीव्र ॥ १५ ॥ त्रिया विसाश न को करो, त्रिया किसीकी नाहि। जिन निज पीउको बोलनो, दीया ज करदम माहि ॥ १६ ॥ बात सुणतही पापकी, थरहर कम्प्यो अंग। बिरत त्रियाकूं पायके, राजा भयो विरंग ॥ १७ ॥ चकिता चोकश बहु भयो, रह्यो ज चन्दन रैण । पोह निकस्यो उह धामतें, राम २ मुख वैण ॥ १८ ॥ चल्यो चन्दन गहियज्यो, भजि साहस वर वीर। मानहुं दुख निवाणतें, निकस्यो बाहन तीर ॥ १९ ॥ दृष्टि परी चम्पकपुरी, दीसण लागो भांण। प्रिय संगम सूचक भये, सुख सम्पत्तिके सांण ॥ २० ॥ चन्दन बन्दे सुकुन सब, निहुर २ चिहुं ओर । करि प्रणाम कीवी विनती, विनती कर दोउ जोड ॥२१॥ जंगल जीव तुम जीवहुं, तुम जग मेटण दुक्ख। प्राणप्रियासुं जब मिले, तो हू पाउंगा लक्ख ॥ २२ ॥ उपवन कों सनमुख भयो, आवत देख नरिन्द । बोल २ आशीस दें, मार २ खग वृन्द ॥ २३ ॥ सूतो सरवर पाल परि, चन्द ज जपत अनन्त। आय रह्यो है निकट ही, आपद ही को अन्त ॥ २४ ॥ अब उह नयरी उह सम, कौन भयो विरतन्त। राजा मूवो अपुत्रियो, दिव्यन पञ्च भमन्त ॥ २५ ॥ आये सरवर पालि परि, जिहां

सूतो थो राउ। पञ्च दिव्य थिर लगनमें, परगट भयो सुभाउ ॥ २६ ॥ गय गाज्यो हय हणहण्यो, गज शिर ढाल्यो नीर। वीझै चामर बालका, धऱ्यो छत्र शिर धीर ॥ २७॥ जाग्यो चन्दन चमकिके, प्रगट्यो पुन्य पंडूर। कुञ्जर कुम्भन ज्यो चढ्यो, ज्यूं उदयाचल सूर ॥ २८ ॥ बाजा बाजे हरषके, गाजे गुहिरंग भीर। मानहु भाद्व मेहेकी, घटा उमड़ी भर नीर ॥ २९ ॥ वेदीयनं अरु बन्दियन, रच २ गुण अनहद्द। उंची कर भुजा दाहणी, उच्चरे जय जय शब्द ॥ ३० ॥ गृह २ द्वारें गली २, सजन बसन धर प्रीत। गावन लागी कुलवधू, मिलि मंगलके गीत ॥ ३१ ॥ गावत तान अनूप सुर, बजावंत वंशी वीण। नृत्यत अभिनव नायका, घूमत रस लय-लीण ॥ ३२ ॥ चन्दन परजा परिवार सों, वीझत चिहुं दिशि चोंर। देखत शोभा नगरकी, पैठो गढ़की ओर ॥ ३३ ॥ भरि २ मुगता आंजुरी, हँसि २ उमंग उछाह। विविध बधायो नागरी, चन्दन बसुधानाह ॥ ३४ ॥ चन्दन बैठो तखति सिर, कीनो परजा जुहार। वागा सबही पहरायके, करे सबही मनुहार ॥ ३५ ॥ चन्दनकी दुहाइ फिरी, देश २ पुर गाम। बागों फेरयो सुजसको, प्रगट्यो चिहुं चक नाम ॥ ३६ ॥

॥ इति श्री चन्दन [illegible] ना चतुर्थ कलिका सम्पूर्णम् ॥

॥ हिवै राजा बिन मलयागिरी, बिन सायर बिन नीर । सब दुखसुख याद हुए, चढी सवाई पीर ॥ ३७ ॥ तियजन परजन सुभट जन, कविजन कीने खवास । चन्दन चितहुं न को चढ्यो: ज्युं कंबरीया पास ॥ ३८ ॥

॥ गाथा ॥

जइ विसमुद्दो पुण्णो, अमुल्ल मुक्ताफलेहि रयणेहिं ।
तह विह वइ उच्चाई, निय सुयचंदस्स दंसणउ ॥३९॥

*　　　　*

॥ भइया कुंन गत होयगी, उहकी सिरजन-हार । एक धर्‍यो उह तीरपै, एक धर्‍यो उह पार ॥ ४० ॥ मुई न जाऊ जीवती, छोडी थी निरधार । उह अबला सुख दुःखकी, कोन करेगा सार ॥ ४१ ॥ प्रिया पियारे बोल विन, खरे दुखारे प्रान । चन्दन अंग न लागि है, खान पान पर ध्यान ॥ ४२ ॥ न जानूं कोंन दिस रहत है, कोंन भांत किहि रूप । कहा करूं जावूं किहां, युं चिन्तै निसि-दिन भूप ॥ ४३ ॥

॥ गाथा ॥

महुर सरेण झूरंतो, विलवंतो भमरओ. भमंतोयं ।
कडुअं तुंबी कुसुमं, आसाइंतो सरै नलिनं ॥ ४४ ॥

जह बब्बीहो मेहं, चकोर दिट्ठी सुनिम्मलं चंदं।
हंसो जंह जलभरियं, समरइ माणसर रम्मं ॥ ४५ ॥
सल्लरि वणं गयंदो, जह झायइ अहय नम्मयाकूलं।
अइ दीणो झीणंगो, परवस पडिओ मणुस्साणं ॥४६॥
तह चंदणोवि राया, पइ मासं पक्खगंच पयदीहं।
पय रत्तिं संभारइ, जीविय इह पिया पुत्तो ॥ ४७ ॥

॥ अब सुत्त सायर नीरकूं, कोन भयो बिरतन्त। सुणियो लोगो कान दै, बिछुरचा जोरण संध ॥ ४८ ॥ आयो इक सारथी उहां, देंखे चित अनुकूल। दुहुं तट दुइ बालक तिहां, बांधे तरुके मूल ॥ ४९ ॥ सूरत मूरत नान्हड़ी, कनकबरण मृदुगांत। सुंदर बालक दरसकी, भई सबनकुं जात ॥ ५० ॥ मुह कुमलाना पुहुप ज्युं, अँखियां टपकत नीर। अपनी मइया कूं झुरत है, ज्युं पञ्जर पंखी कीर ॥ ५१ ॥ पाउनकों पनही नही, नहीं गातकूं चीर। नाच्यो नाटक दैव उहां, मानहु आप शरीर ॥५२॥ निरखी बालक दीनता, सारथि देखि भयो दीन। अपने सुत करि कटि ग्रहे, सम्पत ज्युं जल मीन ॥ ५३ ॥ जब आये यौवन समै, जुगल किशोर कुमार। डारन लागे सुभट ज्युं, तब पाँचू हथियार ॥ ५४ ॥ जिह के पुरुषाकारसों, होत आतंक सहेच। जानन लागे

कुमर सब, छल करिणके परपेच ॥ ५५ ॥ विनय-वन्त विद्यानिपुण, रूपवन्त गुणगेह । रहत परसपर नेह भरि, एक जीव दोय देह ॥ ५६ ॥ एक समै मिलि चिन्तव्यो, अब हँसि मांगो सीख । अपनो खाट्यो खाइये, लहिये करम परीख ॥ ५७ ॥ पर घर आसा कीजिये, सुइये टांग पसार । भइया इण विधि पुरुषको, रहत न पुरुषाकार ॥ ५८ ॥ एक सींह सा पुरस इयां, दुई एक सुभाव । आस पराई ना करे, जो शिर तूटी जाय ॥ ५९ ॥ छाने क्युंई ना रहै, राज वीर्य रवि तेज । निकसे सारथवाह स्यों, पाइ विद्या हित हेज ॥ ६० ॥ चलि आये चम्पक पुरी, जिहां पिताको राज । कोटवाल की चाकरी, रहे समूल सकाज ॥ ६१ ॥ सोदागर भी सहलमें, चलि आयो उह नयर । संग लागी मलया-गिरी, रहत महलमें घेर ॥ ६२ ॥ भांत भांत कीनी नई, ले सोदागर पेस । राजा सु सोदागर जाय मिल्यो, बसिवो है उह देस ॥ ६३ ॥ देस देस परदेश की, जो रसाल अनूप । मांगि मांगि कछु मांगि है, अंति ही रिझाणो भूप ॥ ६४ ॥ सोदागर सलाम करि, इक दोई तिहि बार । साहिब हमकूं दीजिये, अपने चौकीदार ॥ ६५ ॥ कोटवाल कूं हुकम कर, तबही

चन्दन राय । कोटवाल ले संग दियें, सायर नीर बुलाय ॥ ६६ ॥ कमर कटारी बाँकड़ी, अरु बाँकी तरवार । आये सायर नीर दोउ, कहत हुस्यार हुस्यार ॥ ६७ ॥ जागत पोहरो देत है, कांधे लेय समसेर । साथी सायर नीरकों, उठ बोले तहि वेर ॥ ६८ ॥ छिटक रह्यो है चन्द्रमा, हसज रही है रात । आज कहो हो सुभटवर, कछुक नवीली बात ॥ ६९ ॥ बोले सायर नीर दोउ, वातां जगमें दोय । निज पर बीती सब कहे, अपनी बीती कहे सोय ॥७०॥ पर वीती तो बोहत ज कहे, कहत जिहां तिहां लोक । हमकों कहियो मांडके, अपनी वीती होय ॥ ७१ ॥ कहां कहां वे बन्धवा, ज्युं बिती बात यहां, मा सोदागर ले गयो, बाप बह्यो नदी मांह ॥ ७२ ॥ सूती थी मलयागिरी, सुन जागी उठि धाय । अंगज सायर नीरके, लागे उरसों आय ॥ ७३ ॥ दाझी विरह संजोगकी, दुखनी सांस बिहाल । संगम जल सीतल भयो, मिले सु बिछुरे बाल ॥ ७४ ॥ अंगज बोले मातकूं, सोय रहो अज रात । ले सोदागर रायपै, न्याय करें सम्प्रात ॥७५॥ प्रात भई अब साथमें, चल्यो इहै जप जाप । मात बिछोही बालकाँ, मुख देख्यांही को पाप ॥ ७६ ॥

सोदागर मनमें डरयो, जो अब जीवत माल। नीकै तो अब बँधाइये, पाणी पहली पाल ॥७७॥ निकस्यो पोह पीली भई, उर न धरयो विचार। संग लेइ मलयागिरी, पुंहच्यो राजदुवार ॥७८॥ खबर जाय दीवान दी, लै कियौ राय हजूर। बूझ्यो सौदागर कहां, आयौ उगतै सूर ॥७९॥ साहिब एक अनुप है, अद्भूत वस्तु विसेस। लै आगे मलयागिरी, धरिये है हम पेस ॥८०॥ न जाणूं इह पद्मणी, न जाणूं रति रम्भ। मैं तो पाई बन मझे, ते उठी न जानूं सम्भ ॥८१॥ नयन नयनके जुरत ही, त्रिया पिछाणी राय। पुलकृन लागे अंग सब, हरख्योदध न समाय ॥८२॥ राणी ले महल धरी, चन्दन वसुधानाथ। कहि है कर्म-विचारणा, दिय कपोलन हाथ ॥८३॥ येतें सायर नीर भी, कारण विरह जञ्जाल। आये चन्दन रायपै, लागे करण पुकार ॥८४॥ महाराज चिरंजीव तुम्ह, पूरण त्रिभुवन आस। मात हमारी दिराइये, सोदागरके पास ॥८५॥ अंगज वाणी सुनतही, प्रगट्यो नवल सनेह। चन्दन द्दग शीतल भई, भई प्रफुल्लितं देह ॥८६॥ राय लाय करि अंगुरी, प्रेम रंग जिय मान। जिहां थी जननी जनमकी, खड़े

कीये तिहां आन ॥ ८७ ॥ जाय मिलें सुत मातको, बीर बरसके अन्त । राय पियारे सुत लखे, लख्यो न राम महन्त ॥ ८८ ॥ राजा भांगो भेद सब, कह्यो सरूप अमूल । राणी तिहां घुंघट कीयो, मुर मुख के अनुकूल ॥ ८९ ॥ कुमर पिता पायन परे, नार लख्यो ठरि संग । अंसुअनकी धारा छुटी, मातु न्हवरावै अंग ॥ ९० ॥ दुंख गयो मनमें सुख भयो, भागे विरह विजोगं । राजा राणी सब मिल्या, देखो करम संजोग ॥ ९१ ॥ राजा बोल्यो क्या करां, सोदागरकू दण्ड । छुट है गुनहा रायके, हम तुम प्रीत अखंड ॥ ९२ ॥ सोदागर छोड्यो तबै; राय सुनावत बैन । सपरिवार सुख भोगवै, जाण इन्द्रमइ अैन ॥ ९३ ॥ जाइ लई निज फुनि पुरी, मिले सजन सब लोग । भद्रसेन कहै पुन्यतैं, भये हैं वंछित भोग ॥ ९४ ॥

॥ इति श्री चन्दन मलयागिरी वारता सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ श्री सती सुभद्रा चौपाई ॥

॥ दोहा ॥



व दायक लायक सदा, कञ्चन वरण शरीर। सासण नायक शिवगति, नमो नमो महावीर ॥ १ ॥ कामगवी कामति दिये, प्रौढ पयोहर च्यार।
तिम जिन वाणी रस लिये, धर्म है चार प्रकार ॥ २ ॥
दान शील तप भावना, चारू मुक्ति निदान।
पिण इहां अधिक बखाणिये, शील रत्न परधान ॥ ३ ॥
शील सिरोमणि मुकुट सम, पाल्यो निरतिचार।
वरणूं शीलोपदेश थी, सुभद्रा अधिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ पहिली ॥

॥ झूठ न हाले एहनी ॥

चम्पा नगरी अति भली जी कांई, सेठ बसे सुभद्र। मोरा लाल। तस पुत्री हैं दीपती जी कांई, सुभद्रा परिणामे भद्र ॥ १ मो० ॥ धन्न० २ ॥ सुभद्रा सती, सांचो तेहनो शील। मो०। शीले तूठें देवता जी कांई, निरमल गंग सलील ॥ २ मो० ॥ ध० ॥ सुन्दरी बेटी साहनी जी कांई, परणी मिथ्याती गेह। मो०। सासू फासू तेह थी जी कांई, घरमें धेख

करेह ॥ ३ ॥ मो० ध० ॥ बसणो मिथ्याती घरें जी कांई, पाले वो आचार । मो० । पय कांजी रखवालवी जी कांई, एह खरो सुविचार ॥ ४ ॥ मो० ध० ॥ नरभव लाधो नीठसूं जी कांई, पाम्यो आरज देश । मो० । उत्तम कुल इन्द्रि पांचे जी कांई, लम्बो आयु विसेस ॥ ५ ॥ मो० ध० ॥ देह नीरोगी संगत साधनी जी कांई, सुणवो सरधा थाय । मो० । उद्यम कर करणी करें जी कांई, जनम मरण मिट जाय ॥ ६ ॥ मो० ध० ॥ ए जोगवाई पामने जी कांई, अैहली गमे * गमार । मो० । पिछतावो करसे पछें जी कांई, जीतें हार जुवार ॥ ७ ॥ मो० ध० ॥ देव नमे अरिहन्त जी कांई, गुरुते सूधा साध । मो० । धर्म केवली भाखियो जी कांई, रत्नत्रयी ए लाध ॥ ८ ॥ मो० ध० ॥ प्रातें पडिकमणो करे जी कांई, देव ध्यान दो पेहर । मो० । सन्ध्या सामायिक ऊचरे जी कांई, सासू भणी लागे जेहर ॥ ९ ॥ मो० ध० ॥

॥ दोहा ॥

सासू केहरे सुलखणी, ए केहवो पाखण्ड ।
जेन फेन जाणां नहीं, विष्णु सिरे छे मंन ॥ १ ॥

---

* येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥ १ ॥

गोपीवल्लभ गरुड़ध्वज, हरि मुरारी देव।
कुञ्ज भवन राधा रमण, तेहनी कर तुं सेव ॥ २ ॥
इण घर ए सोभे नहीं, नित तूं जपे जिनेश।
इण घर त्रिहुं रिख्या करें, ब्रम्हा विष्णु महेश ॥ ३ ॥
परहो करी पारस प्रभु, भज ले जग करतार।
कुञ्ज विहारी सूं विहर, गिरिधारी उर धार ॥ ४ ॥
एह वचन श्रवणे सुणी, सती विचक्षे चित्त।
ए धर्म किहां इण जीवने, जिम निरधनने वित्त ॥५॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ वासड़लीनी ॥

सुण सासड़ली जैन तणी, जग कोण करे छे होड़। पीये छासड़ली दधि तणो, सुं जाणे स्वाद निचोड़॥ जिणघर धेनु दूजे सुरभी, तिहां आणे मोली कुण करभी, किहां घृत रसने किहां चिरभी ॥ १ ॥ सु०॥ किहां आंधो किहां चसमीनो, किहां कम्बल किहां पशमीनो, किहां गयवरो किहां ससलीनो ॥ २ ॥ सु० ॥ किहां सरब बने किहां मेरु, किहां साहू ने वलि किहां हेरु, किहां रयणी किहां उजवेरु ॥ ३ ॥ सु० ॥ जे जगमे वस्तु श्री कारे छे, ते हितकर प्राणी धारे छे, सहु जैन धरमने लारे छे ॥ ४ ॥ ॥ सु० ॥ जे जिन नाम बिसारे छे, ते अहिल

जमारो हारे छे, गोबरमें केसर डारे छे ॥ ५ ॥सु०॥ जिहां दोष अढारे रहित देवा, नित करिये गुरु निगरन्थ सेवा, जिहां जीव दया धर्म नित मेवा ॥ ६ ॥ सु० ॥ केई अन्य देव रमणी रसिया, केई ममता भाव रहै फसिया, घणो राग द्वेषमें ऊलसिया ॥ ७ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

बचन सुणी बहुयर तणा, सासू बोले आम ।
रे कुल हीन कुलखणी, इंम कां विदै निकाम ॥ १ ॥
आदि युगादि विष्णु मत, जैन तो थयो अबार ।
पालो दोड़े प्रोढ़ पिण, पूगे नहीं असवार ॥ २ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

सुण बहुबड़ली लाजलड़ी, तुझ माहि न दीसे ज्ञान रती । रही लाड़लड़ी नान्ह पणाथी, नाम धरावै सती । तू जैन जती गुरु मानै छे, ते रहता मैले बानै छे, ते पाप करे बहु छाने छे ॥ १ ॥ सु० ॥ ते भूखने दोषें मूंडा छे, ते भिक्षा भोगी भूंडा छे, रहै करमें झोली कुंडा छे ॥ २ ॥ सु० ॥ ते भिक्षा लै घर अण-जाणी, नित पीता धोवण ने पाणी, तूं श्राविका हुई सुंण बाणी ॥ ३ ॥ सु० ॥ तूं धरम कारण मुहं बांधे छे, पिण नयनां नयन तो सांधे छे, तूं न चिन्ती परणे

काँधे छे ॥ ४ ॥ सु० ॥ तूं दीसे बड़का बोली छे, वलि कुसंगतनी टोली छे, तूं निज स्वारथ ने भोली छे ॥ ५ ॥ सु० ॥ नणद कहे सुण भोजाइं, किण कुगुरें तुझने भरमाई । तूं भाई केड़े आपद आई ॥ ६ ॥ सु० ॥ खाली फोकट फुटराई, तुझ मातायें जणी स्यूं खाई । फिर परणीसे दूजी भाई ॥ ७ ॥ ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

सती कहे सुभगे सुणो, जैन समो नही धर्म ।
जिन पाल्यां शिव सुख लहै, तूटे आठूं कर्म ॥ १ ॥
चन्दन छांड़े मक्षिका, रासभ तजे निवात ।
दिनयर ने घूहड़ तजें, तिणनो स्युं विगड़ात ॥ २ ॥
सुणी वचन सासू कहें, बेटा ने समझाय ।
वहुयर घर जोगी नहीं, धरम जुदो न खटाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

ऐसी कलहै गारी, निज बेटाने वचन कही भरमावै । वसी मुझसूं न्यारी, ए हमना घर मांही नाहि खटावे० ॥ वहू नही छै ए बाधो, इण तुझ सिरिषो तो वर लाधो, हीराने गल पत्थर बांध्यो ॥ ऐ० ॥ १ ॥ ए सात कहै सतरे जोड़ै, ए क्रोध करे कहियै थोड़े । घड़े झूठा ने कोठा फोड़े ॥ ऐ०

॥ २ ॥ ए निज इच्छायें रहै सूती, वलि बात बणावे छे दूंती। मोड़े कड़का है निपूती ॥ अं० ॥ ३ ॥ तूं बलभ मुझ डीकरड़ो, बहु मिली तुझ ठीकरड़ो। किहां इक्षुनें किहां फरड़ो ॥ अं० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मातानो भंभेरियो, कन्त लड़ै दिन रात।
सती बिचारै चित्तमें, जेही मात तेही जात ॥ १ ॥
पर्व दिवस पोषध दिनें, सासू भलावै काम।
सती सील सन्तोष में, नाणे कर्म विराम ॥ २ ॥
निर्धन कवियण नंगाधिपति, कठिन चन्द्रमा वंक।
हिम हिमाल खारो उदधि, सतियें चढ़ै कलंक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ सूरसागर वहंद भरयो—ए देशी ॥

एक दिवस एकल पणों हो कि (भवियण चम्पा नगर मझार०) अंभिग्रह धारी आविया। भ०। हो के जीत्या काम विकार ॥ १ ॥ (धन धन ते मुनि होके भवियण जिण कलपी अणगार०) तप जप कर काया कसी होके। भ०। निर्मम निर अहंकार, सील सरोवर झूलता होके। भ०। षटकाया आधार, ॥ २ ॥ ध० ॥ क्रोध मान माया नही होके। भ०। लोभपणो नही रञ्च, साकर

टाकर सम गिणे होके । भ० । तजि या सब परपञ्च ॥ ३ ॥ ध० ॥ रिषे आचारें ऊजला होके । भ० । पुष्कर पत्र अलेप, निरञ्जण मुनि संख जु होके । भ० । चेतन जेम अछेप ॥ ४ ॥ ध० ॥ मध्य दिहाड़े बिहरता होके ।भ०। क्षुधा टालण दोष, लाधो भाड़ो दै देहने होके । भ० । अणलाधे सन्तोष ॥ ५ ॥ध०॥ सिंघादिक सूं टले नही होके । भ० । डरपे नही जी दयाल, खूचें कांटो कांकरो होके । भ० । न करे सार सम्भाल ॥ ६ ॥ ध० ॥ भय टाल्या भव भव तणा होके । भ० । मेरु सिरसा धीर, पड्यो आंखमें तिणखलो होके । भ० । नयन झरे तिण नीर ॥७॥ध०॥ ऊंच नीच मझिम कुलें होके । भ० । भमता घर घर बार, सुभद्रा घर आविया होके । भ० । सासू द्वेष अपार ॥ ८ ॥ ध० ॥ सती देख साधु भणी होके । भ० । कहे धन दिहाडो आज, मुंह मांग्या पासा ढल्या होके । भ० । सिध्या बंछित काज ॥ ९ ॥ध०॥ असनादिक आदर पणे होके । भ० । विहरावे सुध भाव, सासू छल ताके खड़ी होके ।भ०। जिम मूसक ने बिलाव ॥ १० ॥ध०॥ वैहरंता निजरे पड्या होके ॥ भ० ॥ मुनी दृष्टी नो सल्ल, मुनी दुख पावै अति घणो होके । भ० । ए काढूं ग्रही पल्ल ॥ ११ ॥

॥ ध० ॥ ज्यो सुख पावै सञ्जमी होके । भ० । थाय सञ्जमनी बृद्धि । धर्म साहज करतां थकां होके । भ० । अष्ट सिद्धि नव रिद्धि ॥ १२ ॥ धं० ॥

॥ दोहा ॥

नीकी तरे कीकी ग्रही, फेरी जिह्वा फेर ।
टीकी मुनि मस्तक लगी, सती न दीठी तेह ॥ १ ॥
साधु परीसां हटावियो, सती न दोसण कोय ।
सासू कहै री सांपणी, ए वहुयर तूं जोय ॥ २ ॥
साधु चल्यो बाजार में, लोकां दीठी तेह ।
साधू सिर बिंदी चढ़ी, बड़ी हसावण एह ॥ ३ ॥
सुभद्रा बाजै सती, तिण कीधा ए काम ।
नरने नवी खबरां पड़ै, नारी तणा* विराम ॥ ४ ॥
मोर मधुरता सब तजे, गिले सपूंछो सांप ।
कामबसे आतुर थई, न गिणै पुण्य ने पाप ॥ ५ ॥
सुणी वचन लोकां तणां, सासू सुसरो कन्त ।
सती ने निभ्रंछी घणी, टीकीने विरतन्त ॥ ६ ॥
राज लगे चावी हसे, ए वातां सुण नार ।
थोडा सुखने कारणें, गई जमारो हार ॥ ७ ॥

---

* अश्वप्लुतं माधवगर्जनं च, स्त्रीणां चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम् ।
अवर्षणं चाप्यतिवर्षणं च देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ॥ १ ॥

निसरो म्हारा घर थकी, बहुदिन राख्यो मान।
बालूं सोनो सोलमो, जे तोड़न लागो कान ॥ ८ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

॥ सो भवियां एहनी ॥

सती मन चिन्ते इण विरतन्ते, छठ एक ने आज। जोलुं कलंक न ऊतरे, लोक न पतरे, खाऊँ न जितरे नाज ॥ जिनधर्म हयाई, एह बुराई, कर आई संसार ॥ १ ॥ (सेवो मन सुद्धे पाप निरुद्धे सील बडो आधार०) मैं पाप न कीधो, दोस न दीधो, लीधो नही कांई चोरी। जे सील सहाई, देव बड़ाई, हरसै अघाई मोरी ॥ इम दिन त्रिँहु वीता, थई सचिन्ता, प्रगट्यो देव उदार ॥ २ ॥ से० ॥ तूं क्यूं सिदावे, सुर गुण गावे, सव बस आवे तोरे। चम्पा कर दट्टण, तुझ दुख कट्टण, रोस चढ्यो मन मोरे ॥ तब सती कहे भाई, एह बुराई; दुखदाई छै अपार ॥ ३ ॥ से० ॥ तुम्ह एह भलाई, तेज बताई, निज घर जाइ बैठो। जिनधर्म बड़ाई, सील दुहाई, चित लाई कर सेठो ॥ एह सुण बातां, देव तो जातां, जडिया पञ्च दुवार ॥ ४ ॥ से० ॥ चम्पा नो स्वामी, अति बहु नामी, अरिमर्दन भूपाल। नृप हुकम ज चले, द्वारज खुले, रञ्च न हले साल ॥ तब नृप कहै पायक,

सेनानायक, ल्यावो गज श्रीकार ॥ ५ ॥ से० ॥ करिवर सूंसावै, नव मण खावै, दांत वजावै भीड़ी । सरीर हलावै, चूल्यो सरकावै, तेहनैं आवै कीड़ी ॥ ए काम न सरियो, नृप मन डरियो, बोलावैं सिरदार ॥ ६ ॥ से० ॥ मानी मछराला, हाथ बड़ाला, दुंदाला वर बीर । चढ़ २ कर घोड़े, मूंछ मरोड़े, तोड़े तरकस तीर ॥ एहवा पाखंरिया, रोसें भरिया, पिण इण आगै सब छार ॥ ७ ॥ से० ॥ बोले बहुनट्टा, चारण भट्टा, पेट पलट्टा सूर । मोडी ए सांकल, जिम अहि कंकल, संकट कर द्यो दूर ॥ सबही मनमोसै, होठ मसोसै, जीसै नावे तार ॥ ८ ॥ से० ॥ नृप कहै मद छण्डी, देवत चण्डी, मेडी करिये मेव । एहवे आकासे, देव प्रकाशे, खुल जासे तत सेव ॥ कर काचो तंतनं, चालनी बन्धन, कूप थकी ग्रहै वार ॥ ९ ॥ से० ॥

॥ दोहा ॥

छांटे सीलवती तिणे, जलकर च्यारूं द्वार ।
तो उघड़े चम्पापुरी, तुम हम एह करार ॥ १ ॥
सुण वाणी हरष्यो नृपति, मुझ राणी सब कोय ।
सील सयाणी छे सही, करूं पारष्या जोय ॥ २ ॥
कूवैं काठे राणियै, चालणी बांध्यो तार ।
उपाडतां उछल पडी, चालनी जल कूप मझार ॥ ३ ॥

राणी मुरझाणी थई, बांणी वदै न कोय।
स्याणी आणी नें करो, कहाणी जुगो जुग होय॥४॥
पुरमें पड़ह वजाड़ियो, साहमी नावे नारि।
जिम कौरव पाछा धस्या, देखी देव मुरारि॥ ५॥
फिरतो २ आवियो, सूभद्रा घर वार।
पग लागी सासू तणे, सती ज थई तिवार॥ ६॥

॥ ढाल ७ वीं॥

॥ एक दिवस लंकापति —एहनी॥

॥ सासू कहे सुणरी वहू, सील वस्यो तुझ तन बहु तन बहु०। आगे लजाया हम भणीए ॥ १॥ तेहनी विकथा नही मिटी, अब तूं दरबारे चढ़ी चा०। केहो सुजस तूं खांटसे ए॥ २॥ राणी जोर न चालियो, नृप सिर नीचो घालियो, घा०। तुझ मन हूंस अब घणी ए ॥ ३॥ नव कुली नाग न फुण करै, गोह जिको लुकती फिरै, लु०। काकिड़ो पचरंग करै ए ॥ ४॥ जा अब गरज किसी सरे, पांणी तुझसूं न नीसरे नी०। लोक हसाई छे घणी ए॥ ५॥ सासूं वयण काने सुणी, वहू ने समता अति घणी, अ०। ततषिण तिण पड़हो ठव्यो ए॥ ६॥ कूवा काठें आवही, सहू मन अचिरज पावही पा०। अरिमर्दन राजा नम्यो ए॥ ७॥ कहै नृप

इणहीज टांकड़ै, जिन धर्म नी खबरां पड़े ख०। सतीं एक नगरी सहू ए ॥ ८ ॥ काचें तांतण चालणी, ओरासी कर चालणी चा० । जाणे वज्र तणी कड़ी ए ॥ ९ ॥ सील सहाई देवता, ऊभा तेह अछेवता अ० । काम करण उंतावला ए ॥ १० ॥ चालणी एते जल भर्‍यो, सतीये कर ऊंचो कर्‍यो ऊं० । जल काढ्यो कूवा थकी ए ॥ ११ ॥ सहू कोई धन २ ऊचरे, सती तिहांथी सञ्चरे, सं० । डावी पोलि जिहां जड़ी ए ॥ १२ ॥ जल कर लेई छिड़कियो, ततषिण चूल्यो खड़कियो ख० । पहिली पोल तो ऊघड़ीयो ॥ १३ ॥ इम दूजी तीजी पोली, जल छाटीनें इण खोलियो इ० चोथो पोलि आवी चली ए ॥ १४॥ हुई आकासे सुरवाणी, ए रहवा द्यो सहनाणी स० । अन्य सत्ती ए ऊघाड़से ए ॥ १५ ॥ सहू कोई मन अचिरज थया, सतीतणा गुण सन्थुया सं० । धन २ सील सिरोमणी ए ॥१६॥ पुष्पवृष्टि तब सुर करें, प्रगट्या तिणही ज अवसरे अ० । सुभद्रा जस ऊचरे ए ॥ १७ ॥ कहे देवत राजा भणी, सती सिदावी अति घणी अ० । तीन दिवस नो पारणो ए ॥ १८ ॥ सीले संकट सब टल्या, सासू सुसरो तव वल्या तें०। कन्त नम्यो कर जोड़नै ए ॥ १९ ॥ ए अवगुण सब

म्हारा, खमिये सील वसुन्धरा, व० । राजादिक सगला कहै ए ॥ २० ॥ मुझनें राग न रीस जी, ग्रह्यो संयम सु जगीसे जी, सु० । कर्म निकाचित तोड़िया ए ॥ २१ ॥ सीले संकट सहु टलें अणचिन्ता सज्जन मिले, स० । भयकारी भाजे सहु ए ॥ २२ ॥ डायण सायण भूतड़ा, जक्ष राक्षस वै किन्नरा, कि० । पाय नमी सेवा करै ए ॥ २३ ॥ धुर सती ब्राह्मी सुन्दरी, ऋषभदेव नी डीकरी, डी० । चन्दनबाला चिरञ्जीवो ए ॥ २४ ॥ राजमती मोटी सती, द्रुपदसुता मृगावती, मृ० ॥ चेडानी साते सती ए ॥ २५ ॥ कोसल्या सुलसावती, सीता कीर्ति निरमली, नि० । अगनि शशि जल कर दीयो ए ॥ २६ ॥ पाण्डव मातानें सिवा सती, गुण गावो सुख लहिवा सु० । मूल मन्त्र ए धर्मनो ए ॥ २७ ॥

॥ कलश ॥

॥ गुण गणालंकृत हरण दुरमति, श्री आचार्य सामजी ॥ तस चरण सेवा ताराचन्दजी, करी अति अभिराम जी ॥ अनोपचन्द जी तास सिष्य, आदरी आनन्द धरी । तस चरण सेवक विनयचन्दे, ढाल सातूं ए करी ॥ १ ॥

॥ इति श्री सती सुभद्रा चौपाई सम्पूर्णम ॥

॥ अथ धर्मचरित्र लिख्यते ॥



॥ दोहा ॥



रु सम जग दाता नही, गुरु बिन ज्ञान न होय। ऋद्धि सिद्धि बंछित फले, पाप मंक सबि धोय ॥ १ ॥ अन्धा मारग चालतां, सूझे नही गमार। आसा रख गुरु नामकी, उतर जाय भवपार ॥ २ ॥ गुरुवाणी विसतार है, किहां लगि करूं बखाण। मन वच काया बस करो, चेतन होय कल्याण ॥ ३ ॥ दान सील तप भावना, इह च्यारों जग सार। इह कथा धर्म रायकी, सुणिओ हृदय विचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ जग जीवन जग वाल हो—एदेशी० ॥

चम्पा नगर सुहामणी, किहां लगो कहूं विस्तार ॥लाल रे॥१॥ चम्पा० ॥ तिहां एक मुनिवर आविओ अवधिज्ञान भरपूर। लालरे०। एकाकी विचरे सदा तप ज़पमें जिम सूर ॥ लालरे० ॥२॥ चम्पा० ॥ नाम विमलेस्वर चारणो, आयो नगर मझार, लालरे०। मास खमणके पारणै, लेय विसुद्ध आहार ॥ लालरे०

॥३॥ चं० ॥ इम मुनि विचरे गोचरी, सुद्ध आहारने काज । लालरे० । श्रावक कहे सुणो साधुजी, कृपा करो ऋषिराज ॥ लालरे० ॥४॥ चं० ॥ चौमासो प्रभु कीजिये, जीव दया मन लाय । लालरे० । हित जाण मुनीस्वर रह्या, चेतन सिव सुख पाय ॥ लालरे० ॥ ५ ॥ चं० ॥

॥ दोहा ॥

चौमासो मुनिवर रह्या, श्रावक सुणै बखान ।
धरम देसना दे मुनी, धर्म तैं उपजै ज्ञान ॥ ६ ॥
धरम समो नहि वालहो, धरम समो नहि मीत ।
धरम करो रे प्राणियां, कटे मरण की भीत ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ धर्म दया करो प्राणियां० ॥

उत्तम नर भव पाय रे, दान सील तप भावना । कीजे मन वच काय रे ॥ ८ ॥ ध०॥ काम क्रोध मद परिहरी, समता मनमें आणी रे । इह संसार में कोई न आपणो, इह तूं चित्तमें जाणी रे ॥ ९ ॥ ध० ॥ मात पिता सुत कामणी, स्वारथ के सब कोई रे । जा दिन आयु पूरी भई, राख न सके कोई रे ॥१०॥ध०॥ इन्द्र नरिन्द्र सबी गया, जे उपजे ते जासी रे । पाप करे नरकादिक पामें, धर्म करै शिवबासी रे ॥ ११ ॥ ध० ॥

देव धरम गुरु सेवियै, जातैं होय छुटकारो रे। मन वच कायं थिर के राखो, चेतन होये भव पारो रे ॥१२॥ध०॥

॥ दोहा ॥

देइ देसना मुनि रह्यो, चतुर सुण्यो दे कांन।
श्रावक एक कुष्टी हतो, ते बोल्यो धरि ध्यान ॥१३॥
कर जोरे श्रावक कहे, अरज सुणो मुनिराज।
कुष्टी अंग मेरो भयो, ताको करो उपाय ॥ १४ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ कपूर हुई अति०—ए देशी ॥

बलतो तब मुनिवर कहे रे, सुण श्रावक मन लाय। कर्म जो कोई करे रे, भोगे बिन किम जाय रे ॥ प्राणी कर्म करे ते होय० ॥ जोर न चाले कोय रे ॥ प्राणी कर्म करे ते होय० ॥ १५ ॥ सुख दुख सब कर्म करे रे। हियड़े बिमासी जोय रे ॥ प्रा० ॥१६॥ श्रावक बे कर जोरिने रे, भाषे वचन रसाल। श्री गुरु किरपा करो रे, तो जावै सकल जञ्जाल रे ॥ प्रा० १७ ॥ तुम जग जीवन जग धणी रे, तुम जंग तारणहार। मेहर करो सेवक भणी रे, तो नही लागै बार रे ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ कुष्टी कहे प्रभु सांभलो रे, श्री गुरु गरीब निवाज। चेतन को सुख ऊपजे रे, दया करो ऋषिराज रे ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

मुनि कहै सुण प्राणिया, इक उपाय छे एह ।
तीन वस्तु जिण जीतियां, तासूं मिलाओ देह ॥२०॥
कञ्चन काया होयगी, दुख जावै सब दूर ।
मन वच काया बस करै, सुख उपजे भर पूर ॥२१॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ चौपाई ॥

तब इह कुष्ट तुम्हारो जाय, कीजे श्रावक एक उपाय । तब श्रावक बन्दन कर चले, मारग जातां लोग सूं मिले ॥ २२ ॥ जासूं मिले सो दूर दूर करे, तब श्रावक पाछे को फिरे । फिर पाछे आयो मुनिवर कने, जासो मिलूं सो दूर कहे मने ॥ २३ ॥ मुनिवर कहे ऐसो मत करे, तीन वस्तु जीतो सोहें परे । उणसे जाय मिलो तुम आज, सफल होय सब तुमरो काज ॥ २४ ॥ तब कुष्टी पूछे सीस नवाय, कोण देस उनको मुनिराय । प्रभु नाम प्रकासो उनपै चलों, गुरु प्रताप जायकै मिलों ॥ २५ ॥ मुनिवर बोले वचन हुलास, कासी देस है तिनको बास । धरमराय नाम मन भाव, मन वच काया बस कियो राव ॥२६॥

॥ दोहा ॥

सुणत बैण श्रावक उठे, मिटगो अंग कलेस ।
दिनअष्ट मारग चले, पहुंचे कासी देस ॥ २७ ॥

देख्यो नगर सोहावणो, काहु न पूछी बात ।
चहुँटा बिच जब आविओ, सूर्य अस्त भई रात ॥२८॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ सुण बहनी पीउड़ो परदेशी—एदेशी ॥

॥ आयो नगर बिच श्रावक कोढ़ी, खाली हाट सोयो ओढ़ी० ॥ थाको मगको निद्रा आई, सोय रहे हित लाई रे ॥ २९ आयो० ॥ मोहनिद्रामें जो नर सोवे, धर्म तणा फल खोवे रे । सोय रहे तैं मूल गमावै, जागै शिव सुख पावै रे । ॥ ३० आयो० ॥ इहां श्रावक सूतो निचन्तो, धर्म सदा गुणवन्त रे । धर्मराय दुकान में रहतो, उदर पीर दुख सहतो रे ॥ ३१ ॥ आयो० ॥ पहर एक रैण जब आई, धर्म दुकान बढ़ाई रे । आय निज मन्दिरमें सूतो, दीपक जिहां नवि हुतो रे ॥ ३२ आ० ॥ पीर घणी सूतो धर्म ज्ञानी, स्त्री भेद न जाणी रे । आगे अचरिज होय घनेरो, चेतन चेत सबेरो रे ॥ ३३ आ० ॥

॥ दोहा ॥

रूपवती तिय रायकी, आन पुरुष सूं प्यार ।
अर्ध रात जब बीतिगी, तब आयो ते जार ॥ ३४ ॥
रङ्गरस कहे बातडी, सुण प्यारी हित जाण ।
गृह मेरे इक काज है, तुरत देउ रति दान ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ वञ्छित पूरण आदि नमो—एदेशी ॥

प्रेम बिलूंधी जे नारी, निपट कपट ते बिभचारी । थिर नही चित अपणो राखैं, मिथ्या वचन सदा भाखैं ॥ ३६ ॥ जार लेई मन्दिर चाली, निज प्रीतम सूतो नहि भाली । पलंग विछाई मदमाती, इक पायो पड़ियो पिय छाती ॥ ३७ ॥ वांकी सेज भई ज्यारे, पत्थर तीन धरया त्यांरे । ते ऊपर बैठ रमे नारी, पर पुरुष सूं करे यारी ॥ ३८ ॥ कोई नही जाणे मन जाने, पिण पाप रहे नही छाने । पिय हिय ऊपर रख पाया, आन पुरुष सूं करे माया ॥ ३९ ॥ धरमराय सूतो देखे, सुभ ध्यान में मौन भये पेखे । इक तो पीर उदर भारी, दूजे हिय बिच पलिंगका डारी ॥ ४० ॥ निज पतनी कुकर्म करे, धर्म देखे मनमां न धरे । एतो कर्म किया पावे, विन भोगे कहो किम जावे ॥ ४१ ॥ कोऊको दोस नही दीजै, झूठी माया कोण पतीजै । तन धन जोबन नहीं अपना, च्यार दिनाको सब सुपना ॥ ४२ ॥ मात पिता भगनी भाई, बेटा बेटी कुटुम्ब लुगाई । स्वारथके इह सब नाता, प्रान चले कोई संग नही जाता ॥ ४३ ॥ धरम देख पाये शिक्षा, प्रात होय

तब लेवूं दिक्षा । मन मनमें भाव धरम लावे, उदर पीर दुख्ख दूर पलावे ॥ ४४ ॥ सुख्ख उपज़ो दुख सब भागा, निश्चै दिक्षा मन लागा । मन बच काया बस कीन्हा, चेतन मनसूं दिक्षा लीन्हा ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

धरमराय सुभ ध्यानमें, बहु विध करे विचार ।
प्रात होय दिक्षा लेउं, ब्रत पालूं निरधार ॥ ४६ ॥
मन वच काया बस कियो, धरमराय सुभ ध्यान ।
आगे अचरज अवर है, श्रोता सुणो दै कान ॥४७॥

॥ सोरठा ॥

पहर पाछली रात, जार उठे तिंय पासतें ।
रस क्रीडा कर जात, पहुंचे मन्दिर आपणे ॥ ४८ ॥
कामणी रही ज्रो सोय, पिय हिय ऊपर पलंग धर ।
प्रात समै जब होय, ऊठी त्रिया सुख सेजतें ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

नयन खोल देखे त्रिया, पिय उर पलंगको पाय ।
थरहर कम्पित भई अति, मुख तैं बोल न जाय ॥५०॥

॥ ढाल ॥

॥ ललनाकी—एदेशी ॥

धरम रहे सुभ ध्यानमें नहि बोले मुख बात, ललना, मन्दिर ते आये बारणे, कुथी लगाड्यो गात ।

ललना ॥ ५१ ॥ ध० ॥ धरमराय कहे तेह सूं, किम तुम लागे अंग । ललना । बात कहो हिय खोलके, बाधो तुम तन रंग । ललना ॥ ५२ ॥ ध० ॥ कुष्टी कहे प्रभु सांभलो, तुम सम जग नहीं कोय । ललना । कुष्ट रोग गयो दूर म्हारो, तुम तन जल सूं धोय । ललना ॥ ५३ ॥ ध० ॥ धन २ साधु मुनिस्वरा, जिण दीन्हो उपदेश । ललना । आज मिली सयल बातड़ी, मेट्यो अंग कलेश । ललना । ॥ ५४ ॥ ध० ॥ धरम कहे मुनि किहां वसै, दरसन कीजे जाय । ललना । श्रावक कहे चम्पा नगरि, तिहां आये मुनि राय । ललना ॥ ५५ ॥ ध० ॥ सर्व बात कहि खोलके, मुनि राख्यो मोहि लाज । ललना । चेतनको सुख ऊपजे, महर कियो जिनराज । ललना ॥ ५६ ॥ ध० ॥

॥ दोहा ॥

सब विरतन्त बणिक कह्यो, धर्म सुण्यो चित लाय ।
धरम कथा इह जाणिये, चेतन कहे बणाय ॥ ५७ ॥
धर्मराय जब भाषिया, सुण श्रावक मोहि बात ।
दिक्षा लेउं मुनिवर कने, हूं चालों तुम साथ ॥ ५८ ॥

॥ ढाल ॥

॥ चौपाई ॥

कहे श्रावक चलो तुम आज, सुफल होय सब

तुमरो काज । चम्पा नगर चले तब रायं, अष्ट दिनां में पंहुचे आय ॥ ५९ ॥ जिहां बैठे मुनि अणगार, जिन दीठैं सुख ऊपजे सार, जिनकलपी जिनवर सम जाण, धरम देख बांध्यो सुभ ग्यान ॥ ६० ॥ हाथ जोड़ कहे धर्मराय, चारित्र पालों मन वच काय । कृपा करो सेवक पर आज, दिक्षा दीजै श्रीमुनिराज ॥ ६१ ॥ भावचारित्री मुनिवर जान, दिक्षा दीऊं मन सुध आन । चारित्र ले धर्म किरिया करे, तप जप संजम व्रत आदरे ॥ ६२ ॥ थिति पूरो तब अनशण कियो, मुकत पन्थको मारग लियो । ऐसो समझ पालो जिन धर्म, कहे चेतन लागे नहि कर्म ॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥

धर्म दया नहि छाडिये, धर्म सदा सुख देत ।
धरम करे जे प्राणियां, ते पावैं शिव खेत ॥ ६४ ॥
कथा सरस धर्मरायकी, पूरी भयी सुजान ।
पढे सुणे जे भावसूं, ताको होय कल्याण ॥ ६५ ॥
सम्बत् अठारे तीसमें, आसो सुदि सुभ जाण ।
ग्यारस दिन रविवारको, चेतन कियो बखाण ॥ ६६ ॥
नगर अहमदाबाद में, कथा कियो सुख सार ।
जे नर चित दे सांभले, ते उतरे भव पार ॥ ६७ ॥

हाथ जोड़ शिर नायके, चेतन लागे पाय।
मूल चूक जो बातमें, ते क्षमजो मुनिराय ॥ ६८ ॥

॥ इति श्रीधर्मचरित्र सम्पूर्णम् ॥

—:०:—

॥ दोहा ॥

चंदनकी चुटकी भली, गाड़ा भला न काठ।
पण्डित तो एकी भला, मूरख भला न साठ ॥ १ ॥
नीच तणो नवि कीजै संग, जो कीजे तो होवै भंग।
हाथ अंगारो गहै जु कोय, कै दाझै कै कालो होय
॥ १ ॥ जो हीयो होय हाथ, तो कुसंगी केता मिलै।
चन्दण भुजंगा साथ, दाग न लागै किसनिया ॥ २ ॥
गोला गंडक गुलांम, बुचकारयां माथै चडै। ए कूट्यां
आवै कांम, नरमी भली न नाथिया ॥ ३ ॥ इति ॥



॥ अथ डोकरीनी बात ॥





एक दिन राजा भोजने माघ पण्डित, संहेर से कोस दोय माथे एक बाग छे, तठे गया । जाय नें पाछा आपरे सहेर आवता था; सो आवतां मारग भूला । तरे राजा भोज कहेवा लागो के, सुणो माघजी ! आपे मारग भूला, तरे माघजी पण्डित कहे, सुणो प्रथवीनाथ ! एक डोकरी गोहुँरो खेत रखवाले छे; सो उणने पूछने ठीक करो ! तरे दोऊ असवार चाल्या, डोकरी कनें आया; आयने बेहू जणां राम राम कीधो । डोकरी कहे, आवो बीरां राम राम । तरे डोकरी बोली, बीरा थे कुण छो ? बाई म्हे तो छां बटाऊ। बटाऊ तो दोय, तिके किसा ? एक तो सूरज, बीजा चंद्रमा । बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां प्राहुणा । प्राहुणा तो दोय, तिका किसा ? एक तो धन, बीजो जोबन; थें किसा प्राहुणा ? बीरा ! सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां राजा । राजा तो दोय तिका किसा ? एक तो चन्द्र राजा, बीजो जम राजा; थे किसा राजा ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां

साधु । साधु तो दोय, तिके किसा ? एक तो सील-वन्त, बीजो संतोषी ; बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां ऊजला । ऊजला तो दोय, तिके किसा ? एक तो साधु, बीजा पाणी ; थे किसा ऊजला ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां परदेशी । परदेशी तो दोय, तिके किसा ? एक तो जीव, बीजो पवन ; थे किसा परदेशी ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां गरीब । गरीब तो दोय, तिके किसा ? एक तो छालीरो जायो, बीजो मंगत जन ; थे किसा गरीब ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां धवला । धवला तो दोय, तिके किसा ? एक तो बलद, बीजो कपास ; थे किसा धवला ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां चतुर । चतुर तो दोय, तिके किसा ? एक तो अन्न, बीजो पाणी ; थे किसा चतुर ? बीरा सांच बोलो थे कुण ? बाई म्हे तो छां हारिया । हारिया तो दोय, तिके किसा ? एक तो बेटी दीधी तिको हारियो, बीजो माथे देणो तिको हारिया । तरे डोकरी कहैवा लागी, तू तो राजा भोज छे, ओ माघ पण्डित छे । इतनी बात पूछने डोकरीने नमस्कार करीने असवार होई ; आपरे सहेर आया ।

॥ इति डोकरीनी बात सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ सारबोल सिज्झाय ॥

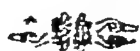
॥ चौपाई ॥



भगवति भारती चरण नमेवी, सदगुरु नाम सदा समरेवी। बोलीस चौपई ऐ आचार, जोई लेजो जाण बिचार ॥१॥ पण्डित ते जे नाणे गर्व, ज्ञानी ते जे जाणे सर्व। तपसी ते जे न धरे क्रोध, करम आठ जीते ते जोध ॥ २ ॥ उत्तम ते जे बोलें न्याय, धर्म ते जे मनने भाय। ठाकुर ते जे पाले बाच, सदगुरु ते जे भाषे साच ॥ ३ ॥ गिरुओ ते जे गुणे आगलो, स्त्री परिहार करे ते भलो। मेलो ते जे निन्दा करे, पापी ते जे हिंस्या आचरे ॥ ४ ॥ माता ते जे जिनवंर तणी, कीरति ते जे बीजे सुणी। लब्धि ते जे गौतम गणधार, बुद्धि अधिकी अभय कुमार ॥५॥ श्रावक ते जे लह नव तत्त्व ; कायर ते जे मूके सत्व। मन्त्र-खरो ते श्री नवकार, देव खरो ते मुगतिदातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीरथंकर तणी, मति ते जे उपजे आपणी। समकित ते जे साचूं गमें, मिथ्याति ते जे भूलो भमें ॥ ७ ॥ मोटो ते जे जाणे परपीड़, धन-वन्त, ते जे भांजे भीड़। मनवशि आणे ते बलवन्त,

आलस थी अधिको पुन्यवन्त ॥ ८ ॥ कामी नर ते कहिए अन्ध, मोह जाल ते मोटी फन्द । दारिद्री ते जे धर्म विहीण, दुरगति सारू ले ते दीण ॥ ९ ॥ आज्ञा ते जिहां बोली दया, मुनिवर ते जे पाले क्रिया । सन्तोखी ते जे सुखिया थया, दुखिया ते जे लोभे ग्रह्या ॥ १० ॥ नारी ते जे होवे सती, दरशन ते ओघो मुहपती । राग द्वेष टाले ते यत्ती, सुधर्म जाणे ते जिनमती ॥ ११ ॥ काया ते जे शील पवित्र, मायारहित होए ते मित्र । बड़पिण पाले ते जे पुत्र, धरमहाणि पाड़े ते सत्रु ॥ १२ ॥ बयरागी ते जे विरमे राग, तारू ते भव तरे अथाग । रौरव नरक तणो ए माग, छाग हणी जे मण्डे जाग ॥ १३ ॥ देहे मांही सारी जीह, धरम थाय ते लेखे दीह । रस माही उपसम रस लीह, थूलभद्र मुनिमाहे सिंह ॥ १४ ॥ साचूं जपे ते जिन नुं नाम, योगी ते जे जीतै काम । न्यायवन्त कहिये ते राम, जिनधरमी बसे जे ते गाम ॥ १५ ॥ एह बोल बोल्या मैं खरा, सार न थी एह थी ऊपरा । कहे पण्डित लखमी कल्लोल, धरम रंग मन धरजो चोल ॥ १६ ॥

॥ इति श्री सारबोल सिज्झाय सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ सोले सती सिज्झाय ॥



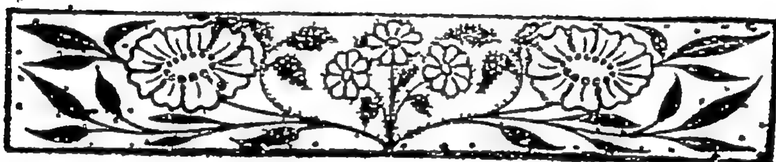


श्री आदिनाथ आदे जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए। परभात उठीने मंगलिक कामे, सोल सती नाम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राहमी भरततणी बेनड़ी ए। घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोले सती माहे जे वड़ीए ॥२॥ बाहुबल भगनी सतीय शीरोमणि, सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ए। अंक सरूपी त्रिभुवन माहे, जेह अनोपम गुणजुता ए ॥३॥ चन्दनबाला बालपना थी, सीलवती सुद्ध श्राविका ए। उड़दबे बाकुले वीर प्रतिलाभी, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥४॥ उग्रसेन धुवा धारणि नन्दनी, राजमती नेम बल्लभा ए। योवन वेसे कामनी जीतो सञ्जम लेई दुरलभा ए ॥५॥ पांच भरतारी पाण्डव नारी, द्रुपदतनया वखाणिये ए। एकसो आठ चीर पूराणा, सीलमहिमा तसु जाणि ए ॥६॥ दशरथ नृप नी नारी निरूपम, कौशल्या कुल चन्द्रिका ए। सील सलूणी राम जनेता, पुन्य तणी परनालिका ए ॥७॥

कोसम्बी ठामे सतानिक नाम, राज करे रंग राजियो ए । तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भवन जस गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा सांची सील नी राची वाची, नहि विषया रस ए । मुखड़ो जोतां पाप पलाये, नाम लेतां मन उल्हसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंसी तेहनी काम नी, जनकसुता सीता सती ए । जग सहु जाणे धीज करन्ता, अनल शीतल अयो शील थी ए ॥ १० ॥ कांचे तांतण चालणी बांधी, कुवा थकी जल काढियो ए । कलंक उतारवा सती सुभद्रा, चम्पा दुवार उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुर नर वन्दित शील अखण्डित, शिवा शिवपद गामनी ए । जेहने नामे निरमल थइये, बलिहारी तेह नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनापुरमें पाण्डु रायनी, कुन्ता नामे कामनी ए । पाण्डव माता दसय दसारणी, बेहिन पतिव्रता पदमिणी ए ॥ १३ ॥ सीलवती नामे सीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने बन्दिये ए । नाम जपतां पाप पुलाए, दरशन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निरखंता नगरी नल नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहनी ए । संकट पड़ियां सीलज राख्यो, त्रिभुवन कीरत तेहनी ए ॥ १५ ॥ अंग अजिता ने जग जन पूजिता, पुष्पचूलाने प्रभावती ए । वीर

विख्याता कामित दाता, सोलमि सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी सास्त्र छे साखी, उदय रतन भाषे मुदा ए । प्रऊठीने जे नर भणसे, ते लहिसे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥

॥ इति श्री सोले सती सिज्झाय सम्पूर्णम् ॥



॥ अंथ राजमती सिज्झाय ॥

॥ दोहा ॥



सण नायक समरीये, मन बंछित सुख-दाय । राजुल इकबीसी कहूं, सुणज्यो चित्त लगाय ॥ १ ॥ चित चलियो रहनेमनो, देखी राजुल रूप । दृष्टान्त देने राखीयो, पड़तो भव जल कूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

राजमती इम विनवै हो, मुनिवर मन चलीयो तू घेर ० । थोडा सुख ने कारणे हो । मु० । क्युं हारे नर भव फेर ॥ १ ॥ सुन तुं साधजी हो ० । मुनिवर मन चलियो तूं घेर । मु० । पञ्च महाव्रत आदर्‍या हो । मु० । मेरु जितरो भार, वमीयारी बंछा करो हो । मु० । धृग थांरो अवतार ॥ सु० २ ॥ मु० चि० ॥ बैरागे मन वालने हो । मु० । लीधो सञ्जम भार, अब कायर होवे किसुं हो । मु० । देख पराइ नार ॥ सु० ॥ ३ ॥ मु० चि० ॥ राज पन्थने छोडने हो । मु० । ऊजड मारग मत जाय । इमरत भोजन चाखनै हो । मु० । अब कूकस किम खाय ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ मु० चि० ॥ गज असवारी छोडने हो । मु० । खर ऊपर मत बसै, सुरग तणा सुख पायने हो । । मु० । पातालां मत पैस ॥ सु० ॥ ५ ॥ चन्दन बाल कोयला करे हो । मु० । आंबो काट बबूल, कुँण बांधै घर आगणे हो । मु० । ज्यूं कांई थारो सूल ॥ सु० ॥ ६ ॥ घर घर फिरसी गोचरी हो, । मु० । देखीस सुन्दर नार, हड नामा व्रषनी परै हो । मु० । डिगतां न लागसी बार ॥ सु० ॥ ७ ॥ वमियानै बांछो मती हो । मु० । गन्धन कुलमति होय,

रतन चिन्तामण पायने हो । मु० । कीच माहे मत खोय ॥ सु० ॥ ८ ॥ कुल मोटो आपां तणो हो । मु० । तिण साहमो तूं जोय, काम भोगने तूं बाञ्छसी हो । मु० । भलो न केहसी कोय ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ गोवाल भण्डारी सारिखो हो । मु० । हमाल उठायो भार, बोझ मजूरी अरथियो हो । मु० । नही माल सिरदार ॥ सु० ॥ १० ॥ घणो रूप नारी तणो, । मु० । बस्त्र गहणा सार, देख देखने सिदावसी हो । मु० । जासी ज़मारो हार ॥ सु० । ११ ॥ मनगमता इन्द्री तणा हो । मु० । सुख बिलसे घर माह । त्या अस्त्री न्यारा रहे हो । मु० । त्यागी कह्या जिनराय ॥ सु० ॥ १२ ॥ आवे वेश्रमण देवता हो । मु० । नल कुबेरनी जात्र, सुपना मे बाञ्छा नही हो । मु० । थारी कितनीक बात ॥ सु० १३ ॥ जिहां तिहां ई बिचरसि हो । मु० । नगरने बलिग्राम, अस्त्री देखि चित्त डोलसी हो । मु० । नारी नरक नी ठाम ॥ सु० ॥ १४ ॥ सहू सरीखा घर नहीं हो । मु० । नही सरीखी नार, केई भूण्डा ने केई भला हो ।मु०। चलियो जाय संसार ॥ सु० ॥ १५ ॥ ब्राह्मी सुन्दरी बेहेनडी हो । मु० । सुणिया मैं सिरदार, करणी करने गया हो । मु० । नाम लिया निसतार ॥ सु० ॥

१६ ॥ तीर्थंकर बावीसमां हो । मु० । जगमे मोटा सोय, बालपणे तज नीसऱ्या हो । मु० । बन्धव सांहर्मा जोय ॥सु०॥ १७ ॥ नारी दुखनी बेलडी हो । मु० । रमणी दुखनी खांण । इम जांणीने चेतज्यो हो । मु० । कहियो हमारो मांन ॥ सु० ॥ १८ ॥ बचन सुणी राजल तणा हो । मु० । हीयो ठिकांणे आय । धन धन तू मोटी सती हो । मु० । गई मुगत मझार ॥ सु० ॥ १९ ॥ ए दोनुं उत्तम हुवा हो । मु० । पाम्या केवलज्ञान, ए दोनुं मुगते गयां हो । मु० । कीजै तिणांरो ध्यान ॥ सु० ॥ २० ॥ सम्बत् अठारे बावने हो । मु० । श्रावण मास मझार । चोथमल कहै पिपाडमेंहो ।मु०। सुदी पञ्चमी मंगल वीर ॥ सु० ॥ २१ ॥ मु० चि० ॥

॥ इति रहनेम राजमती सिज्भाय सम्पूर्णम् ॥



॥ रात्रिभोजन सिज्भाय ॥





न्य सञ्जोगे मानव भव लाधो, साधो आतम काज । विषया रस विष सरिखो जाणो, इम भाषे जिन राज रे ॥ प्राणी रात्री भोजन वारो० ॥ १ ॥ आगम बाणी सांभलि करिने. समकित गुण संभारो रे । प्रा० । दान मनानं

ने आहुति भोजन, एटलो रात्रि न कीजै। ए सवि करबी सूरज नी साक्षे, नीति वचन समझीजे रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ पशु पंखी उत्तम पिण पाले, रात्री भोजन टाले। तुमे तो मानव नाम धरावो, किम सन्तोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ अभक्ष बावीस ने रयणी भोजन, दोष कह्या परधान। तिण कारण रात्रे मत जीमो, जो होय हिंयड़े सांन रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ जूं कीड़ी ने करोलियो माखी, भोजन मां जे आवे। कोढ़ जलोदर वमन करावे, एहवा रोग उपजावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ छन्नु भव जीव हिंसा करतां, पातिक जेह उपायो। तेहवो एक तलाव फोडवामां, दूषण सुगुरु बतायो रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकड़ोत्तर भव लगे सरोवर फोड़ाव्या, एक दव दीधे पाप। अठड़ोत्तर भव लगे दव दीधां, एक कुबिणजनो व्यापार रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक सौ चमालीस भव लगे कीधां, कुबिणज ना व्यापार। कूड़ो एक कलंक देयन्ता, तेहवो पाप नो पोख रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एकसो एकावन भव लगे दीधा, कूड़ा कलंक अपार। एक बार सील खण्डयां तेहवो, अनरथ नो बिसतार रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ एकसो नवांणूं भव लगे खण्डया, सील विषय सम्बन्ध तेहवो एक रात्रि भोजन मां, कर्म निकाचित बन्ध

रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रि भोजन ना दोष घणा छे, कहतां नावे पार । केवली कहेतां पार न आवे, पूरब कोड़ि मझार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ एहवो जाणी ने उत्तम प्राणी, नित चोविहार करीजे, मासे मासे पासे क्षमणनो, लाभ इसी बिध लीजे रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि लावन्य नी एहि सिखामणी, सांभलजो नर नारी । शिव गति तणां सुख विलसो भविका, मुक्ति तणा अधिकारी ॥ प्रा० ॥ १३ ॥

॥ इति रात्रि भोजन सिज्झाय ॥



॥ तमाखू नी सिज्झाय ॥





तम सेती बीनवे, प्रमदा गुणनी जाण । मेरे लाल० । मन मोहन इम कन्त ने, सांभल चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ १ ॥ कन्त तमाखू परिहरो० । छोडो एहनो संग । मे० । पञ्च माहे जिम जस लहो, डीले वाधे वान ॥ मे० ॥ २ ॥ क० ॥ तमाखू ते जाणिए, खुरसाणी नी जात । मे० । गंध घणो छे आकरो, सूधी कहे जन बात ॥ मे० ॥ ३ ॥ क० ॥ दूध दहि ते पीजिये, वलि पीजिए सक्कर खांड

। मे० । घृत पीवे तनु उल्हसे, तमाखूं परी छांड ॥ मे० ॥४॥ क० ॥ मोटा सेती बीनवे, मनमां आवे लाज । मे० । दिन पण ऐले नीगमे, बिणसाडे निज काज ॥मे०॥५॥क०॥ होठ लिहाला सारिखा, सांस गन्धाए तेण । मे० । दांत ते दीसे सांमला, हियडो दाझे तेण ॥ मे० ॥ ६ ॥ क० ॥ योंठ पराई आचरे, बिटले निज जात १ मे० । बिसन निवार्या नवी रहे, न गणे नात पर नात ॥ मे० ॥७॥ क० ॥ एके फूके जेतला, बाऊ काय हणाय १ मे० । खस खस काया करे, तो जम्बूद्वीप न माय ॥ मे० ॥ ८ ॥ क० ॥ गुडाखू करिने जे पिए, ते नर मूढ़ गमार । मे० । जल नाखे ते जिहां कने, माषी नो संहार ॥ मे० ॥ ९ ॥ क० ॥ चोमासा मां कुंथुआ, ते किम सुद्ध ज थाय । मे० । बड़ बीज सम काया करे, जम्बूद्वीप न माय ॥ मे० ॥ १० ॥ क० ॥ थूकसूं मूर्छम ऊपजे, नर पञ्चेन्द्री जीव । मे० । पेय असंख्याता कह्या, श्री महावीर जगदीश ॥ मे० ॥११॥ क० ॥ जलमां जीव कह्या घणा, संख असंख अनंत । मे० । नील फूल तिहां ऊपजे, अग्नि प्रजाले जन्तु ॥ मे० ॥१२॥ क० ॥ तमाखू पीता थकां, ए छह काय हणाय । मे० । जोति घटे नयणां तणी, सासे देह गन्धाय ॥ मे० ॥ १३ ॥ क० ॥ घडी,

दोय जे व्रत करो, सेवो श्रीभगवान । मे० । दया धरम जाणी करो, सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ १४ ॥ क० ॥ चतुर विचारी समझिए, धरिए धरि सुभ ध्यान । मे० । आणन्द मुनि इम ऊचरे, ते लहे कोड़ कल्याण ॥ मे० ॥ १५ ॥ क० ॥

॥ इति तमाखू नी सिज्झाय ॥



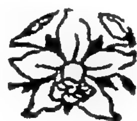
॥ अथ आउषा नी सिज्झाय ।

॥ थे थे मुनिवर वेहरण पांगुरया रे—एदेशी ॥

॥ आउषो तूटो सांधो को नही रे, विण कारण न करो जीव प्रमाद रे । जरा आया नें सरणो को नहीं रे, हिंसा छांड़िने दया पाल रे ॥ आ० ॥ १ ॥ कुटम्ब कबीलो नारी कारणें रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे । चोर तणी परे छण्डी झूरसी रे, सहसी इह लोक परलोक सन्ताप रे ॥ आ० ॥२॥ ऊँचा चिणाया मंदिर मालिया रे, दे दे धरती ऊण्डी नींव रे । इक दिन अणजाण्यो ऊठी चल्यो रे, सुख दुख सहसी आपणो जीव रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ चक्रवरत हरि बलरामो केसवो रे, जोयजो बलि इन्द्र सुरांरो नाथ रे । ऊगी

ऊगी ने उवे ही आथम्यां रे, जोयजो कोई अचरिज-वाली बात रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरया रे, करतां मुनि नव कल्पी विहार रे। भारण्ड पंखी नी दीधी उपमा रे, न धरे ममता नेह लिगार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पाले रूड़ी रीत सूं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे। तिको मुनिवर सिध सिष्य ने रे, जस लेई इह लोके परलोक रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सबद रूप देखी समता धरो रे, मत करो मुनि भणियांरो अभिमान रे। ऋष चोथ-मल्ल सूत्र देखनें रे, जोड़ कीधी जालोर मझार रें ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ इति आउषानी सिज्झाय ॥



॥ अथ नारी सिज्झाय ॥

—:o:—

॥ मूरखकूं भावे नही रे, चतुर करो बिचार। जो सुख चाहो जीवको, तो मत कोई परणो नारी रे, (साहिब के लोको, मति कोई परणो नारी रे०) ॥१॥ जबही बात चलावत, तबही लागे प्यारी। जब एक घरमें ले आवे, तब ही मांचे थारी रे ॥ सा० ॥

॥ २ ॥ घरमें आय हुकम चलावे, देखो कामणगारी । भांत भांत का वस्त्र मंगावे, सुध बुध खोवै सारी रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ माणिक ल्या दे, मोती ल्या दे, गहणा ल्या दे भारी । ज्युं त्युं करके मुझने ल्या दे, नही तर करस्युं खोवारी रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ साड़ी ल्या दे, लँहगा ल्या दे, चोली साथ किनारी । सांच झूट कर मुझकूं ल्या दे; नहीं तो होसी धारी रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ काजल बिन्दी टीकी ल्या दे, करूं सिंगार तयारी । रंगरंगीली मैंहँदी ल्या दे, हूं कहूं तोहि पुकारी रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ सूवा साल्ह मोहि रंगाय दे, आछो पीय हूं वारी रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ कत्थो चूनो पान तमाखू, खावा कूं सोपारी । रंगरंगीलो चूड़ो ल्या दे, तो जाऊं बलिहारी रे ॥ सा० ॥ ॥ ८ ॥ सिर बांधण कूं कंगही लाय दे, पायन कूं पैजारी । सुई विना हूं क्यासूं सीऊं, लाइयो एक बुहारी रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ लूण तेल घृत सीधा ल्या दे, वेगी करूं तयारी । इक लकड़ी को भारो लाय दे, कहती कहती हारी रे ॥ सा० ॥ १० ॥ हलदीं हींग मिरच बिन फीकी, स्वाद न देत तरकारी । हुवा महीना पैसा कारण, फिर फिर जाय पणिहारी रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ ऊखल लाय दे, मूसल लाय दे, घट्टी

लाय दे भारी। छाज बिना मैं कैसे फटकूं, कहती २ हारीं रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जो जो मांगू सो सो लाय दे, तो जाऊं बलिहारी। जो मांगू सो वस्तु ल्या दे, क्यांने निखट्टू व्याही रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ इण भव मांहे खेल खिलावे, परभव में दुख भारी। एक बात सुणो भवि जीवां, नारी तजो निरधारी रे ॥ सा० ॥ ॥ १४ ॥ क्या छोटी क्या मोटी नारी, सबही विष की बेल। बैरी मारे दांव सूं रे, या मारे हँस खेल रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ नारी नही या नाहरी रे, बाघणि बड़ी बलाय। जीवत चूटै कालजो रे, मुंवा नरक ले जाय रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ सील वरत तुम चोखो पालो, जूं पामो भव पार। हेत जुगत कर गुरु दे शिक्षा, आगै इच्छा थारी रे ॥ सा० ॥ १७ ॥

॥ इति नारी सिज्झाय ॥



॥ अथ सप्त व्यसन सिज्भाय ॥

—*०*—

॥ सात विसनना रे संग मती करो, सुण तेहनो सुविचार (विवेकी०) सात नरकना रे भाइ, मास्ते- ई आपे दुःख अपार०) ॥ वि० ॥ १ ॥ सा० ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पड्यां थकां, पाण्डव पांच प्रसिद्ध । वि० । नल राजा पिण इणे बिसने पड्यो । खोइ सहू राज रिद्ध ॥ वि० ॥ २ ॥ सा० ॥ दूसरे मांस भक्षण अवगुण घणां, करे पर जीव संहार । वि० । महासतक नी नारी रेवती, नरक गई निरधार ॥ वि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ तीजे मदिरा पान बिसन तजी, चित धरि बली चाह । वि० । दीपायण ऋष दुहव्यो जादवे, द्वारका नो थयो दाह ॥ वि० ॥ ॥ ४ ॥ सा० ॥ चौथे विसने वेश्या घर बसै, लोक में न रहे लाज । बि० । कयवन्नादिक नो गयो कायदो, कुविसनने रे काज ॥ वि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणिये प्रहार । वि० । मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो, पहिली नरक प्रसिद्ध ॥ वि० ॥ ६ ॥ सा० ॥ छट्ठे चोरीने विसने करी, जीव लहै दुख जोर । वि० । मुञ्ज देवराजायै मारियो, पावो हुण्डक चोर ॥ वि० ॥ ७ ॥ सा० ॥ पर स्त्रिय

संगत्र कुविसन सातमे, हाणि कुजस बहु होय । वि० । राजा रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय ॥ वि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ इम जाणी भव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार । वि० । इण भव परभव आनन्द अति घणा, कहै धमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ९ ॥ सा० ॥

॥ इति सप्त व्यसन सिज्झाय सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ चेलणा महासती सिज्झाय ॥

॥ वीर वांदी वलतां थकां जी० आ० । चेलणा दीठो रे निग्रन्थ । राति वन मांहि काऊसग्ग रह्यो जी, साधतो मुगति नो पन्थ ॥ वी० ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी, सतिय शिरोमणि जांण । चेड़ा राजा नी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत ठांढार सबलो पड़े जी, चेलणा प्रीतम साथ । चोरितियो चित में वस्यो जी, सो बड़ि बाहिर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी कहें चेलणा जी, किम करतो हुस्ये तेह । कुमती मन मांहि ए कुण बस्यो जी, श्रेणिक पड्यो रे सन्देह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अन्ते उर परो जालज्यो जी; श्रेणिक दीयो रे आदेस । भगवन्त सांसो भांजियो

जी, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार । धुँवानो घोर देखी करी जी, जा जाहरे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ॥ ६ ॥ तात नो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार । समय सुन्दर कहै चेलना जी, पामियो भव तणो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥

॥ इति चेलना महासती सिज्झाय ॥



॥ अथ प्रतिक्रमण सिज्झाय ॥



॥ करि पड़िकमणो भावसूं० आ० । दोय घड़ी शुभ ज्ञाण, लाल रे० । परभव जातां जीवने, सम्बल साचो जाण ॥ ला० ॥ १ ॥ क० ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरै, श्रेणिक राय प्रतिबोध । ला० । लाख खण्डी सोना तणी, दीये दीन प्रति दान ॥ ला० ॥ ॥ २ ॥ क० ॥ लाख बरस लग तेहने, इम दीये द्रव्य अपार । ला० । इक सामायक नी तुला, नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ क० ॥ सामायक परसाद थी, लहिए अमर विमान । ला० । धरमसींह मुनिवर कहै, मुगति तणो ए निदान ॥ ला० ॥ ४ ॥ क० ॥

॥ इति प्रतिक्रमण सिज्झाय ॥

॥ ढंढण ऋषि सिज्झाय ॥

॥ ढण्ढण ऋषि दरशण की बलिहारी । हे जी थांरी सूरतरी बलिहारी ॥ ढ० ॥ निर्जरा करणी दोनुं थांरी, परमेश श्री नेम उच्चारी । यादव कुल थे ऊंचो जी लीयो, अदभुत करणी थांरी ॥ ढ० ॥१॥ षटमास थया अन्न जल लीधां, लीधो अभिग्रह धारी । मुझ लब्धि को अहारज लेवो, जाय जीव पण धारी ॥ ढ० ॥ २ ॥ गाथापति देख श्रीपति भक्ति, प्रतिलाभे कर मनुहारी । अहार पाणी ले प्रभु पै आया, नहिं वच्छलब्धि तिहांरी ॥ ढ० ॥ ३ ॥ मोदक परठवण काजें चाल्या, दीया करम विदारी । मुनिराम कहे जिन शासनमें, मुनि बड़े तप धारी ॥ ढ० ॥ ॥ ४ ॥

॥ इति ढण्ढण ऋषि सिज्झाय ॥



॥ उपदेस सिज्झाय ॥

—***—

॥ छप्पर पुराना पड गया जी कांई, तूटण लागा बन्ध । सन्ध सन्ध खुलण लगी कांई, तो न दीसे मति मन्द ॥ १ ॥ अब घर छूटा चेतन समजिंये जी० झरोखे जाली लगी जी कांई, बारी आड़ी भींत । मूल नींव डिगमिग करे जी कांई, भई पुराणी रीत ॥ २ ॥ अ० ॥ लक्षण सुभट नाशी गया जी कांई, स्याहीनो लोक गयो दूर । शिखर थरहर धूजियो जी कांई, आई नदिया पूर ॥ ३ ॥ अ० ॥ थेगली पिण ठहरे नहीं जी कांई, नही कोई छे रिच्छपाल । क्या सूतो तूं नीन्द में जी कांई, अब तो सूरत सम्भाल ॥ ४ ॥ अ० ॥ अब करणा है सो कीजिये जी कांई, देना है सो देह । लेना है सो लीजिये जी कांई, कहना है सो केह ॥ ५ ॥ अ० ॥ लाय लगी चहुं फेर सूं जी कांई, मिल रही झालोझाल । मुनि-राम कहे सहु काढसो जी कांई, इण घर में बहु माल ॥ ६ ॥ अ० ॥

॥ इति उपदेश सिज्झाय सम्पूर्णम् ॥



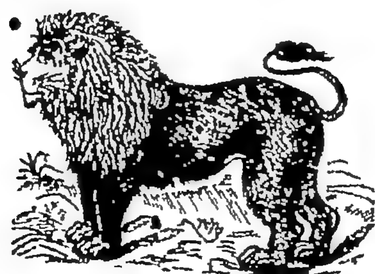
॥ सिज्झाय ॥

(१)

॥ म्हांरा गाढ़ा मारू वसोनी आजकी रैण में—एदेशी ॥

॥ म्हारा भोला जीवड़ा० आ० । लेवोनी खरची जोयने, जीवा मारग विषम अपार । म्हांरा भोला जीवडा खरची लेवो ने विचारने (टेर०) तूं स्युं करे जीवंडा दीशे छे तू मूढ गिवार ॥ म्हां० ॥ १ ॥ तन धन यौवन कारमी जी, जीवड़ा रैसी यांही को यांही । म्हा० । एक न साथे चालसी जीवड़ा, दरिये खाली मत तूं जाय ॥ म्हा० ॥ २ ॥ दान सुपातर दीजिये जीवडा, जीवां नो करो नि बचाव । म्हा० । जप तप शुद्ध क्रिया करो जीवड़ा, राखो निर्मल भाव ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ सतगुरु नी संगत कीजे जीवड़ा, बधसी खरची री गांठ । म्हा० । मुनि राम कहे मति भूलजो जीवड़ा, आगे विषमी बाट ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥



(२)

॥ जयवन्ताकी—ए देशी ॥

॥ खालो उदर सूं अवतरे नर प्राणी रे, जावै खाली आप । सुण ज्ञानी रे० । भूलो मत संसारमें । न० । मत करज्यो कोई पाप ॥ सु० ॥ १ ॥ जीव दया गुण बेलड़ी । न० । धरजो चित्त मझार ॥सु०॥ षट काया प्रतिपालियै । न० । पञ्च महाव्रत धार ॥ सु० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया तजो । न० । लोभ न कीजै लिगार ॥ सु० ॥ अदत्तादान चोरी तजो । न० । परिहरो विषय विकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ परिग्रह ममता छोड़के । न० । समता सूं कर प्रीत ॥ सु० ॥ मोह न कीजै देहको । न० । साधुन की इह रीत ॥ सु० ४ ॥ इम दुक्कर करणी करे । न० । धन धन ते अणगार ॥ सु० ॥ चेतनता सुद्ध होयके । न० । पामे भवना पार ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

(३)

॥ नणदल नी—ए देशी ॥

॥ गिरवा गुण गुरु देवनी, गुरु सम अवर न कोय० ॥ साहिब० ॥ मूरख कूं पण्डित करे, गुरु किरपा जब होय ॥ सा० ॥ १ ॥ गि० ॥ गुरु देवी गुरु देवता, गुरु सूं पावै ज्ञान । सा० । अहन्निश गुरुपद

सेविये, जगमें वाधे बान ॥ सा० ॥ २ ॥ गि० ॥ गुरु बिन धरम न सूझही, गुरू बतावे धर्म । सा० । जीवाऽजीव विचारणा, गुरु सूं पावे मर्म ॥ सा० ॥ ३ ॥ गि० ॥ सूत्र अरथ सिद्धांतनो, आवै गुरु परसाद । सा० । गीतारथ सब जग कहै, न करे वाद विवाद ॥ सा० ॥ ४ ॥ गि० ॥ अवगुण परिहर गुण ग्रहो, सुगुरु सीख मन लाय । सा० । बलिहारी गुरुदेवकी चेतन लागे पाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ गि० ॥ इति ॥

(४)

॥ बंछित पूरण—ए देशी ॥

॥ घटके पट खोलो प्राणी, मत बिसरो गुरुकी वाणी । घर घर मत डोलो भाई, निज आतम सूं परचै लाई ॥ १ ॥ तुझमें है तेरा प्यारा, तूं मत जाणो कहूं है न्यारा । ज्ञान दृष्ट सूं दिल देखो, आप में आप सदा पेखो ॥ २ ॥ पर संगतकी छोड़ो माया, फिर नहीं पावै मनुष्य काया । मात पिता सुत निज दारा, सब है स्वारथके परिवारा ॥ ३ ॥ धन जोवन थिर नही रहे, जिम कर अंजुली नीर बहे । बहते जल कर धो लीजै, गिरुवा गुरुकी सेवा कीजै ॥ ४ ॥ तप जपकी महिमा भारी, मत विसरो कोई नर नारी । आतम सिख्या जो जन गावै, सुद्ध चेतनां अविचल पावै ॥ ५ ॥ इति ॥

(५)

॥ आषाढ़भूत अणगार जी रे—ए देशी ॥

॥ टेक न छोड़ो पुन्य की रे, निरखो आप सरूप रे । चतुर नर० । पर संगत नही कीजियै (हो लाल) निज घटके पट खोलियै रे, देखो अगम अनूप रे । ॥ चतुर नर० ॥ परम पुरुष परमातमा हो लाल ॥ १ ॥ पञ्च महाव्रत आदरे, पालो निरतीचार रे । च० । जीवदया चित धारियै हो लाल । असत वचन नवि बोलिये रे, लागे दोष अपार । च० । अदत्तादान चोरी तजो हो लाल ॥ २ ॥ विषय विकारकूं जीतियै रे, पञ्च इन्द्री बस आण रे । च० । परिग्रह ममता छोड़ियै हो लाल । पञ्च सुमत मनमें धरो रे, तीन गुपत तूं जाण रे । च० । अष्ट प्रवचन माता भली हो लाल ॥ ३ ॥ तप जप सञ्जम साधना रे, कीजै मन वच काय रे । च० । सुद्ध होय निज आतमा हो लाल । पावै शिव सुख शास्वता रे, भव भवके दुख जाय रे । च० । आनन्द मंगल ऊपजे हो लाल ॥ ४ ॥ इह शिक्षा नर मानियै रे, सदगुरु कहे समझाय रे । च० । चेतनता सुध कीजियें हो लाल । धरम करो नर नारियां रे, दुख संकट सवि जाय रे । च० । सुख सम्पति बिलसे सदा हो लाल ॥

(६)

॥ सनेहो की—ए देशी ॥

॥ ठीक रखो मन आपनो, चञ्चल चित्त निवार० ॥ सनेही० ॥ ध्यान करो निज आतमा, एक सरूप बिचार ॥ स० ॥ १ ॥ ठी० ॥ बीजी दुविधा छोड़िये, तीनो धरम संभाल । स० । च्यार कषायने परिहरो, पांच विषय सुख टाल ॥ स० ॥ २ ॥ ठी० ॥ षट काया प्रतिपालिये, सूक्षम बादर जांण । स० । सात बिसन को त्यागिये, जगमें बाधे बाण ॥ स० ॥ ३ ॥ ठी० ॥ आठो मद नवि राखिये, लागे दोष अपार । स० । नवंमे सीयल सुहामणो, ते पालो नरनार ॥ स० ॥ ४ ॥ ठी० ॥ दसमी धर्म सदा धरो, साधनकी वह रीत । स० । चेतनता सुद्ध होयके, अविचल कीजे प्रीत ॥ स० ॥ ५ ॥ ठी० ॥ इति ॥

(७)

॥ ढरढन ऋषने वन्दना हूं बारी—ए देशी ॥

॥ डोलो मति संसारमें हूं बारी० ॥ थिर मन कीजै ध्यान रे हूं बारी लाल० ॥ १ ॥ डो० ॥ मात पिता सुत बन्धवा हूं बारी, बनिता सहू परिवार रे ॥ हूं ॥ वा० ॥ ए सवि स्वारथी जाणियै हूं वारी; कोई न चाले लार रे ॥ हूं० ॥ २ ॥ डो० ॥ तन धन जोवन

कारिमा ॥ हूं० ॥ सन्ध्या रंग समान रे। हूं०। खिण इकने खिर जायगा। हूं०। समझो आप सुजाण रे ॥ हूं० ॥ ३ ॥ डो० ॥ तप जप संजम कीजियै। हूं०। नेम धरम चित लाय रे। हूं०। तो सुख पावे आतमा। हूं०। जनम मरण दुख जाय रे ॥ हूं० ॥ ॥ ४ ॥ डो० ॥ फिर नहि जगमें अवतरे। हूं०। पावे अविचल धाम रे। हूं०। चेतनता सुध होयके। हूं०। सरे आतम काम रे ॥ हूं० ॥ ५ ॥ डो० ॥

॥ इति ॥

(८)

॥ धनरा ढोला—ए देशी ॥

॥ ढाल धरम कर लीजिये रे, खड़ग क्षमा चित धार। मन ना मान्या। मोह बली जग जाणिये रे० ॥ तिण सूं तूं मति हार ॥ गुन ना गेहा० ॥ १ ॥ हंस करे जुद्ध मोहसूं रे, जीतौ तो सुख होय। म०। जो हारै भव में पड़े रे, ते जाने सहु कोय ॥ गु० ॥ २ ॥ पुन्य उदै जीव जीतियो रे, भागे मोह मिथ्यात। म०। मोक्ष नगर में आय के रे, जीते वैरी सात ॥ गु० ॥ ३ ॥ केवल पदवी सम्पजै रे, विलसे सुख अपार। म०। निरभय रूप सुहामणो रे, शिव सुन्दरी घरनार, ॥ गु० ॥ अविचल लीला तेहसूं रे,

जीव करै दिन रैन । भ० । चेतन चेतो आपको रे, तो पावै सुख चैन ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

(९)

॥ निरखि २ तुझ बिम्बने---ए देशी ॥

॥ तन धन जोबन कारिमा, जात न लागे वार । भविक जन सांभलो० ॥ अनादि काल भमतो फिरे, नहि पावै भव पार ॥ भ० ॥ १ ॥ पूरब पुन्य उदै भई, पायो मानव देह । भ० । उत्तम जैन धरम लही, परमातम सूं नेह ॥ भ० ॥ २ ॥ अविचल आतम सुख मिलै, उपजे अनुभव ज्ञान । भ० । केवल महिमा सुर करे, जिन कीन्हो निज ध्यान ॥ भ० ॥ ३ ॥ धरम सुकल दोय ध्यान में, सुख पावे भव पार । भ० । आरित रौद्र परिहरो, तो छूटे संसार ॥ भ० ॥ ४ ॥ सुगुरु सीख मन में धरो, नर नारी चित लाय । भ० । चेतनता सुध कीजिये, भव भवके दुख जाय ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

(१०)

॥ रामचन्द्रके बाग, चम्पो मौही रहो री—ए देशी ॥

॥ थिर मन कीजे ध्यान, चल चित दूर करो री । तो पावै सुख पूर, माया ममता हरो री ॥ १ ॥ इह संसार असार, मत कोई आय परो री । दान सील

तप भाव, निश्चै चित्त धरो री ॥ २ ॥ निज घट निरखो आप, आतम राम खरो री। परमातम सूं प्रीत, कर मन काज सरो री ॥ ३ ॥ कीज्यो धरम विचार, पुन्य सूं पाप टरो री। दुरमत कीजे दूर, विषय सूं आप डरो री ॥ ४ ॥ इह शिक्षा मन धार, घट विच ज्ञान भरो री। चेतनता कर सुद्ध, भव जल आप तरो री ॥ ५ ॥ इति ॥

(११)

॥ रसिया की देशी ॥

॥ दान सीयल तप भाव सदा धरी० ॥ जिन सूं पावै हो पार सुज्ञानी० ॥ १ ॥ दा० ॥ मोह ममता नहि राखिये, चाखियै समता हो नीर । सु० । चञ्चल चपला चित्त नित त्यागिये, निज मन कीजे हो धीर ॥ सु० ॥ २ ॥ दा० ॥ तन धन जोवन जाणो कारिमां, खिरत न लागे हो वार । सु० । जिम कर अंजुली नीर बहै सदा, विषय सुख दीजे हो टार ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ दा० ॥ थिर मन ध्यान करी निज आतमा, घट पट खोलो हो आज । सु० । जन मन रञ्जन भञ्जन करम को, धरम सूं सारे हो काज ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ दा० ॥ निरभै पद शिव सुख निरा सास्वतां, अविचल पावै हो राज । सु० । चेतनता चित सुध

कर लीजिये, तो रहे तेरी हो लाज ॥ सु० ॥ ५ ॥ ॥ दा० ॥ इति ॥

(१२)

॥ जं २ ऋषभ जिनेसर स्वामी—ए देशी ॥

॥ पाप करम तजि दीजे प्राणी, पावे भवनो पार जी । पुन्य उदे नर जनम जो पायो, मत भूलो संसार जी ॥ १ ॥ पा० ॥ दान सील तप भावना भावो, मुक्तिके मारग च्यार जी । पञ्च महाव्रत सुद्ध पालो, टालो दूषण अढार जी ॥ २ ॥ पा० ॥ सर्व जीव की रक्षा कीजे, सूक्षम बादर काय जी । निरख २ धरणी पग दीजे, करुणावन्त मुनिरायजी ॥ ३ ॥ पा० ॥ असत अदत्ता मैथुन त्यागो, ब्रह्म-व्रत मन धार जी । परिग्रह मूर्छा ममता न राखो, चाखो समता नीर जी ॥ ४ ॥ पा० ॥ चेतनता सुध करणी धारे, सारे आतम काज जी । गुरुजन की शिक्षा जो माने, बिलसे अविचल राज जी ॥ ५ ॥ पा० ॥ इति ॥

(१३)

॥ मुनि मन सरवर हंस लो—ए देशी ॥

फरस इन्द्री बस जग पड्यो, ते ढोवे बहु भारे रे । ज्ञानहीन बहु डोलता, कर्म रूप यह चारो रे

॥ १ ॥ फ० ॥ रस इन्द्री जिव्हा तणो, मीन हरे निज प्राणी रे । ते तुम जोवो प्राणिया, परमातम गुण जाणी रे ॥ २ ॥ फ० ॥ भमर सुबासें लोभियो, घ्राण इन्द्री रस मातो रे । दुख संकट बहु पावतो, कमल मिले जब रातो रे ॥ ३ ॥ फ० ॥ आंखन के रस सूं जले, दीपक मांहि पतङ्गो रे, कुरंग श्रवण रस मोहियो, सुर नाद विषे उमंगो रे ॥ ४ ॥ फा० ॥ इक २ इन्द्री सेवते, पावें दुख अनन्तो रे । पञ्च विषय सुख परिहरो, चेतनता सुद्ध सन्तो रे ॥ ५ ॥ ॥ फ० ॥ इति ॥

(१४)

॥ राणपुरी रलिया मणी रे लाल । ए देशी ॥

॥ बोल यथारथ बोलिये रे लाल०; लागे सबकूं प्यार सुखकारी रे० । इह भव जस कीरत बधे रे लाल, पर भव मुकत मझार ॥ सु० ॥ १ ॥ बो० ॥ अमृत वाणी सुहामणी रे लाल, कोकिल कण्ठ रसाल । सु० । भाषा सुद्ध कर आपणी रे लाल, पञ्च महा व्रत पाल ॥ सु० ॥ २ ॥ बो० ॥ क्रोध मान माया तजो रे लाल, लोभ लहर कर दूर । सु० । देव धरम गुरु सेविये रे लाल, उपजैं सुख भर पूर ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ बो० ॥ राग द्वेष नहि कीजिये रे लाल, एक

सरूप निहार. । सु० । निज घटके पट खोलियै रे लाल, कीजै ज्ञान विचार ॥ सु० ॥ ४ ॥ बो० ॥ आतम ध्यान सदा सुखी रे लाल, परमातम गुण जाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ बो० ॥ इति ॥

(१५)

॥ कपूर होय अति ऊजलो—ए देशी ॥

॥ भव भव भमतो जीवड़ो रे, लख चौरासी रूप । जो नहि चेतै आपकूँ रे, तो पावै भव कूप रे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ भूले मत संसार (आंकणी०) दान सीयल तप भावना रे. धरजो चित्त मझार । ध्यान धरो निज आतमा रे, मन्त्र जपो नवकार रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया तजो रे, लोभ लहर कर दूर । पञ्च महाव्रत पालियै रे. उपजे सुख भर पूर रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जीव दया गुण वेलड़ी रे, असत्य अदत्ता त्याग । मैथुन परिग्रह छोडियै रे, मन में राखै वैराग रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ सुगुरु सीख सुण लीजिये रे, कीजे आतम काम । चेतनता सुद्ध होयके रे. पाये अविचल धाम रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

(१६)

॥ सुण बहनी पीवड़ा परदेशी—ए देशी ॥

॥ मोह ममता तजि दीजे प्राणी, समता निज

मन आणी रे इस पुद्गलको संग न कीजे, निज घट आतम लीजे रे ॥ १ ॥ मो० ॥ परवश जीव रहे लंप-टाई, सुख दुख सहतो भाई रे । तन धन यौवन माल खजाना, संध्या रंग समझाणी रे ॥ २ ॥ मो० ॥ मात पिता सुत बन्धू दारा, स्वारथ के परिवारा रे । इह सब तेरा काम न आवे, आप किया फल पावे रे ॥ ३ ॥ मो० ॥ दान सीयल तप भावना धारो, धर्म दया मत हारो रे । निश्चल ध्यान एक मन राखो, आगम वचन चाखो रे ॥ ४ ॥ मो० ॥ सुगुरु सीख मानो नर नारी, तो पावे गत सारी रे । चेतनता सुध आप सम्भालो, पञ्च महाव्रत पालो रे ॥ ५ ॥ मो० ॥ इति ॥

(१७)

॥ कोइलो परवत धूंधलो रे लो—ए देशी ॥

॥ जोग जतन चित धारिये रे लो, दूर टले दुख दर्द रे, (भविक जन०) जप तप संजम साधना रे लो, कीजे मन आनन्द रे ॥ भ० ॥ १ ॥ यो० ॥ पंच महाव्रत पालिये रे लो, साधुको आचार रे । भ० । पहिलो व्रत सुद्ध कीजिये रे लो, जीवाजीव निहार रे ॥ भ० ॥ २ ॥ यो० ॥ षटकाया प्रति पालिये रे लो, सूक्षम बादर जाण रे । भ० । मृषावाद नंही बोलिये रे लो, मत ले अदत्तादाम रे ॥ भ० ॥ ३ ॥

॥ यो० ॥ चौथो ब्रत चोखो करे रे लो, पंच विषय सुख त्याग रे। भ०। परिग्रह ममता छोडिये रे लो, लोभ लहर सूं भाग रे॥ भ०॥ ४॥ यो० ॥ समता में सुख सांस्वता रे लो, पावे अविचल धाम रे। भ०। चेतनता सुद्ध होयके रे लो, सारे आतम काम रे॥ भ०॥ ५॥ यो० ॥ इति ॥

(१८)

॥ गिरुवा रे गुण तुम तणो—ए देशी ॥

राग द्वेष नहि कीजिये, परिहर ममता माया रे। समता सूं कर प्रीतड़ी. बसि कर मन बच काया रे, ॥ १॥ रा०॥ तन धन यौवन कारिमा, कर अञ्जलि जिम पाणी रे। खिण इक में खिर जायगा, पुदगल थिर नहि जाणो रे॥ रा०॥ २॥ मात पिता सुत बन्धवा, घर घरणी परिवारा रे। ए सब स्वारथ के सगे, कोई न जासी लारा रे॥ रा०॥ ३॥ जग बीच तेरा कोई नही, तूं एकाकी अकेला रे। जो अबके नही चेतिया. फिर न मिले इह बेला रे ॥ रा० ॥ ४॥ साग सुणी नर नारिया, सुगुरु बचन इम भाषे रे। चेतनता सुद्ध होयके, राग द्वेष नहि राखे रे॥ रा०॥ ५॥

(१९)

॥ थारा मेहलां ऊपर मेह झबूके बीजली हो लाल—ए देशी ॥

॥ लोभ लहर कर दूर, परिग्रह छोड़िये हो लाल तो पावै शिव बास, करम बन्ध तोड़िये हो लाल ॥ क० ॥ १ ॥ लोभतें दुरगत जाय, जगतके प्राणियां हो लाल। ज०। अति लोभे होय हाण, सागरदत्त बाणियां हो लाल ॥ सा० ॥ २ ॥ लोभ न कीजै लिगार, ग्यार मां ते बड़ी हो लाल। ग्या०। पहुंचे दसम गुण ठांन, लोभ थी फिर पड़ी हो लाल ॥ लो० ॥ ३ ॥ लोभ महा रिपु जाण, मुकत मग रौकियो हो लाल। मु०। लोभ तजे जे जीव, तिन्हे नवि टोकियो हो लाल ॥ ति० ॥ ४ ॥ अविचल पावे धाम, सदा सुख में रहे हो लाल। स०। वाचक ऋद्धिविजय नो शिष्य, चेतन इम कहे हो लाल ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

(२०)

॥ आछे लालाकी—ए देशी ॥

॥ शत्रु मित्र समान, राग द्वेष मत आण (आछे लाल०) धर्म दया चित राखियै जी, पञ्च महाव्रत धार पालो निरतिचार। आछे०। असत वचन नवि भाषियैजी ॥ १ ॥ चोरी अदत्तादान, लोभ तजो

गुणखान । आछे० । बिन दिये लीजे नही जी, जो चाहै शिव धाम ; तो तजिये सुख बाम. । आछे० । विषय भलो ना कहीं जी ॥ २ ॥ परिग्रह कीजै दूर, सुख उपजे भरपूर । आछे० । तप जप संजम खप करो जी, काय सकत पचखान; थिर मन कीजै ध्यान । आछे० । समता निज मनमें धरो जी ॥ ३ ॥ चञ्चल मन बस आने, सुगुरु वचन सुन कान । आछे० । बोलिये बोल सुहामणो जी, पाये नर अवतार; अबके तूं मत हार । आछे० । तो पावै मन भावनो जी ॥ ४ ॥ ज्ञानी ज्ञान विचार, मत भरमें संसार । आछे० । तुझमें है तेरा धणी जी, चेतन चेतो आप ; मत करजो कोई पाप । आछे० । सुख सम्पति पावे घणो जी ॥ ५ ॥ इति ॥

(२१)

॥ नदी जमुनाके तीर उड़े दोय पंखिया — ए देशी ॥

॥ षटकाया प्रतिपाल दया चितमें धरो, सूक्षम बादर जाण क्रिया व्रत आदरो । प्रथवी कायनो जीव जगतमें जाणियै, अप तेऊ और वाय वनस्पति मानियै ॥ १ ॥ एकेन्द्री थावर जाण चलनको सुध नही, बितो चौरिन्द्री पंच ए त्रस काया कही । जीव दया गुण बल सदा मनमें रखो, पंच महाव्रत पाल

मुकत के सुख लखो ॥ २ ॥ झूठ न बोलिये बैण अदत्त न लीजिये, चोरीमें बहु पाप विषय नहि कीजिये। परिग्रह ममता छोड मुनि समता गहो, निर दूषण ले आहार संजम में थिर रहो ॥ ३ ॥ मन वच काया सुद्ध करो व्रत पालणा, थिर मन कीजै ध्यान चपल चित टालणा। इक करणी कर साध चले शिव धाममें, अविचल पावे बास परम पद नाम में ॥ ४ ॥ इह शिक्षा नर नार सुणो प्रतिबोधना, कीजै आतम ज्ञान अभिन्तर साधना। पाये निज घट रूप सरूप सुहामणा, चेतनता कर सुद्ध मिले मन भावना ॥ ५ ॥ इति ॥

(२२)

॥ शान्ति जिन एक मुझ वीनती—ए देशी ॥

॥ साधुके चरण नित बन्दिये० । पञ्च पदनो जप नाम रे, पर परिवार सब स्वारथी, मात पिता सुत बांम रे ॥ सा० ॥ १ ॥ तन धन जोबन कारिमा, काम नहि आवै ए कोय रे। भूल मती इह संसारमें, जो तूं ज्ञानी नर होय रे ॥ सा० ॥ २ ॥ लख चौरासी गत च्यारमें, भरमे काल अनन्त रे, अब उदे पुण्य के आयके, भयो मानव गुणवन्त रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ विनय किजै गुरुदेवकी, सीखिये आगम ज्ञान रे।

जनम सफल होय आपनो, जो कर आतम ध्यान रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ इह सीख सुण नर नारिया, नित होय मंगल माल रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

(२३)

॥ अरे प्राणी आपो आप निहारिये० । मत भरमें संसार रे प्राणी, शांति सरूप हीये बसे एक ध्यान चित धार रे, प्राणी ॥ आ० ॥ १ ॥ अरे प्राणी घट में हैं नहि सूझतो, ए तो अचरज-वाली बात रे, प्राणी । आंख न देखे कान को, संग रहे दिन रात रे, प्राणी ॥ आ० ॥ २ ॥ अरे प्राणी तुझमें है तेरो धणी, नहि सूझे हगहीन रे, प्राणी । घट पट खोली देखिये, जो होवे परवीण रे, प्राणी ॥ आ० ॥ ३ ॥ अर प्राणी सिद्ध सरूपी जीवडा, ज्ञानदृष्ट सूं देख रे, प्राणी । बिन देखे चीन्हे नही, अलख अरूपी भेष रे, प्राणी ॥ आ० ॥ ४ ॥ अरे प्राणी देव मनुष तिरजञ्च में, नरक निगोद दिखाय रे, प्राणी । लख चौरासी भरमियो, घट घट नाम धराय रे, प्राणी ॥ आ० ॥ ५ ॥ अर प्राणी, जीव अरूपी जाणिये पुदगल बन्धन पाय रे, प्राणी । पाप पुन्य दोय बांधिया, सुख दुख पेंच लगाय रे, प्राणी ॥ आ० ॥ ६ ॥ ओ प्राणी बन्धन छोडी जीवको,

सिद्ध सरूपी धार रे, प्राणी । आवागमन मिटाइये, चेतन उतरे पार रे प्राणी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥



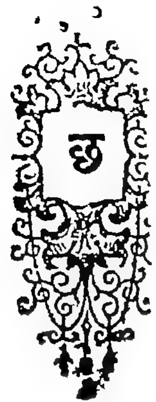
॥ सिज्झाय ॥



॥ निहालदे की चाल ॥

दसपचखांणे जीवड़ो जी काँई, पांमे सुख अपार । करतां एक नवकारसी जी काँई, सौ बरस नरक निबार ॥ तप समो नही जगतमें जी, सुख तणो दातार० ॥ १ ॥ टेर ॥ बीजी पोरसी बर्ष सहस नी जी काँई, साढ पोरसी दश हजार । पुरमढ लक्ष एक वर्ष नी जी काँई, एकासणो दश लक्ष धार ॥ त० ॥ २ ॥ नीवी तोडे कोड बर्ष नी जी काँई, दश कोड एकल ठाण । सौ कोड एकल दत दहेजी काँई, आंबिल सहस कोड जांण ॥ त० ॥ ३ ॥ सहस दश कोड उपबास मे जी काँई, छठ तणो तप तप धार । लक्ष कोटी बर्ष पावही जी काँई, अट्ठम कोटी दश लक्ष टार ॥ त० ॥ ४ ॥ कोटाकोटी बर्ष नो जी काँई, दसम भस्म करे कर्म । मुनिराम कहै तप कीजियै जी काँई, पांमस्यो शिव पुर शर्म ॥ त० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ छै कायानी बिनती ॥



छय काय रक्षा करी, भये तीर्थंकर देव । यातैं मन वच काय सों, करो दया की टेव ॥ १ ॥ पृथ्वी काय मत खोद, जीव असंख भरे हैं । माटी चाहिये तोहि, फासु बहुत पडी है ॥ २ ॥ माटी चणा सम जीव, धारे भ्रमर सम काया । ते लक्ष योजन जीव, जम्बुद्वीप न मांया ॥ ३ ॥ बरस बाबीस हजार, आयु बडी जु बखानी । जघन महुरत मांहि, सब थावर त्रस जाणी ॥ ४ ॥ माटी खोद कुम्हार, हिंसा बहु उपजावै । हिंसाके परिणाम, मरिकै दुरगति जावै ॥ ५ ॥ जल काया नवि रोध, जीव अपार विराजा । जो जल चाहियै तोहि, फासु सें करि काजा ॥ ६ ॥ एक बिन्दु के जीव, देह चणा सम धारे । जो इस द्वीप मांइ, केवल ज्ञान निहारे ॥ ७ ॥ उत्कृष्टो जल आउ, सात हजार बरस की । सात सात लक्ष जाति, भू जल अगनि पवन की ॥ ८ ॥ जलकी भरणि जुहारी, हिंसक जे पणिहारी । तन परि कपडा नांही, ते दुरगति की प्यारी ॥ ९ ॥ अगनि काय मति दाह, जीव असंख भरे हैं । अगनि आरंभ निवार, गुरु के वचन खरे हैं ॥ १० ॥ एक

अगनि कण जीव, पोस्त बीज सम काऊ। करे तो द्वीप न मांइ, बडी तीन दिन आऊ॥ ११ ॥ भिल्ला-दिक बन मांहि, पावक दाह करइया। फिरैं है नगन पग नीचे, दुरगति दुःख भरइया ॥ १२ ॥ पवन काय के जीव, बहुत बसे इक ठांहि। सब पर होय दयाल, हिंसा पंखा मांहि ॥ १३ ॥ सुइ छिद्र सम बाउ, जीव असंख भरे जी। लीख समान शरीर, करै तो द्वीप भरे जी ॥ १४ ॥ पवन आउ उत्कृष्टि, तीन हजार बरस की, पवन करे ते गुलाम, कहिये दर नहि तिसकी ॥ १५ ॥ बनस्पति मति तोडो, जीव बसे इक ठांइ। संख असंख अनन्त, दोई भेद इण मांहि ॥ १६ ॥ साधारण चौदे लाख, दश प्रत्येक बखाणी। साधारण में जीव हैं, अनन्त कहे ज्ञानी ॥ १७ ॥ कोमल जे फल फूल, डाल पत्र कन्द जे ते। जमहे परव जिस डाल है, साधारण ते ते ॥ १८ ॥ तिल सम इस तन मांहि, जीव कहे कहे जे ते तीन काल के सिद्ध, कीजे, एक न ते ते ॥ १९ ॥ सास उसास इक मांहि, जनम मरण करे जी। साढे सतरे वार आऊ, बडिग धरे जी ॥ २० ॥ है परतक्ष में जीव, संख असंख परमाना। उत्कृष्टो यांको आऊ, वर्ष सहस दश जाना ॥ २१ ॥ फल

दाहक तोरन हार, देखे काछी प्राणी। जग हूं कहावे गँवार, दुरगती आगवानी॥२२॥ अब छठी त्रस काय बि ती, चौरन्द्री जाती। दो दो लक्ष परमान, बे इन्द्रि संख्याती॥ २३॥ अलसिया कृमि लट जोंक, आऊ बड़ी बर्ष बारे। बहुत बसे जलमांहि, ताते छानि त्रस टारे॥ २४॥ चेंटी खटमल डांस, जूंवां कांन-सलाई। गति ते इन्द्री जाण, जीव दया करो भाई॥ २५॥ आठ दिना ऊनचास, उत्कृष्टो जिन भाषी। चौइन्द्री भ्रमर पतङ्ग, मछर झङ्गर माखी॥ २६॥ बीछू मकोडा आदि, आऊ बडी छ मासीज। ए काटे आय, ज्ञानी तोऊ न बिंनासे॥ २७॥ नर पशु पंखी मच्छयादि, पञ्चेन्द्री जाणो। जो ए करे बिगार, तो बी करुणा आणो॥ २८॥ देव नरक उत्कृष्ट, आऊ सागर तेतीस। जघन सहस दश वर्ष, भाषी श्री जगदीशं॥ २९॥ उत्कृष्टी पल्य तीन नर, पशु आऊ बखाणी। मच्छ सरप देखी आऊ सुं, पूर्व कोड़ी परवाणी॥ ३०॥ देव नरक तिरिजञ्च, च्यार २ लक्ष जाणी। चवदे लाख मनुष्य, ए सब लक्ष चौरासी॥ ३१॥ पञ्च इन्द्री बल तीन, आऊ सास भाषी। इन दश प्रानन मांहि, थावरके चउभाषी॥ ३२॥ विकल त्रय छे सात, आठ प्राण क्रम सोजी।

धरे असनी सन्न, पञ्च इन्द्री नव दश जी ॥ ३३ ॥ छ पर्जाय आहार है, शरीर फुनि इन्द्रि । सांस उसास भाषा, मन्न चार धरि इक इन्द्रि ॥ ३४ ॥ विकल अन्नि को पांच, सन्नी को छे जाणो । पर्जायन के भेद, गुरु मुखासूं पहिचाणो ॥ ३५ ॥ पर्याप्ती छकाय, होय पर्याधारी । सूक्षम बादर भेद कह्या, सिद्धान्त मझारी ॥ ३६ ॥ लोक आकाश मझार, पूर रही छे काया । घट मांहि जो तुम जाणो मन बच काया ॥ ३७ ॥

॥ कलश ॥

॥ यह जाण निशि दिन दया पालो, भविक शिव सुख दायरे । भव २ तणो यह कुटम आपणो, लखो मन बच काय रे । षट काय में मिथ्यात के, बस रुलत जीव अपणो कियो । अब तरण तारण जांण लीजो, शरण श्री जिनराजको ॥ जग मांहि भवो भव ससित समकित, चरण तुम बन्दित रहूं । निज दास लिखि यह, आस पूरो और कछु में ना चहूं ॥ ३८ ॥

॥ इति छै कायानो विनती सम्पूर्णम ॥



॥ अथ कलियुग बिनती ॥



॥ ढाल ॥



खो भाई कलियुग आयौ, दुनिया पलटा जाय छे० ॥ आंकनी ॥ तीन भुवनका नाथ प्रभुजी, ज्योने भूल्या जाय छें ॥ देखो० ॥ १ ॥ साधु मुनीसर तारै जगमे, ज्यांका गुण बिसराय छे। तो पाखण्डी कपटी तपस्वी की, दुनी भगती बधाय छे ॥ दे० ॥ २ ॥ जीव दया छे धरम शिरोमणि, राग दोष नहि ल्याय छे। दोणाठी मूंकी चोट घमूका, क्रोध किया गुण जाय छे ॥ दे० ॥ ३ ॥ गाय बाछुड़ा पूजे ढोकै, भीज्यो नाज चड़ाय छे। तो रोष करे तब लाठी मारे, ए तो बड़ी अन्याय छे ॥ दे० ॥ ॥ ४ ॥ आगे राजा परजा पाले, चौथो बाटौ खाय छे। तो अब राजाके लोभ बध्यो छे, मन मानै सो कराय छे ॥ दे० ॥ ५ ॥ नाहर बघेरा गैला रोकै, ज्यांकी करे सिकार छे। तो अब पशु जीव क्युं मारे, घास तिणा जो खाय छे ॥ दे० ॥ ६ ॥ आगे न्याव करेवा जेता, कोई पंक्ष नही ल्याय छे। तो अब न्याव करे छे जेतो, मतलब राख्यो जाय छे ॥ दे० ॥

॥ ७ ॥ धरम करम की बिरियां रुपिया, खरचे नाहि लगाय छे। तो और अनेक कामके माही, अधिकों नाम बधाय छे ॥ दे० ॥ ८ ॥ बस्तु चडावे देव गुरु के, निरमायल हो जाय छे। तो पाप दोष सूं डरपे नाही, सो भी खाता जाय छे ॥ दे० ॥ ९ ॥ पर को माल चोरिवा जावे, पर को खेत तुड़ाय छे। तो गैला मारे मनुष सन्तावे, नरका में दुख पाय छे ॥ दे० ॥ १० ॥ मात पिता सब पाले पोषे, ज्यांसुं जुदा रहाय छे। तो कलहकारणी घर में आवे, कुल की लाज गमाय छे ॥ दे० ॥ ११ ॥ अणछाण्या पानी को दूषण, बिधि बस्तु छुडाय छे। तो रात्री खाणा को दोष घणो छे, सो तो समझ नांहि छे ॥ दे० ॥ १२ ॥ देश परदेश फिरे गांवा मे, ख्याल तमासे जाय छे। तो देहरा का दरशन करतां, आलस अधिका आय छे ॥ दे० ॥ १३ ॥ चौमासा में इन्द्र देवता, बाञ्छित जल बरषाय छे। तो अब परजा को नीति घटी छे, मेह घणी तरसाय छे ॥ दे० १४ ॥ हीन जाति को बिसवो दाणो, भला पुरुष नही खाय छे। तो अब तो ब्राह्मण जावे ब्रिणजण, बाण्या बिणजण कराय छे ॥ दे० ॥ १५ ॥ आगे धौलो केश देखि करि, तप करिवा उठि जायं

छे । तो अब तो बूढ़ा होवे छे सो, फेर परणवा जाय छे ॥ दे० ॥ १६ ॥ गढ़रा पति दोलति रूपीया, खरचै नांहि लगार छे । तो कष्ट घणी करि जोड़े, तो ज़ोरावर ले जाय छे ॥ दे० ॥ १७ ॥ लेत उधार बले रुपइया, लिखतं पक्की लिखाय छे । तो देती बिरियां कपट बिचार, दगाबाज अधिकाय छे ॥ दे० ॥ १८ ॥ पर नारीको चाप घणोछे, पुरष परायो त्याग छे । तो सील बरतनै खण्डे छे, जो खोटी गति में जाय छे ॥ दे० ॥ १९ ॥ कन्या बड़ी सयाणी करि करि, बूढ़ाको परणाय छे । तो पूँजी लेतां दाम चुकावे, मीठा भोजन खाय छे ॥ दे० ॥ २० ॥ गालि गीत में ख्याल तमासे, रात्यौं खडा रहाय छे । तो कथा धरम की चरचा सुणतां, आंखां नींद भरि आयछे ॥ दे० ॥ २१ ॥ अवे जगत में भांग तमाखू, सूँघे पीवे खाय छे । तो स्वामी जति सन्यासी जोगी, ऐबी अमल वधाय छे ॥ दे० ॥ २२ ॥ एकादशी करै छे निरज़ल, सो तो व्रत फल पाय छे । तो भांति भांतिका स्वाद बनावे, पेट भर्‌यो फल जाय छे ॥ दे० । २३ ॥ ज्याही को तौ खावे पीवे ज्यासूं बड़ो कहाय छे । तो ज्यांईको गुण वीसर जावे, उलटो बैर कराय छे ॥ दे० ॥ २४ ॥ अवे

जीवके क्रोध घणोछे, मान बडाई गाय छे। तो लोभ घणो करि कपट करे छे, हरिया वृक्ष कटाय छे ॥ दे० ॥ २५ ॥ पूजा करतां जाप जपन्तां, मन थिरता नहि पाय छे। तो मोन धारके मांला फेरे, मन में मतो कराय छे ॥ दे० ॥ २६ ॥ बिना अरथ ही झूठा बोले, कूंड़ी साख भराय छे। तो चुगली करिके गांव लुटावे, दौं दे आगि लगाय छे ॥ दे० ॥ ॥ २७ ॥ बड़ा जीवकूं मार्यां सेती, हत्यारो कहवाय छे। तो छोटा जीव हजारां मारे, सो क्यों भूल्यो जाय छे ॥ दे० ॥ २८ ॥ राग द्वेष कूं छोडे छे सो, बैरागी सुख दाय छे। तो अब बैरागी भेक धारके, सस्त्र बांधि लड़ाय छे ॥ दे० ॥ २९ ॥ पोथी पाना प्रभुकी मूरति, पूजे मुगति बधाय छे। तो भूखां मरता बेचण जावे, सारो नरक कमाय छे ॥ दे० ॥ ॥ ३० ॥ चोरी निन्दा आछी लागे, जूवा खेलवा जाय छे। तो ज्ञान गोठिकी संगति बैठा, घरका राड़ि कराय छे ॥ दे० ॥ ३१ ॥ जैसी रचना बरते जग में, तैसी जोड़ जुड़ाय छे। तो गावे देवा ब्रह्मचार यों, सुणतां आनन्द पाय छे ॥ दे० ॥ ३२ ॥

॥ इति कलियुग विनती सम्पूर्णम् ॥



॥ नेमिसर स्तुति ॥

॥ जिलेकी ल ॥

सहियां ए नेमीसर बनडे ने गिरनारी जातां राख लीजो ए० ॥ समुद्रविजेजीरा लाड़ला हे मा, हल दल दोनुं लार, पिताजीने जायं केजो हे मा ॥ ने० ॥ १ ॥ नेमीसर बनड़ो बण्यो ए मा । सहियां ए खूब बणीं है बरात, ऊंची चड़ झांक लीजो ए मा ॥ ने० ॥ २ ॥ नेमीसर तोरण आयो ए मा । सहियां ए पशुवन करीं छे पुकार, उलट रथ फेर चाल्यो ए मा ॥ ने० ॥ ३ ॥ तोड्या छे कांकण डोरड़ा हे मा । सहियां ए तोड्या छे नौसर हार, दीक्षा उण आदरी हे मा ॥ ने० ॥ ४ ॥ हमही प्रगट त्यागस्यां हे मा । सहियां ए जाय मिलूं गिरनार, करम फन्द तोड़सां हे मा ॥ ने० ॥ ५ ॥ सेवक अति सुख पायके हे मा । सहियां ए मांगे छे शिवपुर बास, दया म्हारी लीजिये ए मा ॥ ने० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥



॥ अथ वैराग्य लावणी ॥





जब तनदोस्ती है इह मस्ती, काया मण्डल की, सासोस्वास समर ले साहिब आउ घटे दिलकी । खबर नही है जुगमें पलकी० ॥ सुकृत करणा हो सो कर ले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० ॥ १ ॥ तारा मण्डल रवी चन्द्रमा, सब ही चलाचल की। दिवस च्यार का चमत्कार है, बीजलियां झलकी ॥ ख० ॥ २ ॥ यो जुग है सुपन की माया, ओस बूंद जलकी । बिनस जावतां बेरन लागे, दुनिया जाय खलकी ॥ ख० ॥ ३ ॥ हंसा है देही में जब लग, खुसी है मंगल की । हंसा छाड चल्या जब देही, मिट्टी जंगल की ॥ ख० ॥ ४ ॥ मन म्हावत तन चञ्चल हस्ती, मस्ती है बलकी । सदगुरु अंकुश दिया आनके, बातां भई थलकी ॥ ख० ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बन्धव भाई, सब जन मतलब की । काया माया सत्बे कारमी, ए तेरे कबकी ॥ ख० ॥ ६ ॥ झुठ कपट कर माया जोडी, कर बातां छलकी । पाप की बोझं बंधी शिर तेरे, कैसे होय हलकी ॥ ख० ॥ ७ ॥ देव

धरम साहिबको समरण, ए बातां थलकी। राग द्वेष उपजे नही जिनकुं, बिनती अखैमलकी ॥ ख० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥



॥ सातवार लावनी ॥

॥ करता है कौन किसका—ए चाल ॥

॥ तुम सात बार-में खरची बांधो रे एक दिन जांवणा० ॥ टेर० ॥ सात बार में सबको जाना, जिसमें क्यां है फेर। रंक रावकूं सबकूं चलना, खरची ले लो लेर ॥ ले लो खरची लेर फेर पिछतावसो। बंधी मूठी आय खाली होय जावसो ॥ तु० ॥ १ ॥ सूर्य-बार में सूर्य उगे नित, आयु खण्ड ले जावे। घटी जावे सो पीछी नावे, रवि तो एम जतावे ॥ खरची बांधसो, मुनि लोकासूं प्रीत सैंठी थे साधसो। तु० । ॥ २ ॥ चन्द्र बार में करो चांदणी, तेरा घट रे माय। जिन सेती तो मिटे अन्धेरो, घट पट प्रगट दिखाय ॥ आखर तो जावण, राख्या न रहै लाख मेह अरु पांवणा ॥ तु० ॥ ३ ॥ मंगल बार में मंगल बरते, धर्म कियां सुख पासी। धर्म विना तो खाली

जासी, आखर तूं पिछतासी ॥ शास्त्र गाय छे, आंकी भली न बांकी भली, न आंख फिर मिचवाय छे ॥ तु० ॥ ४ ॥ बुध वार में बुध विचारो, जन्म मरण मिट जाय। राग द्वेषने पतला पाड़ो जिणशे नाम कषाय ॥ पातली पाडसो। ज्ञान थकी ग्रहो ध्यान समाधी चाडसो ॥ तु० ॥ ५ ॥ गुरु बार मे गुरु चेतावे। ऐसा करो व्यौपार। जिस में नफा हुवे अनन्ता, बाह बाह करे संसार ॥ ज्ञान कर हेरसी। तू सूतो छे कुण नीन्द, मोत आय घेरसी ॥ तु० ॥ ६ ॥ शुक्र बार मे सुकृत कर लो, धर ले गुरु को ध्यान। गुरु विना कछु पता न लगे, मत कर गुरु से मान ॥ ज्ञान उर राखजो। सुधरे जिम परलोक, बचन सुध भाषजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ थावर बार में थिर नहीं रेहना, चलना विश्वाबीस। जैन धर्म शुद्ध पालजो सरे, पाछी मारो रीस ॥ जश थे लीजियो, मुनि राम कहै सातबार में, सुकृत कीजियौ ॥ तु० ॥

॥ इति सात बार लावनी सम्पूर्णम ॥



॥ लावनी ॥

—***—

॥ गोरी चली सासरे फेर कभी तो आना—ए देशी ॥

॥ गत वस्तुका सोच कभी नहि करना० । सुख दुख किसके हाथ, मेटे कुण मरणा ॥ (ए टेर) एक धनवन्त नरका पुत्र बडा गुणवन्ता, कृतान्त पकडे आंन प्रांन कियो अन्ता । अब रोवे पीटे बाप अति अरउन्ता, रोक्यां नं रुके नेह मोह दुरदन्ता ॥ माता झुरे रे पुत्र त्रिया कहे कन्ता, था पूरब भवका बैर अहो भगवन्ता । इम बाप रोवे बिललात अरे पुन-वन्ता, दुर्लभ तुझ दरशन ऐसे बिलपन्ता ॥ तूं छिनमें गया छिटकाय विधंस करि घरणा ॥ ग० ॥ ॥ १ ॥ इण रीते बीते षट मास बास भये सूना, बस्यो श्मशाने बाप रोवे तिहां दूना । दिवांन गये समझाय एक नहि मांना, लोकहास्य घरहानि कहे कफखाना । घरके कहे दूख पाय करे जो सयांना, जिसका उत्तम उपगार जन्म भरमांना, एक चतुर विचक्षण पुरुष सुनी इम कांना, कहे एक रात्रि विच मिटाऊं ताना, यह उत्तम आचार टारे दुख परणा ॥ ग० ॥ २ ॥ जब आयो पूनमकी रात, बाबू जहां होता । रुदन किये इण भांत सकल सुन

रोता ॥ सुनत हिया फट जाय, भेद नहि पाया, कुण रोवे तूं केम बाबू बतलाया। मेरे तो पुत्रका दुख कलेजा जलता, तूं रोवे छे किन काज कायर हिय गलता। मैं रोऊं छूं चन्द्रमा काज सच मैं बोलूं, बाबू कहे मैं तोय मूरख सम तोलूं। करे लोक उपहास उसीसे मरणा ॥ ग० ॥ ३ ॥ आवे न चन्द्रमा हाथ प्राण जो खोवे, तूज सरीखा मूढ होवा नहि होवे। मैं प्रतक्ष देखूं आंख इसीकूं रोता। तुजे दीसे नहीं तेरा पुत्र प्राण क्यूं खोता। चन्द्र मिले नहि मोय पुत्र किम तेरा, दोनूं झूठी बात ज्ञान कर हेरा। सुन बाबू कूं आया ज्ञान अज्ञान सब हटिया, आया अपने गेह प्रभुकूं रटिया। मुनि शाम कहै सब बात हियामें धरना ॥ ग० ॥ ४ ॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम ॥

॥ लावनी ॥

॥ लाज मोरी रखले भवानी—ए चाल ॥

॥ चारकी उत्तर ही कहना, मैं तुझ देता हूं मैंना ॥ च्या० ॥ मोद जुत देह कौन कहिये ?, जगतमें आश्चर्य को लहिये ?। को पंथ ? का वात ? सरद:

हिये, च्यार ए उत्तर ही चहिये ॥ उत्तर च्यार कह दीजिये, तो जीवे बन्धु एक तोय । मोय सुणवा चाय है, सुणता आनन्द होय ॥ धोय पीछे मुहमें जल देना ॥ च्यांर के उत्तर सुन लेना, मैं तुझे देता हूं मैना० ॥ च्या० ॥ १ ॥ पञ्च वा छट्ठे वासर जाई, साक को पचते घर मांई । किसीका देना सिर नांई नोकरी विन मौज करे चोई ॥ राई भर परबस नही, करज कीसीका नांहि । नींद आपकी उठत है, मोद जुक्त जग मांहि । जहां कछु लेना न देना ॥ च्या० ॥ ॥ २ ॥ बात नां जग में कछु छानी, दिन दिन मरता है प्रानी । पाप रूप रहते अज्ञानी, पाप में हो रहै अगबानी ॥ मांनी नर जग एहवा, म्हे कदे न मरसां कोय । आंख्यां मरता देखही, क्या इनसे इचरज होय ॥ कोय तो अमर नही रैना ॥ च्या० ॥ ॥ ३ ॥ पन्थ नही एकसा सारे, मुनिका मत पिण है न्यारे । ग्रन्थ मत एक नही प्यारे ॥ पन्थ कोन है सचलो, कोन सा चाले सन्त । महन्त गये जिण मारगे, सो साचो है पन्थ ॥ तन्त तो पन्थ उसे बैना ॥ च्या० ॥ ४ ॥ मोहको कटाह जग भारी, रात दिन रूप इन्धन जारी । रवी ज्यां अगनी छे न्यारी । पचावै काल ही अधिकारी ॥ पचे प्राणी मात्र जे,

क्या बात इसीसे और । मुनि राम कहै धर्म ना करै, ते नर जंगली ढोर ॥ और क्या इधक इस से कैनां ॥ च्या० ॥ ५ ॥ कहै सो बन्धु जीव जियलाऊं, नृप कहै नकुल जियो चाहूं । भीमार्जुन मांगो समझाऊं, माद्रीको बंशही रखवाऊं ॥ कुन्ति नांम मैं राखहूं, माद्री नकुल रखाय । सूर कहै धन्य तुम धीरता, महिमा करी सुरराय ॥ आय मैं देखी निज नैंना ॥ च्या० ॥ ६ ॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥



॥ लावनी ॥

॥ बालम छोटो रे—ए देशी ॥

॥ सुखिया घर में जनमियो, दुखी थयो किण काज ॥ कर्मको आंटो रे०, कोई न खोलणहार ॥ कर्म० ॥ दुखी थकी सुखियो थयो, केई करता दीसे राज ॥ क० ॥ १ ॥ को० ॥ एक आतमा खोलणहार । क० । बड़ा तपस्वी अवलिया, केई पाले छै ब्रह्मचार । क० । केई श्रेणि चड़ पाछा पड्या, पण्डित पेले पार ॥ क० ॥ २ ॥ को० ॥ सिद्ध साधक बहु देखिया, फिर्‌यो फकीरां लार । क० । ग्रह गोचर

केई पूजिया, पूज्या पर्वत पहाड ॥ क० ॥ ३ ॥ को० ॥ किण विधि कर्मज बांधिया, किण विधि दिवी अन्तराय। क०। लाख उद्यम कर देखिया, पिण कुंण नही सक्यौ बताय ॥ क० ॥ ४ ॥ को० ॥ कोई श्रावक धोरी बाजिया, निन्दा करत अपार। क०। साधुकी करणी करै, पड्या निन्दा के लार ॥ क० ॥ ५ ॥ ॥ को० ॥ अरिहन्त नों विरहो पड्यो, अथयो केवल ज्ञान। क०। पूर्व धारी बिछदिया. किण विध पडे पिछांण ॥ क० ॥ ६ ॥ को० ॥ समकित ही आव्यां थकां, छूटे मिथ्या गांठ। क०। केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे क्षये आठ ॥ क० ॥ ७ ॥ को० ॥ अकल पिण चले नही, और चले नहि कछु जोर। । क०। मुनि राम कहे केवल विनां, मचियो घोरम घोर ॥ क० ॥ ८ ॥ को० ॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥



॥ लावनी ॥

—:o:—

॥ तुम चलो सखी कछु देर न करिये०। नेमीश्वरने यों कहना। तु०। बिन अपराध छोडी राजुल कूं, जाय ओलम्भा यों देना ॥ तु० ॥ १ ॥ सख

शृंगारी सज हुसयारी, सबही मुझ संग रहना। गढ गिरनार जाय स्वामीपै, दिलका दर्द सब कह देना ॥ तु० ॥ २ ॥ मुंह मचकोडी दे कर ताली, मुंह विचमें अंगुली घाली। नेम गयो सखी जावा दे नी, उनकी छिब होती काली ॥ तु० ॥ ३ ॥ अली ऐसो बात न कहिये आली, क्या देऊं तुझकूं गाली। अनन्त रूप श्री नेम विराजे, उनकी छिब मुझकूं व्हाली ॥ तु० ॥ ४ ॥ पञ्च मुष्टी लोच कीया आलोचे, चली सखियन के बृन्दनमें। कारी घटा उमटी घुमट अन्धेरा, विजुरी पसरी गगनन में ॥ तु० ॥ ॥ ५ ॥ मृगपति गाज ओगाज जिम मृगाली, तिम ही सब सखियन नाठी। जलधारा भीना सारा कपडा, दशो दिश सखियन नाठी ॥ तु० ॥ ६ ॥ राजुल गुफा मांहे पैठी, कपड़ा सारा सुकवाया। रह-नेमी ज्ञान ध्यान सब भूला, नगन रूप देखी काया ॥ तु० ॥ ७ ॥ रहनेमी बोले सुण हे सुन्दर, आपां रह सां घरबासे। दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, बार बार ए नहि आसे ॥ तु० ॥ ८ ॥ राजुल बोले सुण रह-नेमी, इम किम बोल रह्यौ मुजकूं। कहणो भलो न भलो तुज मरणो, धिक २ रहनेमी तुजकूं ॥ तु० ॥ ९ ॥ दे उपदेश विशेष हिय हरता, रहनेमी इण पर बोले।

गुरणी मात समांणी मोरे, तोरे जुगमें नही तोले ॥ तुं० ॥ १० ॥ राजमति सती सञ्जम लेकर, भव तरणी कीधी करणी। रहनेमी पिण केवल पांमी, दोनुं गये हैं शिव रमणी ॥ तु० ॥ ११ ॥ सम्बत् उगनीसे बसुधा बरसे, मधु मासे बिचरत आया. रामचन्द मुनि मन आनन्दे, उदियापुर में गुण गाया ॥ तु० ॥ १२ ॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम ॥



॥ लावनी ॥

—***—

॥ दोय नारंगी, दोय अनार०। धरी चीज कूं लोभी नटही. ॥ लगे कलेजे दाह अपार० ॥ मोटका झूठ तजो नरनार० ॥ लगे० ॥ १ ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुण देखी, कुण छे तेरे साईदार ॥ मो० ॥ २ ॥ करो पुकार चलो राज कचेड़ी, मेरी पैठ जाणे दरवार ॥ मो० ॥ ३ ॥ भरे शास्त्र सारे जग मोरी, तोरी कुण माने संसार ॥ मो० ॥ ४ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥ ५ ॥ परंभव बिगड़े स्यांनज जावे, दुख पावे बहु जमकी मार ॥ मो० ॥ ६ ॥ जक्ष पुञ्जहार भ्रातके छाने, मर

कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो०॥ ७ ॥ झूठी शाखी भरी थई नारी, छाती पर देवली रही जंम बार ॥ मो० ॥ ८ ॥ केवली भाषी सहु की साखी, ले बदलो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ९ ॥ मुनि राम कहै थापण रख नटसी, ते मर रुलसी बहु संसार ॥ मो० ॥ १० ॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम् ॥



॥ लावनी ॥

॥ मैं गुरुजी चेला तेरा, पड़ी जाज दरियाव वीचमें ।
पार लंघा बेड़ा मेरा—ए देशी ॥

॥ मैं अच्छा ही चाहता तेरा । पाखण्ड धर्मको छोड़ो, आतम धर्म रखो नेड़ा० । ज्ञान प्रकाशक आगम सों, आतमजी ज्ञायक, सब वस्तु केरो पावक । पावक आतम कहिये, दर्शन पाचक है गैहरो ॥ दर्शन करने सर्व पदारथ पचते हैं सूधी सरधो । विन सरधा कछु पचते नांही, ताते श्रद्धा दृढ़ कर दो ॥ दाहक आतम छे अग्नि सो, चारित्र रूप आतम बोले । विन चारित्र कछु कर्म न जलता, शास्त्र वीच सारा खोले । सूधी सुणिये

री, देख स्वरूप तुमारा। रहो पुदगलसे न्यारा, ज्यूं पार लंघे बेड़ा तेरा॥ पाखण्ड धर्म भरम कूं छोड़ो आतम धर्म रखो नेड़ा॥ इण आतमके दोय छे नारी जी, एक सुमती कुमती बीजी। कुमती को भरमायो आतम, नाच रह्यो करतो जीजी॥ सुमती जाया कुमर च्यार वर, प्रबोध १ विवेक २ शील ३ सन्तोष ४। कुमती जायां पञ्च कहाया, मोह १ काम २ तीजो रोस ३॥ मान ४ लोभ है ५ पुत्राभास ही आतम न घाले फोड़ा। मोह भणी निज राज सूंपियो, कांम तणा दौडे घोड़ा॥ आतम दुख अति पायो, सुमति पास सिधायो; प्रबोध नृप ठहरायो। टले राम विवेक सूं वखेडो, पाखण्ड धर्म भर्म कूं छोडो॥

॥ इति लावनी सम्पूर्णम्॥



॥ लावनी ॥

—※※※—

॥ गेहरो जी फूल गुलाबको—ए चाल ॥

तस थावर में भटकन्ता, बले अटकन्ता घाटी नव॥ नरसैणा०। दस दृष्टान्त दोहिलो, ओ तो पाम्यो मानव भव। न०। चेतो जी नर भव पायने०॥

थे तो चेतो रे २ चतुर सुजांण ॥ न० ॥ १ ॥ चे० ॥ गर्भावास में अवतऱ्यो, ओ तो बास दुर्गन्धी मायं । न० । मास सवा नव गर्भ में, दुख जाणे जिनराय ॥ न० ॥ २ ॥ चे० ॥ गर्भावास सूं नीसऱ्यो, ओ तो बिसऱ्यो पूरब बात । न० । रात दिवस बस्यो मोह में, वले सेवे बिसन सात ॥ न० ॥ ३ ॥ चे० ॥ परनारी प्यारी मिले, वले जारी कियां शिर धूल । न० । सारी ऋध खोवे हाथ सूं, थारी बात मानें सहु कूड ॥ न० ॥ ४ ॥ चे० ॥ सतगुरु भाषे देशना, ओ तो नर भव अमोल । न० । बार अनन्ती हारियो, पिण अबके तो सूरति खोल ॥ न० ॥ ५ ॥ चे० ॥ अरिहन्त देवने धारो, करजो सतगुरु सेव । न० । धरजो जी धर्म दया मध्ये, वले डरजो पाखण्ड कुदेव ॥ न० ॥ ६ ॥ चे० ॥ क्रोध मान माया लोभने, थे तो छोडो च्यार कषाय । न० । जो सुख चाहो जीवने, ए तो इम भाष्यो जिनराय ॥ न० ॥ ७ ॥ ॥ चे० ॥ मात पिता सुत भामिनी, वले तन धन सहु परिवार । न० ॥ एक न आवे परभवे, तूं तो अन्तर ज्ञान विचार ॥ न० ॥ ८ ॥ चे० ॥ देखोनि ऋध जादवां तणी जी, ते तो क्षिणमे गई बिलाय । न० । सुरवर नरवर थिर नही, जिम बादर नी

छाय ॥ न० ॥ ९ ॥ चे० ॥ कीधा कर्मज भोगवे, ए तो भोगव्या छूटको होय। न० ॥ कर्म बीज जिनवर कहै, ए तो राग धेष छे दोय ॥ न० ॥ १० ॥ ॥ चे० ॥ इम जाणी कर्म मती बांधो, वली साधो शिवपुर माग। न०। तप सञ्जम दोय मूल है, इम कहै श्री वीतराग ॥ न० ॥ ११ ॥ चे० ॥ दान शील तप भावना, ए तो शिवपुर मारग च्यार। न०। जो सुख चाहो शाश्वतां, तो इणसे राखो प्यार ॥ न० ॥ ॥ १२ ॥ चे० ॥ उगणीसे निधी मधु मास मे; ओ तो बास जालोर सुखदाय। न०। स्वामी बृधिचंदजी परसाद सूं, मुनिराम कहै चितलाय ॥ न० ॥ १३ ॥ ॥ चे० ॥

॥ इति लावणी सम्पूर्णम् ॥



॥ वीर स्तुति ॥

॥ राग—आसावरी जोगिया ॥





गत गुरु वीर जिनेश्वर स्वामी० । दीनं दयाल दया कर तारो, तुम अन्तर्गत जामी ॥ ज० ॥ १ ॥ कञ्चनको क्या कञ्चन करबो, लोह कठिन कर त्वांमी ॥ ज० ॥ २ ॥ मुझ पतितन को पावन कर हो, घूमित मोहि हरामी ॥ ३ ॥ पतित उधारण बिरुद तिहारो, तो मुझमे क्या खामी ॥ ४ ॥ प्रभु तुम बाणी पुनीत अपूरव, पुन्य संजोगे पामी ॥ ५ ॥ समकित जोत जगी घट अन्तर, गई है मिथ्यात गुलामी ॥ ज० ॥ ६ ॥ मो मन बस कीनो तुम महिमा, ज्युं वनिता बस कामी ॥ ज० ॥ ७ ॥ कहत 'बिनयचंद' प्रभु पद पंकजमें प्रणमूं नित सिर नामी ॥ ज० ॥ ८ ॥

—※—

॥ गुरु स्तुति ॥

॥ ख्याल की चाल ॥

॥ सतगुरु जी म्हांरा, दर्शण तो दीजे मोने कर मया० ॥ स० ॥ (टेर) सतगुरुजी तो कठिण दासुसे,

है अमृत से खारा। सतगुरुजी तो करंता बरते, रवी थंकी अन्धियारा जी ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी तो ऐसा मैला, मोती अथवा चंद। सतगुरु जी तो घणा ज्ञ ओछा, जेसे महा समंद जी ॥ स० ॥ २ ॥ छोटा पिण वे मेरु जैसा, खोटा चिंतामण रतन्न। थिर बासी तो कहिये अैसा, मन अथवा पवन्न जी ॥ स० ॥ ३ ॥ सतगुरु जी तो नित ही मोने, ज्ञान करी भरमावे। 'रामचंद' कहै सतगुरु हट कर, मुक्ति महेल ले जावे जी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥



॥ स्तवनं ॥

(१)

॥ हीरज्जाकी चाल ॥

॥ मेरा जीषड़ी पापी०, क्यौं न भजे जिनराज रे ॥ मे० ॥ क्या ले आया क्या ले जागा, सो मूरख नही बूझे। बांधे आया खोले जागा, इह तुमकूं नही सूझे रे ॥ मे० ॥ १ ॥ वीतराग तो देव न जांण्या, सूधा साध न मान्या। केवली भाषत धरम न धार्यो, फिरे तू खांचांताणा रे ॥ मे० ॥ २ ॥ गुणका गाहक कोऊ नाही, अवगुण गाहक ढेर।

खोटे खरे की परख नहीं है, एही बड़ा अन्धेर रे ॥ मे० ॥ ३ ॥ इस जग में कोई नही तेरा, तूं भी किसीका नाहीं । अपनी बाजी हारी तैने, गोलमाल के माही रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ चेत सके तो चेत मुसाफर, अभी तो कुछ नही बिगड़ा । खरची पले बांधो प्यारे, मिटे करमका झगडा रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ लोभ लहरकी नहर कहर में, सब दुनिया दुख पावे रे । सूधा रसता दीसे नांही, ऊजड मारग जावे रे ॥ मे० ॥ ६ श्री सुमतिनाथ जिनराज प्रभूका, मैंने लीया सरणा । 'इन्द्रचन्द्र' का कहै अबीरा, ध्यान प्रभू का करणा रे ॥ मे० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

(२)

॥ पांच म्होर रोकड़ ले लो, परण्या ने जंपर मेल्जो—ए देशी ॥

॥ परम मन्त्र नवकार शिरोमण, जिन वांणी टाली सब कूड़, जहां देख्या जहां कूड़ही कूड़० ॥ १ ॥ छांण कीया तो धूल ही धूल ॥ मन्त्र यन्त्र रसायन इण नांमे ; ठग खावे खाली मगरूड़ ॥ ज० ॥ २ ॥ इणसे नहि लक्ष्याधिप कुण सुणियो, गत लक्ष्मी ते सूणिया जरूड़ ॥ ज० ॥ ३ ॥ गुड़ तणी किम खांड बनेगा, गोमय को किम होवे गुड़ ॥ ज० ॥ ४ ॥ पद्मणी कांमणी बनै कहो कैसे, जिण घर शंखणी

कर्कसा फूड़ ॥ ज० ॥ ५ ॥ लाखको मूंठियो हाथमें पंहरें, किम बणै सोने को चूड़ ॥ ज० ॥ ६ ॥ किसकी सिद्धाई निजर न आई, उलटी ठगाई दीसे जरूड़ ॥ ज० ॥ ७ ॥ कह छूट बलद, कह छूटे जोतसी, मन्त्रवादी लूंटे अरूड़ मरूड़ ॥ ज० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहै मंत्र यंत्र के चाले, मत पडियो जावोगा बूड़ ॥ ज० ॥ ९ ॥

(३)

॥ ख्याली आया मुलतान से—ए देशी ॥

॥ तुम जाप जपो रे नमोकार को । सहु पाप धुपे रे जमवार को ॥ तु० ॥ १ ॥ श्रीमती लही फूलकी माला, कुष्ट गयो श्रीपालको ॥ तु० ॥ २ ॥ भील भीलणी नृप पद लहियो, पोरसो सिवहि कुमारको ॥ तु० ॥ ३ ॥ जिनदास सेठ बीजोरो लायो, बलीवर्द सुर अवतार को ॥ तु० ॥ ४ ॥ चोर छीके चढि गगन में उड़ियो, लह्यो सूली चढ्यो भवपार को ॥ तु० ॥ ५ ॥ पाण्डव त्रिया द्रोपदी केरो, विघ्न टलिसु भुजंगम न्हार को ॥ तु० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहै छे भव भव एहनो, शरण चाहूं रे सुखकार को ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति ॥

(४)

॥ खेलण दे गिणगोर—ए देशी ॥

॥ दीजै पार उतार, प्रभूजी दीजे पार

उतार० ॥ हूं अपावन पतित अधम छूं, तूं छे दीन दयाल। तूं कृपानिधी तूं छे दीन दयाल; मो अधम कूं पार उतारो, तूं छे परम कृपाल ॥ प्र० ॥ १ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर तूं छे, तूं ही शंकर मुरार। ब्रह्मा विष्णु हिरण्य तूंही, महादेव करतार ॥ प्र० ॥ २ ॥ स्वयंभू अर्हंत गणेश, बीतराग तीर्थंकार। कर्ता विश्वम्भर जगके भर्ता, तूं हरी श्याम उदार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तूं निरमोही निकर्मा, निरागी निराकार। पुरुषोत्तम निष्कलंक तूही छे, राम रहीम निर्द्धार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं प्रभु तारक कर्म बिदारक, बारक तूं संसार। सुख के कर्त्ता हर्ता दुखके, भर्त्ता त्रिलोकी सार ॥ प्र० ॥ ॥ ५ ॥ तूं भगवन्त सर्वज्ञ शिरोमणी, गुणको पारम्पार। मुनि राम कहे जिण पारस भेट्यो, किम रहे लोह विकार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

(५)

॥ सखी सुण वात सयाणी – ए देशी ॥

॥ ध्यान लगासां मन ठेरासां । नासा निजर जमासां, रेक मन्त्रको न्यास ठुमासां। हांक निजवर ना गुण गासां० ॥ निज गुण गासां वंछित पासां, पांसां शिव पुर वासा रेक जी ॥ हां० ॥ १ ॥ ध्याता ध्यान ध्येय ए तीने, निज गुण माहे रमासां रेक।

छोडा सब आसा पासा जी ॥ हां०॥ २ ॥ और ध्यान को छोडो प्यारे, देखो फेर तमासा रेक, होवे तेरे मांहि प्रकाशा ॥ हां० ॥ ३ ॥ अर्हं पदका ध्यान चढासां, दसमे द्वारे जासां रेक, झूठ नही जिन में मासां ॥ हां० ॥ ४ ॥ मुनि रामचन्द्र तो और न चाहे, रक्खो चरण के पासा रेक, मेटो प्रभू गर्भा वासा ॥ हां० ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥



॥ श्री मांगलीक सरणा ॥



ह ऊठी ने समरीजे हो (भवियन०) मंगलीक सरणा च्यार, आपद टाले सम्पदा हो । भ० । दौलत नो दातार, हियडे राखीजे हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधु तणो हो । भ० । केवली भाष्यो धर्म ए च्यारू जपता थकां हो । भ० । तूटे आठूं कर्म ॥ ही० ॥ २ ॥ भ० ॥ ए च्यारूंउ सुख कारिया हो । भ० । ए च्यारूं मंगलीक, ए च्यारूं उत्तम कह्या हो । भ० । ए च्यारूं तहतीक ॥ ही० ॥ ३ ॥ भ० ॥ गेले घाटे चालता हो । भ० ।

समरूं बारंबार, गावां नगरां चालतां हो । भ० । बिघन निवारणहार ॥ ही० ॥ ४ ॥ भ० ॥ डाकणं साकण भूतड़ा हो । भ० । सिंह चीता नै सूर, बैरी दुसमण चोरटा हो । भ० । रहै सदाई दूर ॥ ही० ॥ ५ ॥ भृ० ॥ सुख साता बरतै घणी हो । भ० । जे ध्यावे नर नार, परभव जातां जीवने हो । भ० । सरणा को आधार ॥ ही० ॥ ६ ॥ भ० ॥ राखो सरणा की आसता हो । भ० । नेड़ो नही आवै रोग, बरतै आनन्द सुख सही हो । भृ० । बाला तणो सञ्जोग ॥ ही० ॥ ७ ॥ भ० ॥ निस दिन याकूं ध्यावतां हो । भ० । जीव तणे उद्धार, कुमी नही कोई बस्त नी हो । भ० । यो ही जगमें सार ॥ ही० ॥ भ० ॥ ८ ॥ मन चिंत्या मनोरथ फले हो । भ० । बरतै कोड़ कल्याण, सुध मन करणै स्मरन्ता हो । भ० । निश्चै पद निरबाण ॥ ही० ॥ ९ ॥ भ० ॥ ए सरणानें ध्यावतां हो । भ० । नाम तणो आधार, ए सरणा की कीरती कही हो । भ० । ध्यावो मनह मझार. ॥ ही० ॥ १० ॥ भ० ॥ सम्वत अठारे बावने हो । भ० । पाली सेहर सुखकार, चोथमल इम वीनवै हो । भ० । सुणज्यो बाल गोपाल ॥ ही० ॥ ११ ॥ भ० ॥

॥ इति माङ्गलीक सरणा ॥

॥ अथ नवकार स्तवंन ॥

॥ सुख कारण भवियण समरूं श्री नवकार, जिण सासण आगम चवदे पूरब सार । इण मन्त्र नी महिमा, कहिता न लहे पार; सुर तरु जिम चिन्तित बंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करें कर जोड़, भू मण्डल बिचरे तारे भवियण कोड़ । सुर छन्दे बिलसे अतिसे जास अनन्त, पहिले पद नमिये अरि गञ्जण अरिहन्त ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवन्त, पञ्चमी गत पहुंचा अष्ट करम करि अन्त । कल अकल सरूपी पचानन्तक देह; सिद्ध ना पाय प्रणमूं, बीजे पद बलि एह ॥ ३ ॥ गछ भार धुरन्धर सुन्दर ससि-हर सोम, करि सारण बारण गुण छतीसे थोम । श्रुत जाण सिरोमण सागर जेम गम्भीर, तीजे पद प्रणमूं आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगर सूत्र भणावे सार, तप बिध संयोग भाषे अरथ विचार । मुनिवर गुण जुत्ता ते कहिये उवज्झाय, चौथे पद प्रणमूं अहनिस तेहना पाय ॥ ५ ॥ पञ्चाश्रव टाले पाले पञ्चाचार, तपसी गुणधारी बारी विषय विकार । त्रस थावर पीहर लोक मांहे ते साध;

त्रिविध नित प्रणमुं, परमारथ जिन लाध.॥६॥ अरि करि हरि सायण डायन भूत बेताल, सवि पाप पणासें थाए मंगल माल । इण समरयां संकट दूर टले तत-काल, जंपे जिण गुण इम सदगुरु सीस रसाल.॥७॥.

॥ इति स्तवन सम्पूर्णम् ॥

॥ पुनः ॥

॥ श्री नवकार जपो मन रंगे श्री ज़िन शासन सार री माई० । सर्व मंगल मांहे पहलों मंगल जपतां जयजय कार री माई ॥ श्री० ॥ १ ॥ पहिलो पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमुं श्री अरिहन्त री माई । अष्ट करम वरजित बीजे पद ध्याऊं, मैं सिद्ध अनन्त री माई ॥ श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजे पद समरूं गुण छत्तीस निधान री माई । चौथे पद उवझाय जपीजे, सूत्र सिद्धान्त सुजाण री माई ॥ श्री० ॥३॥ सर्वसाधु पञ्चम पद प्रणमुं पञ्च महाव्रतधार री माई। नवपद अष्ट यहां छे सम्पद अडसठ वरण सम्भार री माई ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सात इहां गुरु अक्षर एह में एक अक्षर उचार री माई । सात सागरना पातिक जावे पद पञ्चास विचार री माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ सम्पूर्ण पण सैय सागरना पाप पलावे दूर री माई । इह भव क्षेम कुशल सुख सम्पदा पर भव ऋद्धि

भरपूर री माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ईरति सोवन पुरसो सिद्धो शिव कुमर इण ध्यानरी माई। सरप फीटी हुई फूलनी माला श्रीमति ने परधान री माई ॥ श्री० ॥ ७ ॥ यक्ष उपद्रव करतो निवारयो परचौ एह परसिद्ध री माई। चोर चण्ड पिंगलनै हुण्डक पांमी सुर नर ऋद्ध री माई ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पञ्च परमेष्टि मन्त्र उत्तम चौवदे पूरव सार री माई। गुण बोले श्री पदमराज गुरु महिमा जास अपार री माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति ॥

श्री मन्दिरजीसे बन्दना, नित हुयजो हमारो ॥ टेर० ॥ १ ॥ इहां तो आरो पांचमो, जिहां चोथो जी आरो। तुम तो सुखमा भोगवो हम को न संभारो ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंघा विद्या चारिणी कोई लब्धि न दीसे, किम कर प्रभु पद भेटसूं, मनडो घणो हीसे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बीज तणो एह चांदलो, जिन साथ हमारो। जाय पहुंचगी बन्दना, जिन कहवो चितारो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्री श्रीनन्दन अंसके अंगज सत कीनो। रुक्मणी राणीजीके बालवो, पदवी रप नवीनो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ सपने अन्तर प्रभुजी मिल्या, भयो परम आनन्दो। कहै जसवन्त सागर सुणो, भयो नन्द सुनन्दो ॥ श्री० ६ ॥ इति ॥

॥ हितशिक्षा दोहा ॥



सील रतन मोटो रतन, सब रतनांकी खान ।
तीन लोककी सम्पदा, रही सीलमें आंन ॥ १ ॥
नवतत्त्व जाण्या ही नही, रक्षा न करि छय काय ।
सूना घरनो पावणो, ज्युं आवे ज्युं जाय ॥ २ ॥
जब लग जिनके पुन्यको, पूगो नहीं करार ।
तब लग उनकूं माफ है, गुनाह करो हज़ार ॥ ३ ॥
पुन्य खीण जब होत हैं, उदय होत है पाप ।
दाझत बनकी लाकड़ी, प्रजलित आपही आप ॥ ४ ॥
ज्ञान गरीबी गुरु बचन, नरम बचन निरदोष ।
एता कबहु न छोड़िये, श्रद्धा सील सन्तोष ॥ ५ ॥
अवसर वीत्यो जात है, अपने बस नहि होत ।
पुन्य छतां पुन्य होत है, दीपक दीपक जोत ॥ ६ ॥
चड़ उतंग जासे पतन, सिखर नहीवो कूप ।
जिण सुख अन्तर दुख बसे, वो सुख भी दुख रूप ॥७॥
समझू संके पाप सें, अण समझू हरषंत ।
वे लूखा वे चीकणा, इण विध कर्म वधन्त ॥ ८ ॥
जे सम दृष्टी जगतमें, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
अन्तरगत न्यारो रहे, जिम धाय खिलावे वाल ॥९॥

सुणियो जितरो सहु करे, तो पहुचे निरवाण। पिण केयुं एक हिरदय राखजो, थु सुणियारो परमाण ॥ १० ॥ छने भूलो चउदे चूकों, नहि जाने बारे रो नाम। गांम ढिंढोरो फेरियो, श्रावक म्हारो नाम ॥ ११ ॥ गई बस्तु सोचे नही, आगम चिन्ते नाहि। वरतमान बरते सदा, सो ज्ञानी जग मांहि ॥ १२ ॥ धन अनन्ति बार पामियो, धर्मज पायो नाहि। वे दलिद्री सारिखा, किसी गिणती रे माहि ॥ १३ ॥ इण्डाना सरबत करे, जीव मारने खाय। वे बादसाही भोगवे, पुरब पुन्य पसाय ॥ १४ ॥ बुरा बुरा सब कोई कहे, बुरा न दीखा कोय। जो घट खोजूं आपना, तो मुझसा बुरा न कोय ॥ १५ ॥ छूटू पिछला पापसें, नवा न बांधू कोय। श्री गुरुदेव प्रसाद से, सफल मनोरथ होय ॥ १६ ॥ धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निरवाण। धर्म पन्थ जाणे नहीं, ते नर पशू समान ॥ १७ ॥ दीठा जिसडा भाषिया, कहाज झीणा भाव। निर्लोभीके वचनमें, संका मूल न लाव ॥ १८ ॥ तप जप सञ्जम दोहिलो, औषध कडुवी जाण। सुख कारण पीछे घणु, पावे पद निर्वाण ॥ १९ ॥ काम भोग प्यारो लगे, फल किंपाक समान। मीठी खाज खुजालतां, पीछे

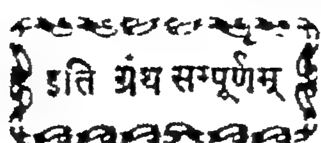
दुखको खान ॥ २० ॥ जो मैं जीव विराधिया, सेव्या पाप अटार । प्रभू तुमारी साखसे, बार २ धिक्कार ॥ २१ ॥ जाकी भव थिति पक्कही, ताको इह उपदेश । खरो मारग वीतराग को, फूड़ नही लव लेश ॥ २२ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकार स्तुति ॥

॥ पढो मन्त्र नवकार सदा संकट उवारे । पढो मन्त्र नवकार ताव तेजरा निंवारे ॥ पढो मन्त्र नवकार होय भाग्य भण्डारा पूरा । पढो मन्त्र नवकार सदा कायर नर सूरा ॥ पढिये मन्त्र जिनवर तणा दिन दिन जसको चढै । नवकार मन्त्र पढ्यां पीछे और मन्त्र कांई पढै ॥ इति ॥

ब्राह्मी चन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ॥
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे कुर्वन्तु वो मंगलं ॥१॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ।
प्रधानं सर्वधर्म्माणां, जैनं जयतु शासनं ॥ २ ॥



तिणसूं वन्ध गई थारे कर्म री राशक ॥ सती० ॥ ॥ ११ ॥ काल कितोयक वीतां पछें, साधव्या आई तिण नगर मझारक। ते वाणी सांभल तेहनी, वैराग सूं लीधो संयम भारक ॥ तपस्या करि अणसण कीयो, आलोया विना एतलो फेरक। कीधु हो कर्म न टूटिये, तेरे घड़ीरा हुवा वरस तेरक ॥ सती० ॥ ॥ १२ ॥ सिंहरथ पुत्र ते तप करी, तुझ कूखे आय लियो अवतारक। साथे पड़ोसण दुख सहे, ते पिण चोरी ना फल विचारक ॥ पवन जी वरुणसूं जुध करी, पाछां आवसी निज घर मझारक ॥ सती० ॥ ॥ १३ ॥ ए साध कह्यो सन्तोषवा, और नही कोई कारज लिगारक। बीजो साधु ने निमत्त भाषणो नहीं, ए तो आगमविहारी हुंता अनगारक। त्यां कह्यो उपगार जांणने कर दीयो तिहांथी उग्रविहारक। भारण्ड पंखी तणी परे, आचार पालै छे निरतिचारक ॥ सती० ॥ १४ ॥ हिवे तिण काल ने तिण समै, तलैटी आयने गूंजियो सिंहक। जब जीव त्रास पांम्यो घणी, धड़हढ धूज नै पामिया वोहक ॥ तिणही सिंह तणो सबद सांभल्यो, अंजणां भय पाम्यो तिण वारक। जब वस्तमाला इम ऊचरे, बाई देव गुरु धर्म समरो नवकारक ॥ सती० ॥ १५ ॥

हिवे वसतमाला बिरखें चढी अंजणां सागारी किधो सन्थारक । नाम जपे जगनाथ नो जाणे रे ध्यान चढ्या अणगारक ॥ चिहुं गति जीव खिमावती च्यारे सरणा चिन्तबे चित मझारक । कहे केसरी रूठी काया हरे, पिण म्हारो धरम न लेवे लिगारक ॥ सती० ॥ १६ ॥ कहे वस्तमाला इम ऊचरे, कहे अंजणां म्हांहा सती छे निरधारक । मोटे रे सबद हेला करे, कोई देव देवी आयो इण वारक ॥ कोई स्वजन होवे अंजणां तणो, ते पिण बेग सूं आवज्यो धायक । उपसर्ग पड्यो अति घणो, बसतमाला बोले एहवी वायक ॥ सती० ॥ १७ ॥ तिण बन मांहि व्यन्तर जक्ष रहे, ते वार जोजन तणो रुखवालक । ते जक्ष कहे जक्षणी भणी, आपने शरणे आवीं दोय बालक ॥ तिण सूं रक्षा करा आपां एहनी इम चिन्तवी सादूलो रूप कीयो तेहक । तिण सादूला सिंहने पराभवी काढ दियो दूर बनने छेहक ॥ सती० ॥ १८ ॥ साहज देई अंजणां भणी, देवता बोले छे एहवी वायक । सतियां मांहि तूं निरमली थांरा गुण पूरां मोसूं कह्या नहीं जायक ॥ हिवे कलंक उतरसी ताहरो कुशले आवसी पवन कुंमारक । वले मांमो थांहरो इहां आवसी, तूं निचन्त रहे इण

वनह मझारक ॥ सती० ॥ ९९ ॥ एहवा बचन सुणी देवता तणां, वनमांहे दोनु रहे अवीहक । बन फल फूल तिहां वावरे, जिनधर्म तणी नही लोपे रे लीहक ॥ सम्यकव्रत पाले निम्मला, अहोनिश करे छे जिन तणो जापक । तपस्या करे अति आकरी अंजणां काटे छे सञ्चिया पापक ॥ सती ॥ १०० ॥ सती रे शिरोमणि अंजणां, जायो हनुमंत कुमारक । चैत्र मास धुर अष्टमी, पुष्य नक्षत्र आयो श्रीकारक । रातरा पाछला पहरमें अंजणां जन्मियो हनुमन्त कुमारक ॥ असुच टाली तिण अवसरे, दासी ने कहे अंजणां आंमक । महोच्छव करसी कुण एहना, कटकमें गयो छे आपनो स्वामक ॥ स० ॥ १०१ ॥ चांदणी रात पूनिम तणी, अंजणां कर धर बैठी छे नन्दक । चञ्चल चपल सुहामणो, दीठां पामें घणो हरष आनन्दक ॥ हरष बोलावे रे मायड़ी, कुमर तणी अजे छे लघू जी बेसक । तारा ने ताके रे वाल्हड़ो, जांणे के चन्द नें लेय झपेटक ॥ सती० ॥ १०२ ॥ हिवे मांमो अंजणां सती तणो, सूरसेन राजा तेहनो नामक । देसन्तर जायने पाछो वल्यो, आकांसे विमांण ऊभो तिण ठामक । बन मांहि दीठी वे वालिका, इचरज पामीने मोकली नारक ।

जब मांमीये अंजणां ओलखी, नैणांमें छूटी छे जल-
तणी धारक ॥ सती० ॥ १०३ ॥ गले लगी विहुं
घणी अरड़ी, एतलै मांमो आयो ततकालक ।
अंजणां ओलखीने मिल्यो, अंजणां रोवे छे आंसूड़ा
रालक ॥ डीलसूं अलगी हुवे नही, बालक जिम
गले बिलगी छैं ताहिक । जब खोलामैं बैसाणि
धीरपै, बाई हिव करसूं तुम तणी आसक ॥ सती०
॥ १०४ ॥ हिवे अंजणां कहे मामां भणी, माथे
आयो म्हारे अणहुंतो आलक । तिणसूं सासरा थी
काढ़ी मो भणी, पीहर मैं किण ही नही कीधी
सम्भालक ॥ वले आंण देवाड़ी राय धर घरे, तिण
कारणें आई हूं बनह मझारक । मामाजी पाप पोते
घणो, करुणां न कीधी म्हारी किण ही लगारक ॥
सती० ॥ १०५ ॥ हिवै वेस बिमाण में सञ्चरया,
अंजणां रे खोले में हनुमन्त कुमारक । दीठो तिण
मोत्यांरो झूंमको, कूदी ने चञ्चल दीधी छै फालक ॥
तोड़ी मोत्यांरी लड़ भुयें पडी, अंजणां मुरछा पामी
तिण बारक । तब मांमो लेई पुत्र भणी, आंण मेल्यो
अंजणां हीये पासक ॥ सती० ॥ १०६ ॥ बांह झाली
बैठी करी, मामो बोलै तिहां बोल रसालक । कहै
देस प्रदेस मैं हूं फिरयो, पिण एहवो कदै ही न देख्यो

बालक ॥ एहवा वचन कहे अंजणां भणी, आयो छे हनु पाटण मझारक । करै महोच्छव अति घणो, नाम दीयो हनुमन्त कुमारक ॥ सती० ॥ १०७ ॥ अंजणां हनुमन्त इहां रहे, पवनजी पहुंता छै लंका-पुरी जायक । तिहां रावण राजा सूं मुजरो कियो, जव रावण बोले छै एहवी बायक ॥ पवनजी आद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो मैलाणक । बरुण राजानें हठायने, वरतायजो तिहां म्हारी आंणक ॥ सती० ॥ १०८ ॥ हिवे मेघपुरी दल सञ्चरी, साहमा बरसे तिहां बाणना मेहक । पिण पवनजी पग नही चातरे, माहोमांहि मनुष्य मुवा घणा तेहक ॥ बरस दिवस विग्रहो रह्यो, पछे मांहोमांहे मेल कियो ताहिक । आंण बरताई रावण तणी, पवन जी हरष पाम्यो मन मांहिक ॥ सती० ॥ १०९ ॥ हिवे कटक आयो रे लंका भणी, राजा रावण ने कीयो जुहारक । जब रावण बस्त्र बागा आपिया बले आप्या छै सोभता घणा सिणगारक ॥ कोयक दिन तिहां राखिया, पछै रावण सीष दीधी तिणं वारक । पवनजी आद राजा भणी, ते आयो छे निज नगर मझारक ॥ सती० ॥ ११० ॥ पवनजी कुशले घर आविया, मात पिता तणे लागो छे पायक । जैतले माता

भोजन करै, तेतले अंजणांने घर जायक ॥ सूना मैहल नें मालिया देखिया, कुरलै छै तिहां अति घणा कागक । पूरब बीती बात कानां सुणी जब पवन रे लागी छे अति घणी आगक ॥ सती० ॥ १११ ॥ हिवे पवनजी तिहांथी नीकल्या, माता पिता आया लारै तिण बारक । बांह झाली पवननें इम कहे, हिवे तूं तो जीम्रो च्यारूं ही आहारक ॥ हूं वहूने आंण मंगावसूं, पवनजी साहमा ने जोवे रे तामक । बांह छोड़ाय माता कने, गया छे राजा महिन्द नै गामक ॥ सती०. ॥ ११२ ॥ हिवे माता रोवे मुख ढाकने, कांम बमासि नही कीधो रे एहक । दल भणी जन नही मोकल्यो; अंजणां ने नही राखी रे गेहक ॥ काची रे बुध नारी तणी, केतुमती राणी चिन्तवे एमक । धिग २ मुझ जीवत भणी, मै पापणी कीधो अति भूण्डो छे कामक ॥ सती० ॥ ११३ ॥ हिवे पवनजी कहै मन्त्री भणी, हूं सासू सुसरा सूं किम करूं प्रणामक । म्हारी माता ने पराभवी, तिणसूं सुसरालमें गई माँहरी मामक ॥ हिवे हूं ऊंचो होईरे किम बोलसूं, हिलमिल नें बात करूंला केमक । वले अंजणां राणी मो ऊपरे, किण विध धरेली हरख नें प्रेमक ॥ सती० ॥ ११४ ॥ मन्त्री कहे सुण

कुमरजी, आपतो गया था कटक मझारक। लारैसूं काढ़ी अंजणां भणी, आपरो दोष नही छे लिगारक॥ इम कहे पवन कुमर भणी, चाकर मेलियो नगर मझारक। कहै पवनजी आंण पधारिया, जब अञ्जणा नै पीहरे हुई चिन्ता अपारक ॥ सती० ॥ ११५ ॥ महिन्द कहे हूं पापियो, मैं दुष्ट अकारज कीधो रे जाणक । हांजि २ लोक म्हारा घणा, पिण डाहो नही कोई चतुर सुजाणक ॥ मैं हां लोक कथन बली कहे, तो म्हारा मनरी उतरसी रीसक । नरक नीयाणो मैं बांधियो, हिवे दुष्ट कर्माथीं केम छूटीसक ॥ सती० ॥ ११६ ॥ पवन जी आण पधारियो, सांभल सासूरे शिर पकड़ी झालक । पेट कूटे दोनूं हाथसूं, उदर आधान किहां गई बालक। मन मांहे दुख वेदे घणो, जाणे कोई जोरसूं लागा छे वाणक। अञ्जणा नो दुख वेदे घणो, तिम २ बोले छै रोवती बाणक ॥ सती० ॥ ११७ ॥ साथे सैन्या लेंई चतुरंगणी, सुसरो जमाई ने साहमो जी जायक। बांह पसारी दोनुं मिल्या, दोनांरे दुख घणो घट मांहिक॥ जब पवनजी कहै राजा भणी, तुम पुत्री ने काढ़ी छै हम तणी मायक । ए दोस नहीं मूल म्हारो, जब राजा सूं पाछो बोल्यो नही जायक ॥ सती०॥११८॥

हिव पवनजी ने निज घर आणनै, मरदन करने कीध सिनानक। बले चोवा चन्दन चरचिया, गैहणा वस्त्र पहेरिया प्रधानक। पछे भोजन मंडप आयने, परूसिया भोजन विविध पकवानक। पिण पवनजी कबो भरे नहीं, अञ्जणा ऊपरे लाग रह्यो अन्तर ध्यानक॥ सती०॥ ११९॥ पिण पवनजी मन माहे चिन्तवै, जो पुत्र जायो हुवे तो बधाईजी थायक। बस्तमाला पिण दीसे नहीं, एम बिचार करै मन माहिक॥ अञ्जणारी मांय तिण अवसरे, चिन्ता मन में करे जी अपारक। कहे हूं पापणी तो मोटकी, मैं अंजणाने न राखी रे घरह मझारक॥ सती०॥ १२०॥ हिंवे सालानी सुता रे नाहनड़ी, तिणने पवनजी कीधी छै खोले मझारक। कहे थारी भुवा जी स्युं करे, ते रुदन करीने बोली तिण बारक॥ मात पिता ने वन्धव सहू, सगलाई कीधो छे कर्म चण्डालक। आंगण न राखी आधी घड़ी, कलंक सुधी ने काढी ततकालक॥ सती०॥ १२१॥ एहवा बचन सुणी बालक तणा, पवन जी दूर फैंक दीधो थालक। महेन्द्र राय पगामें आय पड्यो, तब मंत्री कहे तूं तो मूरख बालक॥ कलंक सोधी कीधो नहीं बिन रे बिचार्या काढी रे बालक। अकल भ्रष्ट हुई

छै थाहरी कटुक वचन कह्या तिण वारक ॥ सती० ॥ १२२ ॥ हिवै प्रहस्त मन्त्री कहे पवन ने, बोले छै मुख थकी एहवी वायक। ऊठो स्वामी किम वैसी रह्या, अंजणा नी खबर करां वेगा जायक ॥ मुई छै के अथवा जीवती, सुख दुख भोगवै छे किण ठांमक। एहवा वचन सुणी मन्त्री तणा, अंजणा ने दोनुं जोवा चाल्या छे तामक ॥ सती० ॥ १२३ ॥ जब महेन्द्र राजा पिण साथे हुवो, बले पहलाद राय आयो तिण साथक । बले माता पिण आई छे रोवती, सांभल पुत्र एक म्हारी बातक ॥ अम्हे खबर करास्यां अंजणा तंणी, थे तो जावो निज नगर मझारक। नारी काज लाज छोडो मती, पवनजी नहीं मांनी बात लिगारक ॥ सती० ॥ १२४ ॥ तब अनेक विमान चलाविया, बले सूरमा पुरुष फेरया असवारक । ठाम २ जोवे अंजणा भणी, मुखसूं बोलै छै पवन कुमारक ॥ जो सती लाभे तो जीवसूं नहीं तो अकाले कर देसूं जी कालक। देश परदेश फिरतां थकां, अंजणा सुणी छै निज मोसालक ॥ सती० ॥ १२५ ॥ जब पवनजी चाल्या आगलै, पाछे आवै जी सगलोजी साथक । जब बसन्तमाला यें पवनजी ने ओलख्यो कहै अंजणां ने आव्यो छे तुम

तणो नाथक ॥ जब अंजणां आय पाय पड़ी, खोला में बेसाड्यो हनुवन्त कुमारक ॥ सती०॥ १२६ ॥ बसन्तमाला आय-पाए पड़ी, हीयासूं भिड़ी छै पवन कुमारक। कहो प्रिया दुख तुम किम सह्या, किम सही म्हारी मायनी मारक ॥ किम करि वन फल कीणिया, किम करि रही वनह मझारक। किम करि काल गमावियो, किम करि पाल्यो हनुवन्त कुमारक ॥ सती० ॥ १२७ ॥ स्वामिजी आप कटक में पधारिया, सासरै पीहर म्हांने दीयो जी छेहक। तिणखुं करि मैं बनमें गई, बन फल भख्यने काढिया दीहक ॥ तिहां मोटा मुनिवर भेटिया, वले देवता कीधी छै हम तणी सारक। रात दिवस धरम पालतां, मामो लेइ आयो इण नगर मझारक ॥ सती० ॥ १२८ ॥ वले बसन्तमाला अने अंजणां, पवन ने बोले छै जिम धुर हुई बाणक। आप किम कटक में सञ्चर्या किम सह्या राजा बरुण ना बाणक ॥ जब पवन कुमार इसड़ी कहै, मैं वरुण राजा सूं कीयो जुद्ध तेथक। जब घाव लाग ने साजा हुवा, जीत फते कर आयोछूं एथक ॥ सती० १२९ ॥ हिवै अंजणां सती तिण अवसरे, सासू सुसरानें लागी जी पायक। जब सुसरो आंख्यां आंसू भरै, मैं कलंक देईने कीधी जी

अन्यायक ॥ अंजणां पाय नमी कहै, बापजी केम करो छो विलापक । दोस नहीं छै तुम तणो, पोते छै म्हारा बोहला पापक ॥ सती० ॥१३०॥ बले माता पिता सूं जाय मिली, भाई भोजायां सूं अति घणो नेहक । मात पिता ते रोवे घणा, अंजणां मात पिता नैं कहै छै तेहक ॥ थे चिन्ता करो किण कारणे, पोते छे जी म्हारे बोहला पापक । तिण कारणे मैं दुख भोगव्या, भूल न करजो कोई सन्तापक ॥ सती० ॥ १३१ ॥ हिवे हणु पाटण चालिया, अंजणा ने मामै आपी घणी आथक । साथे आयो पहुंचायवा, चतुरंगणी सेना लई साथक ॥ साथे तो परजा अति घणी, रतनपुरी आया मोटे मण्डाणक । उछरंग मन माहे अति घणी, घर घर बरत्या छै कोड़ कल्याणक ॥ सती० ॥१३२॥ हिवे सीख देई मामा भणी, अंजणा सती ने पवन कुमारक । सुख भोगवै संसारना, माहोमाहि लगी रही प्रीति अपारक ॥ काल कितोक गया पछी, राजा रानी खारो जाण्यो संसारक । राज देई पवनजी भणी, मोटे मण्डाण लीधो संजम भारक ॥ सती० ॥१३३॥ पवन नरिन्द राज भोगवें, अंजणां राणी सूं हेत विशेषक । हनुवन्त कुमर विद्या भणै, बानरी आदि विद्या भणी अनेकक । चतुर विचक्षण

अति घणो, देस परदेस मे हुवो जी विख्यातक।
बसन्तमाला रो मान बधारियो, सगलाई पूछी करै
तेह नैं बातक ॥ सती० ॥ १३४ ॥ हिवै वरुण राजा
तिण अवसरे, आपना पुत्रां ने जांणी सजोरक।
दूजा ने थापे नही, मन मांहि धरे अति अभिमानक ॥
तिण लंका भणी दूत मोकल्यो; जो थारे जुद्ध कर
वा तणी भावक । तो बीजा सुभट दल मोकली,
तुम्हे एकर सूं जावो मुझ आयक ॥ सती० ॥ १३५॥
रावण सेना मेली घणी, एक तेड़ो मेल्यो रतनपुरी
माहिक । जब पंवन राय जावा ने सज हुवा, जब
हनवन्त कुमार बोले एहवो बायक ॥ कहे कटक
माहि हूं जांवसूं, जब अंजणां सूं पवन जी कहे छे
आमक । पुत्र तूं अज बालक अछै, कटक माहैं नही
थारो कामक ॥ सती० ॥ १३६ ॥ हनवन्त हठ कर
चालियो, माहिन्दपुरी जायं कियो जी मिलानक।
तीन पहर दल आफल्यौ, बन्धन बांध्यो नाना नै
जायक ॥ सूरसेन राजा आय लाजियो, बन्धन
छोड़ीने कीयो जी परणामक । कहे म्हारी माता ने
राखी नही, तिण कारण मै आय कियो संग्रामक ॥
सती० ॥ १३७ ॥ हिवे हनवन्त आयो लंका मद्धे,
सांहमो आयो छे रावण रायक । हनवन्त कुमार ने

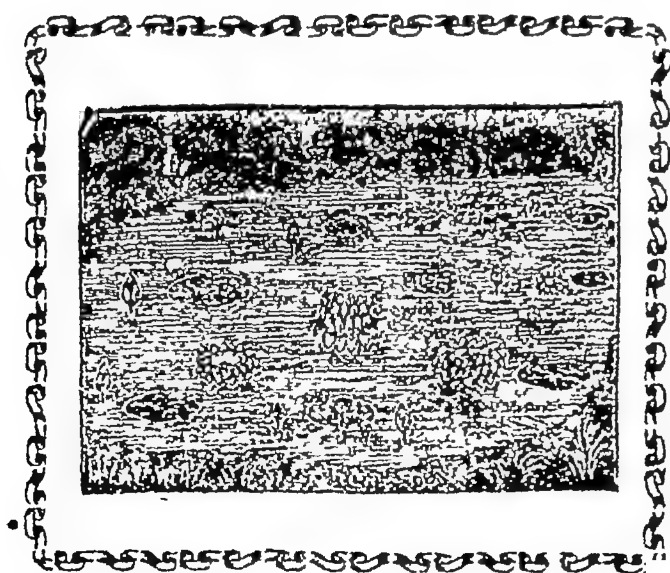
देखने रावण पामियो अति हरष आनन्दक ॥ बीड़ो झाली ने हनवन्त नीकल्यो, बीजा पिण चाल्या अति घणा रायक । साह्मो आयो कटक वरुण नो, जुद्ध हुवो घणो माहो जि माहिक ॥ सती० ॥ १३८ ॥ रावण की सेन्या देखी करी, सौ पुत्र वरुण ना चाल्या तिण बारक । जुद्ध करवा लागा तिण समै, लोहना बाण मूकै जांणै अंगारक ॥ गोली गोला ने बाण बहे घणा, काम आया बड़ा २ जोधारक । जब रावणकी सेन्या नासी गई, सैंठो ऊभो रह्यो हणुवन्त कुमारक ॥ सती० ॥ १३९ ॥ घणा लोक कहे हणुवन्त ने, तूं मात पिता ने अलखावणो बालक । तिण सूं तो ने रण मे मेलियो, कर जावसी तूं तो रे कालक ॥ बलतो हणुवन्त इम कहे, बरुण ने पुत्र मिली आवजो साथक । बातां कियां सूं खबर नहि बल तणी, खबर पड़े रण मे बीर रा हाथक ॥ सती० ॥ १४० ॥ बानरी विद्या साधी करी, बानर रूप कीयो तिण बारक । बारे जोजन मे वृक्षादिक होता, ते ले नाख्या वरुण नी फोज मझारक ॥ काना कतूहल किया बरुण नीं फोजमे, बले लांबो पूंछ विकुर्व्यो तिण बारक । सौ पुत्र बरुण राजा तणा, बांध लिया तिण पूंछ मझारक ॥ सती० ॥ १४१ ॥ रावण राजा कहे हणुवन्त

ने, तूं बानरी विद्या ने मेलदे दूरक। पछे जीत पामजे रणं विषै, तो हूं जाणू तोने मोटको सूरक्र ॥ जब हणुवन्त विद्या मेलि बानरी, मुलगो रूप करी मेलै छे बाणक। जब बरुण राज इम चिन्तवे, ए बालक दीसे छे महा बलवानक ॥ सती० ॥ १४२ ॥ हिवे जुद्ध करणने बरुण राजा उठियो, हणुमन्त कुमर सूं मांडी छे राड़क। दोनुं जणा हाथ चालवे, तिहां मुष्टना बाजि रह्या परहारक ॥ रावण राजा तिण अवसरे, हणुवन्त ने ऊपरं कीयो हाथक। जब हणुवन्त बरुण राजा भणी, बांधीनै नाखि दीयो रण माहिक ॥ सती० ॥ १४३ ॥ हणुवन्त बोले बन्धन तोड़ूं थाहरा, जो रावण राजा रे लागे तूं पायक। जब बरुण कहे वीतराग ते विनां, और रा पाय बांदूं नही जायक। चारित्र लेनो माहरे, तब हणुवन्त बन्धन तोड़िया तामक। बरुण लीयो चारित्र बैराग सुं, तिंणरा पुत्र ने राज्य दीयो रावण रायक ॥ सती० ॥ १४४ ॥ रावण हणुवन्त ने प्रसंसियो, तूं सूर बड़ो थारी लघु जी बेसक। तें मोटा राजा ने हठावियो, रीझ देई आयो लंक नरेशक ॥ परणाई भाणजी आपणी, सीष देई सनमान सतकारक।- वले हणुवन्त [illegible] णी, रूपवन्ती परण्यो

एक हजारक ॥ सती० ॥ १४५ ॥ पवन नरिन्द राज्य भोगवे मानेती रांणी अंजणां नारिक । बसन्तमाला सूं हेत अति घणो, वले मानतो छै हणवन्त कुमारक ॥ ते संसारना सुख भोगवे, हणवन्त कुमर सहस नार्‌यां सहितक । रतनजड़ित महलां मझै, माहोमाहि लागि रही अति भीतक ॥सती० ॥१४६॥ हिवै काल कितोक गया पछे, अंजणा चिन्तवै चित्त मझारक । परभात राजाने पूछने, लेणो सिरोमण संजम भारक । इम चिन्तवी आई राजा कने, हाथ जोड़ि बोली सीस नमायक । आज्ञा दो स्वामीजी मो भणी, चारित्र लेई देऊं करम खपायक ॥ सती० ॥ १४७ ॥ जब राय कहे अंजणा भणी, कोइक दिन रहो राणी घरह मझारक । हिवणा पुत्र बालक अछै, पछै साथै लेस्यां संयम भारक ॥ तब अंजणा हाथ जोड़िने इम कहे, मोने काल विस्वास नही लगारक । तिण कारण दिक्षा लेस्युं सही, जब राजा पिण साथै हुवो छै तयारक ॥ सती० ॥ १४८ ॥ हिवे हणुवन्त कुमर ने तेडने, पवनजी बोले छैं एहवी बायक । अम्हे चारित्र लेस्यां बयराग सुं, हणुवन्त कुमर रोयो घणो तायक ॥ पछै राजा गादी बैसार्‌यो मोटे मण्डाण सूं, बसन्तमाला अंजणा पवनजी रायक ।

आज्ञा लेई हणुवन्त कुमरनी, तीनुं ही लीधो संयम सुख दायक ॥ सती० ॥ १४९ ॥ मास मास खमन कियो पारणो, शरीर सुखाय दुरबल करी कायक। तिणांरी नसां जाल दीसे जुई जुई, हलायां चाल्यां घणी वेदना थायक ॥ तीनुं जणा वैरागसुं, च्यारूं आहार पचखि कीधो सन्थारक। केवल ज्ञान उपायने, कर्म तोडि गया मुक्ति मझारक ॥ सती० ॥ १५० ॥ सतीनै शिरोमणि अंजणां जी ॥

॥ इति श्री अंजणां सती रो रास सम्पूर्ण ॥



॥ अथ मैणारेहा जी की चौपाई ॥



॥ दोहा ॥



वा मांस दारू थकी, कर वेश्या संजोग।
जीवहिंस्या चोरी करे, परनारी नो भोग॥

॥ ढाल ॥

विसन सातमो पर नारीनो, परतख पाप दिखायौ। रावण पदमोत्तर मणरथ राजा, तीनां रो नारी राज गमायो॥ (राजवियांने राज पियारो० १) मनरथ राजा कर मनसौवो, जुगबाहू ने मारचो। आप मुवो ने राज गमायो, हाथ कछू नही आयो॥ रा० २॥ रावण राजा पहिली हुवो, पछे पदमोत्तर रायो। तीजी कथा मनरथ राजा नी, ते सुणज्यो चित लायो॥ रा०॥ ३॥ जम्बू द्वीपना भरथ क्षेत्र मांहि, नगरी खुदंसना भारी। धन सूं सम्पूर्ण देखतो सुन्दर, प्रजा सुखी राजारी॥ रा०॥ ॥ ४॥ मनरथ राजा रे धारणी राणी, रिद्ध तणो विस्तारो। हाथी घोड़ा रथ पायक सेन्या, वरते चौथो आरो॥ रा०॥ ५॥ स्वचक्र नै पर चक्र केरो विरुध नही तिण वारो। मनरथ राजा रे जुगबाहु

भाई, मांहोमाहि छे प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री तणो भोग भोगवतो, नाटक पडे दिन रैणो । बिविध प्रकार नी क्रीडा करतां, विषे बिरून्ध लपटाणो ॥ रा० ॥ ७.॥ मनरथ राजा राज भोगवतां, चडियो महिल उदारो । तिण अवसर में मयणरेहा दीठी जुगबाहु नी नारी ॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने राजा अचरज पाम्यो, अहो रूप ज तुमारो । इण राणी नै हूं राजा में राखू, सुख बिलसूं संसारो ॥ रा० ॥ ९ ॥ मनरथ.राजा कर. मनसोंवो, जुगबाहू ने बोलायो । करो सझाई आयुधसाला नी, हूं देश लेवण ने जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ी ने जुगबाहु बोल्यो, ओ तो थोडो छे कामो । राज विराजो राज सभा में हूं जासूं भाई तामो ॥ रा० ॥ ११ ॥ मनरथ राजा राजी हुवो, हुकुम कीयो छे.भाई । देश किलो कायम करि आवो, ले जांवो फोज सझाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ जुगबाहु तो ऊठ्यो सेताबसुं हरख हुवो मन मांही । क़िलो कायम कर.पाछो आऊं जब मुजरो करूं भाई ॥ रा० ॥ १३ ॥ ले फोजां जुगबाहु चडियो, मजलां मजलां जायो । जुगबाहु तो मनमें न जाण्यो, मनरथ कीयो.उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥ मनरथ राजा मयण-रेहा ने कारण, भारी वस्त्र मंगावे । गहणां जड़ाव रा

पहिरचाई सोहे, दासी रे हाथ पहुंछावे ॥ रा० ॥
॥ १५ ॥ दासी राजा रे ओकमें छानें वस्त्र लेई, देवे
राणी ने जायो । मनरथ राजा चीज़ पठायो, तिणरी
खबर न कायो ॥ रा० ॥ १६ ॥ मयणरेहा मनमाहि
जाण्यो, धणी चाल्यो छे गामो । मयणरेहा ने ऊणी
जाणी, जेठ पितारी ठामो ॥ रा० ॥ १७ ॥ इम
जाणिनें राणी उरा लीधा, वस्त्र आभूषण सारो । नेह
सनेह रिवाज मेली, जाण्यो लागो ह्मारे लारो ॥ रा०
॥ १८ ॥ मयणरेहा ने रीसज आई, दीनो दासी ने
झझकारो । धणी तो ह्मारो परदेस सिधारो, राजा
पड़ियो ह्मारे लारो ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी तो मनमें
दिलगीर हुई, राजा, पासे आई । मयणरेहा तो
राज़ा कोप करीनैं, दीना वस्त्र वगाइ ॥ रा० ॥ २० ॥
मनरथ राजा रातरे समै में, मैहला भाई रे आयो ।
दरवाजो तो जड़ियो दीठे, हेलो मारै छे रायो ॥ रा०
॥ २१ ॥ मयणरेहा तो मनमांहे जाण्यो, मनरथ
राजा आयो । बीजो तो कोई उपाय न दीसे, हूं सासू
नैं दूं रै जणायो ॥ रा० ॥ २२ ॥ मयणरेहा तो छानी
जायनें, दीनो छे जणायो । अमलां मिस तो माता
जाण्यो, बेटो भोलै आयो ॥ रा० ॥ २३ ॥ ओ तो
महल बेटा जुगबाहुनो, महल पैली कानी थारो ।
वचन माता नो सांभल राजा, लाज्यो छे तिण बारो

॥ रा० ॥ २४ ॥ मैणरेहा इम मनमें जांण्यो, पड़ियो गवेसे म्हारे । तो काशीद मेली धणीनें, वेगा आवज्यो इण वारे ॥ रा० ॥ २५ ॥ वीती बात लिखी कागज में, जीवती जाण्यो मोने । तो पाछा घरे वेगा आवज्यो, दगो कीयो छे थांने ॥ रा० ॥ २६ ॥ क़ासीद कागद दीयो सिताब सूं जुगवाहुने जाई । कागज वांचने जुगवाहु जांण्यौ दगो कीयो छे भाई ॥ रां० ॥ २७ ॥ इम जाणीनें राजा पाछो वलियो, ढील न कीनो कांई । महुरत नही राजा महल जांवण रो, निमंतिये बात वताई ॥ रा० ॥ २८ ॥ जुगबाहु तो डेरो बारे कीनो, नगरीमें नहीं आयो । मनरथ राजारो डर जाणीने, राणी धणी कने जायो ॥ रा० ॥ २९ ॥ मैंणरेहा मित्र आप धणीरी, पर पुरुष प्रीत न जाणी । बिरत राखनैं आपरी सारू, जतन करै छै प्राणी ॥ रा० ॥ ३० ॥ मैंणरेहा तो पहुंती सितावसूं विधिसूं बात सुणाई । जुगबाहु तो मनमें न जाण्यो, मारेलो थांने भाई ॥ रा० ॥ ३१ ॥ जुगबाहु ने आयो जांणी नें, डर ऊपनो राजा रै । मनरथ राजा करिय विमासण, उमराव छै इणरे सारै ॥ रा० ॥ ३२ ॥ जग़वाहु ने राणी कह्यो छै, दगो करेलो भाई । साथ सामांन छै इणरे सारै, हूं तो पहिली मारूं जाई ॥

रा० ॥ ३३ ॥ भाई मारण राजा रातनें चाल्यो चढियो एक सखाई। दोढीदार चाकर पालतां, गयो धंकायनें माहि ॥ रा० ॥ ३४ ॥ मैणरेहा तो मनरी दाखवी मनरथ राजा आयो। राणी कहै सावधान हुवो, मारेलो थांने भायो ॥ रा० ॥ ३५ ॥ मैणरेहा तो न्यारी हूई, राजा नेड़ो आयो। जुगबाहु तो नेहरो सूतो, मनरथ घाव जवायो ॥ रा० ॥ ३६ ॥ भाई मारने राजा पाछो वलियो, होय घोडै असवारो। सरप पूंछडी खुर हेटै चीथी, खाधो छै तिण वारो ॥ रा० ॥ ३७ ॥ मनरथ राजा हेठो पडियो, मरणै गयो नरक ततकालो। खबर नही कोई राजसभामे, करमां कीनो छै चालो ॥ रा० ॥ ३८ ॥ मैणरेहा तो कने आई, दुख धरती मन माई। मैंतो थाने कह्यो छो महाराजा, मारेलो थांने भाई ॥ रा० ॥ ३९ ॥ मैणरेहा तो कहै धणीने, करो सन्थारो सोई। च्यारै शरणां थांनै तो होइज्यो, नही किणहींरो कोई ॥ रा० ॥ ४० ॥ (मोरा प्रीतम जी०) द्यूं थांने मैं शिक्षा, बचन हियामें थे धारो। साहिब तो परदेस सिधावो, हूं भातो वांधूं छूं लारो ॥ रा० ॥ ४१ ॥ (मोरा०) थारै देव अरिहन्त छै, गुरु निग्रन्थ श्री साधो। धरम तो केवली भाष्यो दयामें, समकित नेम आराधो ॥ रा० ॥ ४२ ॥ थांने

जीव मारण री, जाव जीव पचखाणो। सरब प्रकारे मृषावादे, अदत्तादानमें जाणो ॥ रा० ॥ ४३ ॥ थांने मैथुन सेवन रो, नव विध बाड़ प्रमाणो। मनुष्य देवता तिरजञ्च संबंधी, जाव जीव पचखाणो ॥ रा० ॥ ॥ ४४ ॥ थांने क्रोध मानरो, माया लोभ ए च्यारो। मनमें तो ममता मति राखज्यो, जाव जीव परिहारो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ थांने राग द्वेष दोई, बीज करमारो जाणो। कलह अभ्याख्याण पैशून्य चाडी, परपरवाद पचखाणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ रति अरति इम जाणी, माया मोस नहीं भली। पाप अढारै त्रिविध बोस-राउ, मिथ्या दरशन सल्ली ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मरण तणो भय नाणो, धरम साचो करि जाणो। परभव में तो साथे चालसी, मोमें जीव मत घालो ॥ करो आलोयण कारज सरे ज्यूं, मत राखो कोई सालो ॥ रा० ॥ ४९ ॥ थे दश दृष्टान्ते, मनुष्य जमारो दुहेलो जाणो। इण भवमें जो पुन्य करे तो, परभव सुख सुहेलो ॥ रा० ॥ ५० ॥ (मो०) करो धरम विचारो, सुपनारी करि माया जाणो। डाभ अणी जल विजली जांणो; मनमें समता आंणो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ थे दोस करमारो जांणो, बीजाने दोस न दीजै। ऋणं वैर तो कोई न छाण्डे, बन्धा ते भुगतीजै ॥ रा० ॥ ५२ ॥

किणरा माता पिता कुण कुटुम्ब कुण भाई । धरती तो साहिब री नही असी, स्वारथ री सरब सगाई ॥ रा० ॥ ५३ ॥ नही काया आपनी, साची धरम सगाई । शत्रु मित्र ने सरीखा जाणो, अवसर जावे ठाई ॥ रा० ॥ ५४ ॥ (मो०) थारे सरदहणा शुद्ध छे, चौविहार अनसन दीयो । मरणो सहूने एक दिहाड़ै, थे सेंठो राखज्यो हीयो ॥ रा० ॥ ५५ ॥ जुगबाहु तो सन्थारो सरद्यो, साहाय्य दीयो छै राणी । कालैं मासै काल करीनै, जाय ऊपनो विमानी ॥ रा० ॥ ५६ ॥ मैणरेहा छाती काठी करनैं, कारण धणी नो कीयो । पूरा मित्र तो पार उतारे, धन जीवितव्य जिण रो कहियो ॥ रा० ॥ ५७ ॥ मोह वसै होय काम बिगाडे, मरण विरियां नरक में घालै । सगा नही ते पूरा बैरी, सूंस लेतां जे पालै ॥ रा० ॥ ५८ ॥ मित्र होवे तो मरण सुधारे, करे पर उपकारो । दे सरदहनां सूंस करावे, ते बिरला संसारो ॥ रा० ॥ ५९ ॥ धन २ छे संसार में मैणरेहा राणी, मोह धणी नो निवार्यो । आप तणो भरतार जांणीनें, तिणे उपदेश देईने तार्यो ॥ रा० ॥ ६० ॥ मैणरेहा मन मांहे जाण्यो, रीसै पकडैलो मोने रायो । वेस बदलने परही नासूं, दासी नाम धरायो ॥ रा० ॥ ६१ ॥

डेरा मांहिसूं तो बारे निकली, गई ऊजाडरे मांयो। पूरी आपदा नहीं कोई साथे, राणी ए कुमर जायो ॥ रा० ॥ ६२ ॥ जिण जायां दशोटण होता, बांटता सजा बधाई। विषम विजोग में कुमर जायो, जोइज्यो करम कमाई ॥ रा० ॥ ६३ ॥ चांपो पाछला सूं राणी डरपे, रिसै आवैलो कोई लारो। इम जाणी ने कुमर उंचायो, हुई करमांरे सारो ॥ रा० ॥६४॥ कोमल काया ने कारण पडियो, पांव पडे नहीं ठायो। कुमर तो राणी निभती न जाण्यो, बालक मेले मायो ॥ रा० ॥ ६५ ॥ चीर बिछाई ऊपर सुवाण्यो, बाल बिछोहो जाण्यो। होतब थारो होसी जिम जाया, मैणरेहा दुख आण्यो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ कुमर मेल राणी आघी चाली, अन्न बिना सूनी काया। कठे सुवाबड कुण मंगल गावे, करमां बैन दिखाया ॥ रा० ॥ ६७ ॥ घणी दासने दासी हूंता, राज कुमार नी धायो। दोढी परदा माहें रे होती, राणी एकली जायो ॥ रा० ॥ ६८ ॥ जातां २ आगे नदी आई, पाणी मे वस्त्र पखाल्या। सिनान करीने तीरज बैठी, ऊठी दुखरी झाला ॥ रा० ॥ ६९ ॥ कौण बिजोग पड्यो मो मांहे, किसे ठिकाणे आई। रोही में भमती एकलडी, रोवे छे बिललाइ ॥ रा० ॥ ७० ॥ किण

घर जनमी किण घर आई, राजारी राणी कहाई । साहिब नें म्हारो मूवो मेली, हुं रोही मे आई ॥ रा० ॥ ७१ ॥ कुमरां विछोहो पडी माता में, जुगबलभ लघु भाई । जुगबलभ ने पाछो मेल्यो, बालक छै वन मांई ॥ रा० ॥ ७२ ॥ महिल झरोखा सोभा जाली री, राजबियां रुसनाई । ऋद्धी साहिब ऊभी मेली, हूं आय बैठी रण माही ॥ रा० ॥ ७३ ॥ बिषम उजाड ने तीर नदी नो, सुख नहीं तिल रत्ती । मैणरेहा तो दुख कर दोरी, संकट पड्यो छै सती ॥ रा० ॥ ७४ ॥ झुरे धणीनैं करे अणराई, दुख भर छाती फाटे । मैणरेहा नो दुख प्रभु जाणे, बैठीछै तट माटे ॥ रा० ॥ ७५ ॥ संयोग रूपिणी रूई हुंती, विजोगें तिण बाली । नाथ बिहूणी दुखनी करती, आणी रणमे राली ॥ रा० ॥ ७६ ॥ देखो सगाई इण संसार में, बीछडतां नही वारो । इम जाणीने सदगुरु सेवो, लाहो लेज्यो लारो ॥ रा० ॥ ७७ ॥ तिण अवसरे देवता इम जाणे, दुख करे छै राणी । वैक्रियो रूप कियो हाथी रो, रामत मांडी पाणी ॥ रा० ॥ ७८ ॥ दुख विसारण विलम्ब न कीयो, सूंड सूं उछाले पाणी । दुख भरी ने हाथी दीठो, रामत देखे राणी ॥ रा० ॥ ७९ ॥ जिम जिम रामत देखे राणी, अचिरज

रामत भारी । धर्म अंकुरयो पुन्य संजोगें, आवै छे नर नारी ॥ रा० ॥ ८० ॥ देवत छे कोई पर उपगारी, राणी नें सूंड सूं झेलै । जितरे नेडा आय निकलिया, लेकर विमाणमे मेलै ॥ रा० ॥ ८१ ॥ विद्याधर तो राजी हुवो, रूप घणो इण नारी । तुरत विमान ले पाछो वलियो, सुख बिलसां संसारी ॥ रा० ॥ ८२ ॥ मैणरेहा तो मनमे जाण्यो, किण दिश ए ले जावे । यो तो नही दीसे छे आछो, रख्यो मुझ शील खण्डावे ॥ रा० ॥ ८३ ॥ विद्याधर ने मैनरेहा पूछे, जाता किण दिश सदाई । अवे तो थे पाछा वलिया, कांई दिल माही आई ॥ रा० ॥ ८४ ॥ भगवन्त नें तो दरशण जातां, तो सरिखी मिली नारी । इम जाणीने पाछो वलियो, सुख विलसां संसारी ॥ रा० ॥८५॥ मैणरेहा मीठा बचन दाखवे, भगवन्त दरशण जातां । मारग मैं थांने हूंज मिली छूं, नफो घणो दरशण करतां ॥ रा० ॥ ८६ ॥ तीर्थंकर नो दरशण करतां, परसन होसी कायो । विद्याधर तो पाछो वलियो, मैनरेहा रे मन भायो ॥ रा० ॥ ८७ ॥ समवसरण सूं नेडो आयो, विमान सूं ऊतरिया । कर बन्दना नें खुणे बखाणो, कारज सगला सरिया ॥ रा० ॥ ८८ ॥ जुगवाहु तो देवता

हूयो, ऊठ्यो छे ऊंघमें आणी। सेवक तो कर जोडी हरषित हो, जै जै करै मुख बाणी ॥ रा० ॥ ८९ ॥ इण ठांमें स्वामी आय ऊपनो, हुवा अमरां नाथो। कौण गुरुनी सेवा कीनी, दान दियो छै हाथो ॥ रा० ॥ ९० ॥ ज्ञान करीने देवता दीठो, पूरब भवनो विचारो। जुगबाहु तो म्हारो नाम ज हूतो, मैनरेहा म्हारी नारो ॥ रा० ॥ ९१ ॥ मैनरेहा रे कारण मोने, मनरथ भाई मारयो। दे सरणानें सूंस करायो, मैन-रेहा मोने तारयो ॥ रा० ॥ ९२ ॥ उपगारी नो गुण जाणीने, देवता दरशण जायो। देखूं मैणरेहा कुण ठिकाणै बैठी समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ९३ ॥ पर-गट रूप कीनो छे देवता, प्रभुने प्रदक्षणा दीधी। साध साधवी प्रदक्षिण करिनै, मैणरेहा ने बन्दना कीधी ॥ रा० ॥ ९४ ॥ परषदा देखीने हसवा लागी, देव दीसै छै गेहलो। अस्त्री ने तो बन्दन कीधो, जिणरो प्रभु तो उत्तर देलो ॥ रा० ॥९५॥ जुगबाहु इणरो नामज हूंतो, मैणरेहा इणरी नारी। धरम तणो इणने साहाज्य दीधो, हूवो सुर अवतारी ॥ रा० ॥ ॥ ९६ ॥ मैणरेहा रे कारणै ने, मनरथ भाई मार्‍यो। दे शरणा ने सूंस करायो, इणने मैणरेहा तार्‍यो ॥ रा० ॥ ९७ ॥ मैणरेहा तो मनमे जाण्यो, धणी दीसे

छै म्हारो। इण अवसर मे संजम आवे, पछे विद्या-धर नी नहीं सारो ॥ रा० ॥ ९८ ॥ भरी परषदा मे मैणरेहा ऊठी, बोले छै कर जोडी । आज्ञा द्यो तो संजम लेऊं, टालूं भव तणी खोडी ॥ रा० ॥ ९९ ॥ देव कहे थांने आज्ञा म्हारी, ल्यो थे संजम भारो। जुगबाहु तो उरण हुवो, मैणरेहा ने तारो ॥ रा० ॥ ॥ १०० ॥ मने तो विद्याधर ल्यायो, परवश बात प्रकाशी। कठे विद्याधर कह्यो देवता, गयो विद्याधर नाशी ॥ रा० ॥ १०१ ॥ मैणरेहा तो सञ्जम लीधा, ज्ञान भणे गुरुणी पासे। विनय करी ते आज्ञा पालै, सुमति गुपति कर पासे ॥ रा० ॥ १०२ ॥ देवता तो मनमें हरषज पाम्यो, पूज्या प्रभुजी नां पायो। साधु साधवी सर्व बांदीनें, आयो जिण दिश जायो ॥ रा० ॥ १०३ ॥ देवता तो अपणे ठामे पहुंतो, मैण-रेहा सञ्जम पालै। बालक तो मारग में मेल्यो, आपरा पुन्य तेने रखवाले ॥ रा० ॥ १०४ ॥ ना तो कोई हिंसक नेड़ो आयो, नहीं कोई पंखी खायो। देखो पुंन्याईने प्रभाव थी, सुकृत कीनो सहायो ॥ रा० ॥ ॥ १०५ ॥ मिथिला नगरी नो पदमरथ राजा, चढ़ियो शिकारज सोई। पाप करन्ता पडै पाधंरी, पूरब सुकृत होई ॥ रा० ॥ १०६ ॥ कर असवारी

राजा रणमें फिरता जोवे जीउ वन सब कोई। रण
मांहे तो बालक सूतो, दीठो राजा सोई ॥ रा० ॥
॥१०७॥ बालक नेड़ो राजा आयो, रूप देखने अच-
रिज पायो। बालक कोई पुण्यवन्त दीसे, राजा रे
मन भायो ॥ रा० ॥ १०८ ॥ म्हारा राज में पुत्र नही
छै, म्हारे सहज में आयो। तो इण बालक नें उरो
लेऊं, सौंपूं राणी नें जायो ॥ रा० ॥ १०९ ॥ कुमर
लेईने राजा पाछो बलियो, आयो राजा राज दुवारो।
पुष्पमाला राणी राय तडाये, पुत्र दीयो छे करतारो
॥ रा० ॥ ११० ॥ नव मासां तो भार मरे छै, देवता
पितर मनावो। आपने पूरब पुण्य करीने, कुमर
सहज में आयो ॥ रा० ॥ १११ ॥ आपणां राजमें
पुत्र नही छे, करो इणरी प्रतिपालो। राजा लायक
यो कुमर दीशै, होसी राज रखवालो ॥ रा० ॥११२॥
भार भोलावण देई राणीने, नमिय कुमर खोले
घाल्यो। पुण्यवन्त राजाने आयां पाछे, भोमियामें
मन चाल्यो ॥ रा० ॥ ११३ ॥ भोमियां म्हारे अनमी
हुंता कुमर राजमे आयो। भोमियां सब म्हारे चाकर
हुवा, नमिय नाम दिरायो ॥ रा० ॥ ११४ ॥ नमिय
कुमर पदमरथ राजा, दिन दिन वधतो होई। मात
पिता बंधव वीसाहो, ते सुणज्यो सहु कोई ॥ रा० ॥

॥११५॥ जुगबाहु ने मणरथ मार्‌यो, बिषया रस रे चांयो। पाछा वलता ने सांपज खाधो, गयो नारकी मांयो॥ रा०॥ ११६॥ दोनुं राजा रो मरण हुवो, खबर हुई नगरी मांही। मैणरेहा तो नीकल नाठी, तिणरी खबर नही काई॥ रा०॥ ११७॥ संसार नो तो कारज कीयो, राज जुगवल्लभ ने दीयो। किणने दोस न दीजे रे प्राणी, करम आपरा कीयो॥ रा०॥ ११८॥ जुंगवल्लभ तो राज करे छे, बरते छे चौथो आरो। बाप तणी मनमें थोडी आवे, पिण दुख वरते मातारो॥ रा०॥ ११९॥ नमी कुमर तो मोटो हुवो, बैर पड्यो राजारो। नमी कुमर ने राज्य बैसाण्यो, सुख विलसे संसारो॥ रा०॥ १२०॥ जुगबाहु तो देवता हुवो, मैणरेहा सञ्जम पाले। जुग-वल्लभ ने नमी भाई, दोनुं राज रखवाले॥ रा०॥ ॥१२१। आठ करम छे महा जोरावर, जीवां ने फोड़ा पाडे। प्याराने तो न्यारा कीना, किरतब खेल दिखावे ॥ रा०॥ १२२॥ दोनुं राजा राज भोगवतां, अडवी पडी है सीमाडो। सीम आपनो राखण सारू, करे राजवी राडो॥ रा०॥ १२३॥ जुगवल्लभ तो मनमे जाणे, आय लडे दीसे छे कठारो। देखो नी म्हारी धरती तो लेसी, राजविया अहंकारो॥ रा०॥१२४॥

जुगवल्लभ तो फोजां ले चडियो, कांकड सीमा जावे ।
नमी राजा मनमे कोप करीने, मनमे मगज न
मावे ॥ रा० ॥ १२५ ॥ नमी राय तो करि ने सझाई
बोले छे बांकी वाणी । मरम मोसो बोलै मातारों,
चडियो छे इम जांणी ॥ रा० ॥ १२६ ॥ तिण अव-
सर मे मैणरेहाजी, मनमें इसडी आणी । अङ्गजात
छे दोनूं म्हारा, नही हठे पुन्य प्राणी ॥ रा० ॥१२७॥
घणा तो जीवांनी घातज होसी, मॅरसी घणा अजांणी ।
यां सूं वणै जो कोई उपगार कीजे, मैणरेहा मन
आणी ॥ रा० ॥ १२८ ॥ कर वन्दना गुरुणी ने पूछे,
आप कहो तो हूं जाऊं । दोनूं राजा रे राड मण्डाणी,
हूं जाईने समझाऊं ॥ रा० ॥ १२९ ॥ मांहोमाहे तो
कोई न हठके, अंगजात छे ह्मारा । घणा जीवानी
घातज होसी, परणाम एक दयारा ॥ रा० ॥ १३० ॥
देखो पुण्याई राज वियारी, गुरुणी तो नही वरजे ।
वसत आपरी सैंठी राखने, पछे परोपगार करजे ॥
रा० ॥ १३१ ॥ कर बन्दना ने मैणरेहा चाली, ले
सतियांने साथे । जुगबल्लभ ने तो सैंध पिछांणी,
पहिली ऊना बाते ॥ रा० ॥ १३२ ॥ कांकड सीमाडे
ठोड ठिकाणे, फोजां पडीछे दोई । जुगबल्लभनो लश-
कर पूछी, चाली मैणरेहा सूई ॥ रा० ॥ १३३ ॥

मैणरेहा सती चरम शरीरी, आप तिरें परतारी । राजं कचेरी सें नेडी आई, निजर पडी राजारी ॥ रा० ॥ १३४ ॥ जुगबल्लभ तो ऊठ्यो सिताव सूं, विनय कर्‌यो छै भारी । सात आठ पग साहमो जाइने, महा सतियां क्युं पधारी ॥ रा० ॥ १३५ ॥ मैणरेहा तो कहे राजाने, कारण पड़ियो क्रिम भारी । फौज-बन्धी थे भेली कीनी, तिणरो कौन विचारी ॥ रा० ॥ १३६ ॥ आय लडनें म्हारी धरती लेशी, नीच चण्डाल घर जायो । सांथ समान इण भेलो कीनों, तिण कारण चढि आयो ॥ रा० ॥ १३७ ॥ बेटा थे छो राजवियां रा बोल विचारी बोलो । ओर थां ऊपर कौण चढ आसी, यो थांरो भाई छै बहुमोलो ॥ रा० ॥ १३८ ॥ बात सुणीने राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे । भारी बचन कह्या माताने, राजाने नही सोवे ॥ रा० ॥ १३९ ॥ जुगबल्लभ तो कहे माताने, थे लीधो सञ्जम भारो । मौत आपदा किण विध हुई, बात कहो बिसतारो ॥ रा० ॥ १४० ॥ मणरथ राजा थांरा पिताने मार्‌यो, हूं रातने नीकली आई । जनम नमी रो वनमे हुयो, हूं मेल आई बनमे भाई ॥ रा० ॥ १४१ ॥ तीर नदीने बैठी हुती, विमान विद्यांधर नो आयो । देव ऊंचाय मोने मांहै मेली, हुं गई समो-

सरण मांयो ॥ रा० ॥ १४२ ॥ पिता तो थांहरो देवता हुवो, दरशण प्रभुके आयो। आज्ञा मांगि मैं तो संजम लीनो, भेट्यो प्रभु रे पायो ॥ रा०॥१४३॥ दोनुं राजारे मै बैर सुणीयो, लडसी माहोमाई। घणा आदमी मरण पामसी, तिण कारण हूं आई ॥ रा० ॥ १४४ ॥ जुगवल्लभ राजा बात सुणीनै चिन्ता फिकर मन आई। जुगवल्लभ तो कहे माताने, जाय मिलूं हूं भाई ॥ रा० ॥ १४५ ॥ ठीक नही छै नमी रायने, यो छै म्हारो भाई। नही विस्वास राजवियां केरी, तिणसुं मिलू पहिली जाई ॥ रा० ॥ १४६ ॥ जुगवल्लभनें तो दियो समझाई, नमी राय कने जायो। सतियां निजर पडी राजारी, विनय करी सांमो आयो ॥ रा० ॥ १४७ ॥ हाथ जोडीने राजा बोल्यो, महासतियां किम आई। कासूं कारण पडियो थांहरे, इसडे अवसर आई ॥ रा० ॥ १४८ ॥ किसूं कारण थांहरे दोनुं राजारे, झगडो पड्यो माहोमाई। फोजबन्धी थे तो भेली कीनी, तिण कारण हूं आई ॥ रा० ॥ १४९ ॥ बाप मार्‍योने मा निकल भागी, गई एकरे लारे। देखने ए म्हारी धरती लेसी, कहीं सनमुख मातारे ॥ रा० ॥ १५० ॥ बेटा तो थे राजवियांरा, बोलो बोल विचारो। ओर तो थां

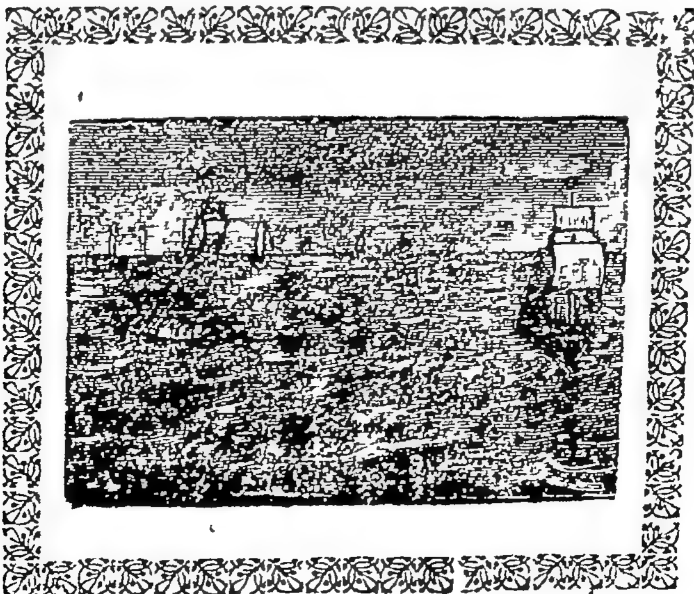
ऊपर कुण आसी, भाई छे यो थारो ॥ रा० ॥ १५१ ॥ जुगवल्लभ ने तो पूठो मेल्यो, खबर पडी अनुसारे। नांन्हो बालक जिम जाणीने, वात कही विसतारे। ॥ रा० ॥ १५२ ॥ बात सुणीने राजा लाज्यो, नीचो मुख करी जोवे। भारी वचन कहियो माताने, राजा ने नही सोवे ॥ रा० ॥ १५३ ॥ नमी राजा तो मन मांहि जांण्यो, जुगवल्लभ राजा भाई। नेह सनेह धरि दोनुं वेटा रो, तिणसुं माजी आई ॥ रा० ॥ १५४ ॥ नमी राजा तो मिलन ने चाल्यो, जुगवल्लभ साहमो जाई। हरख भावसुं बांह पसारी, मिलिया दोनुं भाई ॥ रा० ॥ १५५ ॥ एकण हाथी रे हौदा वैठा, जुग-वल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ रा डेरा कांनी, हुई अब हरष सवाई ॥ रा० ॥ १५६ ॥ लोक लडाई री वातां करता, लड़ता होड़ा होड़ी। लोकां मनमें अच-रिज पांम्यो, कांई कियो छे इन मोडी ॥ रा० ॥ ॥ १५७ ॥ वैर मिटाय ने मेल करायो, घणां लोक हुवा राजी। घणां जीवांरा माथा पड़ता, राख्योछे इन माजी ॥ रा० ॥ १५८ ॥ लोक राजा रे कुशलज हुवो, घर घर हरख बधाई, भली होज्यो इण सतियां केरो, जस लीधो जग माई ॥ रा० ॥ १५९ ॥ राज-कचेडी में आयने वैठा, जुगवल्लभ नमी भाई। जुग-

बल्लभ सुख अथिर जाणीने, बैरागरी मनमे आई ॥ रा० ॥ १६० ॥ जुगबल्लभ कहै मोनें दीक्षा लेण द्यो, राज करो महारायो। राज रिद्ध ने सर्व सम्पदा, मै थाने भोलायो ॥ रा० ॥ १६१ ॥ जुगबल्लभ तो दीक्षा लीधी, हरख घणो मन माई। भाई विछोहो दुखरी लहरां, नमी कुमर ने आई ॥ रा० ॥ १६२ ॥ नमी कुमर तो राजा राज करे छै, राणी एक सौ आठो। होवे नाटक ने घुरै नगारा, दोनुं राजांरो पाटो ॥ रा० ॥ १६३ ॥ दाघ ज्वरने जोग करीने, लेसी सञ्जम भारो। इन्द्र परीक्षा करवा आसी, उत्तराध्ययन विस्तारो ॥ रा० ॥ १६४ ॥ दोन्यां भायांरे मेल करायो, मैणरेहा पांछी आई। गुरुणी जी रे पाय लागने, बिध सूं बात सुणाई ॥ रा० ॥ १६५ ॥ मोटा राजांरे मेल करायो, राखी घणांरी बाजी। मैणरेहा ना गुण जाणीनें, गुरुणी हुई छे राजी ॥ रा० ॥ १६६ ॥ छत्रीस हजार आर्य्या माहे, गुरुणी चन्दनबाला। तिणरे पाटे पदवी पाई, शिष्यणी रतनांरी माला ॥ रा० ॥ १६७ ॥ चेड़ानी जो सात पुत्री, भगवन्त आप बखाणी। चेलणां कमलावती तीजी प्रभावती, चौथी ऋखदत्ता राणी ॥ रा० ॥ १६८ ॥ पांचमी पद्मावती छट्ठी कलावती,

सुज्येष्टा सातमी जाणी । संकट पड्या सती शील ज राख्यौ, दमयन्ती नल राणी ॥ रा० ॥ १६९ ॥ अञ्जणां सती छे महेन्द्र राजारी, बिखो सह्यो बन मांही । संकट पड्यां सती पिण शील ज राख्यो, जस कीरती जग मांही ॥ रा० ॥ १७० ॥ सती द्रोपदी आगे हुई, जस लीधो जग मांही । मोटा राजांरो विरोध मिटायो, मैणरेहा री अधिकाई ॥ रा० ॥ १७१ ॥ संजम लेने सुकृत कीजो, मनुख जमारो मत खोज्यौ । जिंन शासन में जिम मैणरेहा कीनी, तिम सब कोई कीज्यो ॥ रा० ॥ १७२ ॥ मैणरेहा तो दीक्षा लेई, मन सुध संजम पाले । जिन मारग में नाम दीपायो, भवदुख नैं सहू टालै ॥ रा० ॥ १७३ ॥ मैणरेहा तो कुल तारक हुई, लज्या आपरी राखी । बिखो सह्यो पिण शील न भांज्यौ, भगवन्त जेहनी साखी ॥ रा० ॥ १७४ ॥ जुगबाहु नें मैणरेहा राणी, जुगबलभ नमी भाई । ज्यारांरो तो कारज सिद्धो मनरथ दुरगति मांही ॥ रा० ॥ १७५ ॥ बिसन सातमो पर नारीनो, जीव घात घर हाणी । मनरथ राजा नरक पहुंतो, कुजस बाँधने प्राणी ॥ रा० ॥ १७६ ॥ एक कुबिसन मनरथ सेव्यौ, बहु रुलियो संसारो । सातो कुबिसन जे सेवै प्राणी, तिणने दुःख

अपारो ॥ रा० ॥ १७७ ॥ विषयारस नें विष सम जाणी, सद गुरु नी सेवा कीजे । मनरथ राजा नी बात सुणीने, पर नारी संग न कीजे ॥रा०॥१७८॥ दान शील तप संजम पालो, दूखण सगला टालो । दया धरम री समता आणो, सुद्ध करी आचारो ॥ रा० ॥ १६९ ॥ धरम दया इं केवली भाख्यो, ते सांचो करी जांणो । जे सेवे जांणी भवि प्राणी, ते पामे निरबांणो ॥ रा० ॥ १८० ॥ जप तप संजम पालो रे भाई, विषय विकार गमाई । जीव जिकै तो शिव सुख पावे, वीर वचन मन लाई ॥ रा० ॥ ॥ १८१ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ श्री मैणरेहा जी की चोपाई सम्पूर्ण ॥



॥ बुढ़ा री ढाल लिख्यते ॥



॥ दोहा ॥



याज माता बीनऊं, गणधर लागूं पाय। बर्द्धमान चौबीसमा, बांदूं शीस नमाय ॥ १ ॥ कन्यां ने जमाई तणो, पईसो न लीजे कोय। बूढां ने परणावतां, गुण बूढा रा जोय ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ इण पुर कँवल कोई न लेसी—ए देशी ॥

परदेशां सूं इक सेठज आयो, धन कमाय ने बहुलो लायो। निरधन रे घर बेटी जाई, कुल कुटुम्ब ने तारण आई ॥ १ ॥ बरस इग्यार मे बेटी थाई, माय बाप जब हर्ष सवाई। तिण सेठसूं कीवी सगाई, माय बाप फिर बांटे बधाई ॥ २ ॥ रुपया नवसै आकरा लीधा, बट्टेरा फिर पाछा दीधा। करी सगाई नें लीया दाम, कन्या बेची पूरी हाम ॥ ३ ॥ सखरे लगन सावो थपवावे, घर सारू बलि जान बुलावे। बींद बींद रो आयो जो भाई, तीजो भोजग चौथो नाई ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

॥ महलां बैठी राणी कमलावती—ए देशी ॥

बेटी कहे माता तुम सांभलो, सुणज्यो म्हारी बात । रुपयांरो लालच थे देखियो, देस्यो मोनें बूढा रे हाथ ॥ १ ॥ सांभल हे मोरी माता, अबला बेटीरो जोरज को नहीं० ॥ मोल करायो हे माता म्हारी, मुगता गिणाया दाम । आ तो खरची थोडा काल री, क्यूं कर चलसी थारो काम ॥ सां० ॥ २ ॥ माल ले मोटियार दीसै बापजी, मरोड राखे मोरी माय । रुपयां रो लालच हुवे घणो, तो परदेसां क्यूं नहीं जाय ॥ सां० ॥ ३ ॥ मोटी हुवे घरमें डावड़ी, अवर नानड़ियो भरतार । उणरो तो जीवडो रहे हर्षमें, मोटो होय जासी दिन चार ॥ सां० ॥ ४ ॥ इग्यारे बरसां री माता डावड़ी, साठ बरसां री गले फाँस । उणरो तो जीवडो रहे सोच मे, निश्चै रंडापा री आस ॥ सां० ॥५॥ सासू सुसरा रो दुख हूं सहूं, सोक रो सहूं तुं कार । साठ बरसां रो मिलियो डोकरो; क्यों कर काढूं जमवार ॥ सां० ॥ ६ ॥ बूढो तो माता बैठो रहे, बालक पिण मर जाय । उणरी कैबत तो ना कोई करे, इणरी निन्दा लोकां में थाय ॥सां०॥७॥ धवला आया ने केस पड़ गया गूगला,

गया जबाडा बैस । गरदन तो माता डिग मिग करै,
आंख्यां गई मांहे पैस ॥ सां० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सेठजी आयो परणवा, ले साथे परिवार ।
आगल बोले जांगड्या, गावे गीत रसाल ॥ १ ॥
आयने उतऱ्या बागमें, हुई जी मन री रींझ ।
सखी सहेली मन चिन्तवे, चालो देखणने बीन्द ॥२॥
नाक झरै लालां पडै, नहीं छे आंख्यां में जोस ।
करम पातला बीन्दणी तणा, किणनै दीजे दोस ॥३॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ चोपइ नो ॥

बूढो बीन्द परणीजण आवे, घोडे चढियो नाड हिलावे । डाढी मूछांरे कलप लगावे, आगला दाँत निजर नहीं आवे ॥ १ ॥ देखै आयने लोक लुगाई, हीरा सी बेटी ने चाख लगाई । बीन्दणी बर ने जोवण आई, देखी बर ने मुरछा गति पाई ॥ २ ॥ कन्या ने हथलेवो दिरायो, बीन्दणी बेह सूं भँचेडो खायो । देखी बरनैं कूटै छाती, भलो लायो छे बाबा भूंडो हाथी ॥ ३ ॥ सेठ परणी ने घर ले जावे, लोक लुगाई देखण आवे । सेठजी कीवी थें, सखरी कमाई, बहू गुणवन्ती आई लुगाई ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

बलतो सेठजी इम कहे, सांभल सुलक्षणी नार।
घरमें धन छे अति घणो, लाहो लो इणबार ॥ १ ॥
ए मन्दिर ए मालिया, सुख भोगवो संसार।
पूरब पुण्य पूरो कीयो, मो सरिखो मिलियो भरतार।
कामण अणबोली रही, मनमें आणी राग।
थां सरिखी जोड़ी मिली, फूटो म्हारो भाग ॥ ३ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ पास जिनेसर पूरण आसा—ए देशी ॥

म्हे तो मुगती माया खाटी, थे तो खावो घी ने बाटी। चुल्हा में जावो घिरत ने बाटी, थांने देखने नित मैं कूटूं छाती ॥ १ ॥ तूं तो बोले मूढा मांहे सूं आंटो. थारा पाड़ूंली चोकेरा च्यारूं दाँतो। तूं तो रहे रहे रे बूढा कांड़ी, थारा शिर री फोड़ूंली हांड़ी ॥ २ ॥

॥ ढाल ५ वीं ॥

॥ बीर सुणो मोरी वीनती—एदेशी ॥

साध नगरी मे आविया, हूं दरशन नवि जायो जी। आठ पहर दिन रातरो, मोने धरम नवि सुहायो जी ॥ १ ॥ पाप उदै तूं नारी मिली० ॥ के मैं तलाव खोदाविया, के मे बाग लगाया जी। आठ

पहर दिन रातरा, काचा फल तोड़ीने खाया जी ॥
२ पा० ॥ माखी ईली ने अलसिया, लठ गिंडोली
घायो जी। उंदर बिल्ली सूं मराविया, बिलामें ऊनो
पांणी रलायो जी ॥ ३ पा० ॥

॥ दोहा ॥

हांथ जोड़ि नारी कहे, सांभल कन्त बिचार।
पूरब पाप मैं किया, तू मिलियो भरतार ॥ १ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

॥ हिंव राणी पदमावती—एदेश ॥

कै मैं साध सन्ताविया, कै मैं महा सतियां संताई।
कै मैं कूडा कलंक दीया, कै मैं विरोध घलाई ॥ १ ॥
बात सुणो कन्त पाछली०। कन्द मूल मैं खाया घणा,
घरमे दव दीधा। सूंस लीया वीतराग ना, कूडा
कोशज पीधा ॥ बां० ॥ २ ॥ के मे ईंडा फोड्या घणा,
माला पंखीना पड़ाया। केई लीला रूंख बढ़ाइया,
बनमें दव लगाया ॥ बा० ॥ ३ ॥ कामण टूंमण मैं
कीया, काचा गरभ गलाया। कै जीवांणी ढोल्या
घणा, बाल विछोह दिराया ॥ बा० ॥४॥ धरम नेम
कीधों नही, बहुलो पाप कमायो। पाछला पापरें उदै,
बूढो बर मै पायो ॥ बा० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

॥ जत्तनी देशीमे ॥

धनीयज बोले छै कर जोड़, हूं थारा माथारो मोड । शिखर बन्ध देहरो, ज्युं थारा शिर रो सेहरो । मूखाने भोजन आधार, जिसो नारी ने भरतार ॥१॥ पहिरो ओढो सब सिणगार, मुख ऊजलो सुहागण नार । मोने मत कर रे तूं भांड़, मो मूवा होय जासी रांड ॥ २ ॥ लांवी कांचली ने रातो वेश, भूंडो दीससी थारो वेश । नही डरूंली हूं करती भांड, हूंतो परणी जदरी रांड ॥ ३ ॥ कूडा लेख लिख्या करतार, तूं तो जोड़ी नही छे भरतार । पिता सांईना दीसो आप, मै पूरब ले भव कीयो पाप ॥४॥ सेठजी आ सुणीयज सही, रांड बात म्हांने इसडी कही । कलहकारी कजियारो मूल, घोल्या मांहे पडसी म्हारे धूल ॥ ५ ॥ छाती मांहे धमीडो लीयो, परणतां कामज खोटो कीयो । दुखडो कहू किण आगे जाय नही दीसे घरे बाप ने माय ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

वात सुणी नारी तणी, ऊठी मनमें झाल ।
बूढापा रो परणवो, हुवो ज म्हारो काल ॥ १ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ जत्तनी छे० ॥

सेठ सासूरे कने आयो, माहे मुजरो कहिवायो। पाछी आसीस केहवाई, दीधी तिहां गादी बिछाई ॥ १ ॥ सेठ सासूने उलम्भो कहावे, थांरी बेटी ने समझावो। बोले मूढा मांहे सूं बाकी, मोने कहे रे बूढा डाकी ॥ २ ॥ बिना बुलाई पीहर जावे, मन माने तो घरमे आवे। दिन चढियां अबेरी ऊठे, अण सोझो अनाज कूटे ॥ ३ ॥ के तो रांधे खीच अलूणो, के धोवो भर घाले लूणो। रोट्यां पुरसती करे तड़का भड़का, पाछो बोलूं तो मोड़े कड़का ॥ ४ ॥ पाणी मांगू तो पटके लोटो, पाछो बोलूं तो ले दौड़े सोंटो। माता कहे सुण हे बेटी, इसड़ी किम हुवे तूं धेठी ॥ ५ ॥ माता हूं थारा घरमे आई, तें तो रुपैया सूं चित लाई। तें तो संका राखी नही काई, मोने बूढा ने परणाई ॥ ६ ॥ म्हारा मनमे घणो आईनो, पिण तें तो आण्यो दादारो साईनो। पीव हो कोने बोली ने हरड़ूं, जाणै जूत्यां इणरे घरड़ूं ॥ ७ ॥

॥ ढाल ९ वीं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चाल्यौ रे—ए देशी ॥

बेटी कहै पिताजी सांभलो रे, कीधो खोटो थे

काम । मोने धको दे नाखी खाड मे रे, म्हारा गिणाया थे दाम ॥ १ ॥ (पूरी तो न पडसी हो बेट्यारा दामसूं थांरी तो बेची बावा हूं बिक गई रे, हूं तो अबला गाय । डर नही राख्यो तुमे लोकीकरो रे, हीयो कठोर छै मोरी माय ॥ पूरी २ ॥ रूपीया मीठा कदै नही जांणज्यौ जी, जैसो सोमल जहेर । इण भव हूं छूं थांरी डीकरी जी, काढ्यौ पूरबलौ भव बैर ॥ पूरी० ३ ॥ रोट्यां तो खावो दिन दश गलगलीजी, माथे मूंजनी पाग । म्हे म्हांरे पूठा सिध्यावस्यां जी, मत धरो हवे मन बैराग ॥ पूरी० ४ ॥

॥ ढाल १० वीं ॥

॥ महला में बेठी राणी कमलावती—ए देशो ॥

बाप कहै बेटी सुणो, बोलो नी बोल विचार । दोरी तो पाली म्हे मोटी करी, दुख देख्या तिणवार ॥ १ ॥ गुण गावो हे बेटी बापरा० ॥ बार बरसां रो हूं बर लावतो, उह परदेशां उठ जाय । सासू ने सुसरा दगधावता, कुढणो करती थांरी माय ॥ गु० ॥ २ ॥ भूख गई ए बेटी थारा तन तणी, हंस कर पूजी तूं गौर । पाछला पुण्य उदै करी, आ मिली छै थांने जोड़ ॥ गु० ॥ ३ ॥ जो घरमे धन छै अति घणो, इण धनने लागो लाय । आघो तो पाछो देख्यो नही,

दीनो जनम गमाय ॥ गु० ॥ ४ ॥ इसडो बेटी तूं क्यूं कहे, धनसूं पूरी होसी तेरी हूंस । रुपयां रो लालच मैं देख्यो नहीं, बाई थारे गलांरी सूंस ॥ गु० ॥ ५ ॥ मनमें तो हूंस होती घणी, कर दीधी नीरास। ज्युं ज्युं पिता दुख देखसूं, त्युं त्युं देसूं दुरासीस ॥ गु० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

माय कहे बेटी सुणो, बोलो बोल बिचार ।
बाबा साह्मी तूं बोलती; लाज नहीं छे लिगार ॥१॥

॥ ढाल ११ वीं ॥

॥ करम न छूटे रे प्राणियां—ए देशी ॥

म्हारां रुपिया माजी लेइने, घाल्या छे पेई मांहि । आगे भूख ज काढ़ता, अब रोट्यां ताऊजी खाय ॥ १ ॥ बेटी कहे माता सांभलो० ॥ फाटा कपडा तें पहेरती, रहती लोकाँरे दास । कपडा पहिरे रे तूं साबता, माजी म्हारे परसाद ॥ बे० ॥ २ ॥ पगमें न हूँती पोलडी, नहीं हूँती बिछिया पास । तोड़ा घड़ाया थें बाजणा, मैं पूरी थारी आस ॥ बे० ॥ ३ ॥ तरकारी ने थे तरसता, नहीं कोई घालतो राब । अब बाबाजी जीमे राबडा, ते तो म्हारे पर-ताब ॥ बे० ॥ ४ ॥ छाछ मांगणे थे जावता, नहीं

कोई घालतो आछ। अब धोली दूजे बारणे, माता म्हारे परसाद ॥ बे० ॥ ५ ॥ भाई बाप बिलखा हुंता, रहतां लोकाँरे दास। अब मरोड़ में मावे नही, म्हारा रुपियां रो गुञ्जास ॥ बे० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ११ वीं ॥

॥ जत्तनी देशी ॥

बूढला ने रीसज आवै, इणने लातां सूं धमकावे। देखे आण लोक लुगाई, नारी तो नीची धुन लगाई ॥ १ ॥ बुरा होइज्यो घर रा नाई, तिणसूं इसडी कीधी सगाई। पूरब भव कीया पाप, इण घर दीधी माय ने बाप ॥ २ ॥ मै तो खोटी करी कमाई, ज्यारे बूढा लारे आई। मोने जोडी रा मांगण आवता, फिर फिर ने पाछा जावता ॥ ३ ॥ तूं भाग में कठा सूं आयो, तो सूं हथलेवो जुड़ायो। कन्त बाणी सुणि तिसुलो चढायो, आंख्यां मे पिण लाली लायो ॥ ४ ॥ नीकल रे तु म्हारे घरसूं बार, फिर परण सूं जी दूजी नार। थें तो अकल कठे गमाई, तूं तो ल्यावे छे दूजी लुगाई ॥ ५ ॥ थारी साठी ने बुध नाठी, हूं तो आगली कूटूं छाती। म्हे थांने दोनूं मिलकर रोस्यां, थारा मूढ़ा सांमो क्यों कर जोस्यां ॥ ६ ॥ बाबा रुपयां सुं चित लायो, आपरा

कुलने कालो लगायो । जब औ रुपया पूरा पड जासी, बाबाजी काँई भाठा खासी ॥ ७ ॥ खीरां सेती खोलो भरियो, परमेश्वर सूं नहीं डरियो । बाबा आगला भव रो दीसे नाई, म्हारा जनम ने चाख लगाई ॥ ८ ॥ जोड़ी रो बर नहीं लायो, हीरां रे गल पत्थर ल्यायो । ओरां रे बर साहमो जोऊं, उठी सवारी भाजी ने रोऊं ॥ ९ ॥

॥ ढाल १२ वीं ॥

॥ सुगण सोभागी हो साहिब म्हारा—ए देशी ॥

हाथ जोडीने हूं कहूं कन्त ने, सांभल चतुर सुजाण ॥ सोभागी० ॥ संसार दीसै छे सहू कारीमो, सुनो धरम नी बाण ॥ सो० । काज सुधारो हो प्रीतम, परलोक नो० ॥ १ ॥ सामायक पड़िकमणो पोसो आदरो, नव तत्त्व सूं लावो प्रेम ॥ सो० ॥ श्रावक रा व्रत पालो मन सुधे, चीतारो चौवदह नेम ॥ सो० ॥ २ ॥ का० ॥ शीयल व्रत आपे दोनुं आदरां, थे तो ऊंमर पाई भरपूर ॥ सो० ॥ हीयो तो सरावो हो प्रीतम म्हारो, तरुण वयमें सूर ॥ सो० ॥ ३ ॥ का० ॥ पृथिवी पाणी हो तेऊ कायमे, बाऊ वनस्पति मांय ॥ सो० ॥ नरक निगोदे हो आपे, ऊपना बार अनन्ती आय ॥ सो० ॥ ४ ॥ का० ॥ मरण सिराणे हो प्रीतम

आवियो, तिन पिछेवडी बिरमाय ॥ सो० ॥ ममता मूको हो इण संसारनी, काम भोग द्यौ छिटकाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ का० ॥

॥ ढाल १३ वीं ॥

॥ सुख कारण भवियण, समरो श्री नवकार—एदेशी ॥

माता कहे सुण बेटी, मत कर इयां सों वाद। इयांरा हुकुम में रहिने, चलवो दिन ने रात ॥ १ ॥ बालक ने परणियो, सो तो कर गया काल। वूढा ने परणियो, हालरियो हुलसाय ॥ २ ॥ माजी सुणज्यो धरज्यो मन में राग। थांरा तो कुछ नही बिगड्यो, बेटीरा पतला भाग ॥ ३ ॥

॥ ढाल १४ वीं ॥

॥ अरणक री छे ॥

नव महीना लग भारे हूं मुई, दुख देख्या तिण वारो जी। तातो शीलो बेटी खायने, गरभ कियो प्रतिपालो जी ॥ १ ॥ मां सूं बेटी उवरण को नहीं० ॥ सील बोदरी तोनैं नीसरी, पड़दे लेई सुबाणी जी। हाथां सूं बेटी तने जीमावती, पावती ठण्ढो पाणी जी ॥ मा० ॥२॥ थारा रुपीया बेटी में लीया, साल्या छे छाती माहो जी। एक दुख रे बेटी माय तणो, जनम ऊरण नवि थायो जी ॥ मा० ॥ ३ ॥

॥ ढाल यत्तरी १५ वीं ॥

बेटी चैना कहै सुण बाई, चिन्ता मत कर तूं बाई । बाबल रुपीयां री चित ल्यावे, तरै बूढ़ा नै परणावे ॥ म्हारो बाबल आगे जोर न हालै, बेटी रो कह्यो न चालै । बाबो कोढ्या नै परणावे, बेटी नाकां सल नही लावे ॥ बाबै चोरंग्या ने दीधी, बेटी काली किना नहि कीधी । वलती बोलै छोटी बाई, चिन्ता कियां गरज न काई ॥ सखी सहेल्यां हथाई जोडै, मूंने देखी मुंह मचकोडै । बर नौ नाम लीया हूं लाजूं, सखी सहेल्यां में बोल न गाजूं ॥

॥ ढाल १६ वीं ॥

॥ जगत गुरु त्रि० ॥

बीरो कहै बेनड़ सुणो हे, एकज म्हारी बातं। मात पिता हलकी कहतां जी, लाजे आपणी जात ॥ (हे बेनड़ मनरो रोस निबार०) आपे दोनुं ऊपना रे, माता रे गरभज आय । माता दुख देख्या घणा जी, कह्या कठा लग जाय हे ॥ बे० ॥ २ ॥ लोकांने कह्यां सुण्यांरे, मत तोड़ीजे तान । हूं भाई तूं बहनड़ी रे, म्हारो कह्यो तूं मान हे ॥ बे० ॥ ३ ॥

॥ ढाल १७ वीं ॥

बेनड़ कहे बीरा सांभलो, बोलो बोल विचारो

रे । जे बहनड़ हुंती नही, तो रहता अकन कँवारो रे ॥ (स्वारथ रा तो वीरा सो सगा० १) अै ही मां उ ही बापजी, तुही बड़ो म्हारो भाई रे । खावण नें मिली रोटड़ी, आंख्यां गुदी पाछे आई रे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ भाभी मूंडे बोले नही, देखी मुह मचकोडे रे । हाव भाव जठे हो रह्या, उलटी काढ़े म्हारो खोढ़ी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ नणदोई जीमण आवियो, मुहरे पडे लालो रे । लुगाइयां ने भेली करे, देखो बाई रो भरतारो रे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ हूं बालक म्हारी अवसता भर जोवन में सारो रे । रुपीयांरो लालच देखियो, किम काटूं जमबारो रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ मनुष जनम में पाइयो, अहिलो जनम बीरा खोऊं रे । थे सगलां एको मतो कीयो, किण किणनै बीरा रोऊं रे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल १८ वीं ॥

॥ काया री बाड़ी कारमी—ए देशी ॥

भाभी कहे नणदल सुणो, एकज म्हारी बात । बूढ़ा रे लारे जावतां, हुकम करे दिन रात ॥ नणदल बाई सांभलो० ॥ १ ॥ नित नवा गाभा पहरती, नितं नवला करो सिंगार । कुमी नही किण बातरी, लोपै नहीं थांरी कार ॥ न० ॥ २ ॥ सौ वरस पूरा

हूसी, रहसी थांहरो राज । धन माल रहसी मोकलो, बैठी वौहरज्यौ ब्याज ॥ न० ॥ ३ ॥

॥ ढाल १९ वीं ॥

॥ वैंरारवौ मुनी ब्राह्मणी – ए देशी ॥

नणदल कहे भाभी सुणो, मोने मत करो भांड हो। थाहरी जायगा रो कोई नहीं, मोने हुई चाहौ रांड हो ॥ भाभी क़रम तणी प्रापत पाइये० ॥ १ ॥ बलद हुवे जे दूबला, कांधो न नाखे कोई हो । कन्या मुखथी ना कहै, बर लाव्रो म्हारे जोय हो ॥ भा० ॥ २ ॥ कोई जीमे लाडुवा, कोई लूखा बाकस खाय हो । पेलारा मुख देखने, मूरख झुरे मन मांहि हो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २० वीं ॥

॥ जत्तनो छै ॥

बेटी थारा माथा रो मोड़ो, तो ने इण बिन किसड़ी ठोड़ो । इंण सुहागणपणा सूं धाई सामाइक करिस्यूं सदाई ॥ १ ॥ नव तत्व सदा मन धरसूं, तपस्या ने पोसो क्ररसूं । घर सारू दान ज देसूं, मन मान्यो कारज करसूं ॥ २ ॥ सम्बत् अठार छत्तीसो आणी, मिगसर बलि मास बखाणी । चन्द फ़कीर ए बखाणी, सुणज्यो कलजुग नीसाणी ॥ ३ ॥

॥ इति श्री बूढ़ा रासो सम्पूर्णम ॥

॥ अथ जुवान रास ॥



॥ तिरिया चरित्र को चौढालियो लिख्यते ॥

॥ पास जिणेसर पूरण आशा—ए देशी ॥



लख चौरासी मे भटकत आयो, मनुष जमारो दोरो पायो। नव महिना गरभ मे ऊंधो झूल्यो, तद साहिब को नाम कबूल्यो ॥ १ ॥ कौल बोल लै बाहिर आयो, मात पिता मन हरष ज पायो। बालक नें तो आप रमावे, दूध पतासा मिसरी भावे ॥ २ ॥ भर जोबन मे सुरत संभारी, सखरी जोय परणावी नारी। सुन्दर बरनें टीको दीयो, सखरे लगनें साहो लीयो ॥ ३ ॥ कन्या ने हथलेवो दिरावे, ब्राह्मण मिल कर वेद भणावै। बहू लेकर के घरमें आयो, दत्त दायजो बहुलो ल्यायो ॥ ४ ॥ मात पिता मन हरष ज धायो राजी होकर घरमें आयो। बहू सासूरे पगमें लागी, शीली होय सपूती आघी ॥ ५ ॥ नान्ही बहूने लाड़ लड़ावै, मीठा मीठा भोजन खवावै। जिहां जावै तिहां साथ लें जावै, हीरा जडावरा गहणा पहिरावे ॥ ६ ॥ सासू कहे तैं करी कमाई, बहू गुणवन्ती बहू थांरे आई। नान्ही जूंवां लीखां काढे, सखरा घरमें मांडणा माडे

॥ ७ ॥ सासू कहे बहू मूखसूं बोलो, गहणा लेकर घूंघट खोलो। बहू सासूने दै ठवकारो, जाणै बाधी भैंस नी छाली चारो ॥ ८ ॥ सासू नणद रा छांदा जोवे, घर बारणे रोवणा रोवे । जब लागी लोगांरे काने, बात करे मालक सूं छांने ॥ ९ ॥ धणी बात नें कान नही दीयो, मुंहडो फेरकै पाछो कीयो। नारी बोलै करड़ा बोली, गहणा गांठां दीना खोली ॥ १० ॥ जब धणीने आई छै दया, तो ऊपर छै म्हारी पूरी मया। कहे धणीने जुदो घर मांडो, नही तर थांने करसूं भांडो ॥ ११ ॥ धणी बोले छै सुण हे नारी, तैं तो सखरी बात विचारी । मैं इतना दिन धनकुं कमायो, थां सगलां मिल मिल के खायो ॥ १२ ॥ तडकै ऊठीने कजियो करस्यां, धन बांटी नै ऊरो लेस्यां । तडकै ऊठी हूं पीहर जाऊं, फेर बुलायां बलै नही आऊं ॥ १३ ॥ जब सासू लेवणने आवे, सासू कहे तू बहू घर क्यौं नआवे । बहू कहे घर लाय लगावो, मेरै भावै घर कुवां में जावो ॥ १४ ॥ मैं इणांरे धरणो दीयो, अन्न खावण रो सौगन लीयो। सुणो सासूजी कर द्यो जुदी, नहीं तर करस्युं धणी फजीती ॥ १५ ॥ लोग लुगायां सूं नही डरसूं, बात पञ्चांमें करसूं। सासू कहे बहू तूं

भलां आई, तैं सगला कुलमें लाज लगाई ॥ १६ ॥ म्हां बेटानैं मोटो कियो, कांमण गारी तेनें बश कियो। सासू बहूने बेटो लड़िया, छाती मांहे धमीड़ा धरिया ॥ १७ ॥ धिग धिग रे थारो जीयो, धन बांटीने आधो दियो। मन को चाह्यौ सो बहू कीयो, पहिली ढाल हुई पूरी यो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

हाथ जोड नारी कहे, सांभल कंत सुजाण।
कह्यौ कदै लोपां नहीं, थांरा गलारी आण ॥ १ ॥
थांसू मोह अती घणो, चकरी डोर-समान।
थांनें कांई किसी हुयै, तो सती होऊं थांरी आण ॥२॥
जन्म दीयो मेरी मायड़ी, रूप दीयो करतार।
पूरब पुन्य पूरा कीया, भर जोवन भरतार ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

धणी बोलै छे सुण नारी हे, आग्यां लोपी थारी मति हारी हे। थारै कारण हूं जुदो हुवो रे, मैं तो लोगां में अपजश लीयो रे ॥ १ ॥ नव मास गरभ में राख्यो है, थारे कारण छेह मैं दाख्यो है। माय बापकी काया बलसी रे, तोसूं ऊठि सवारे लड़सी रे ॥ २ ॥ तूं छे मोटा कुलांरी जाई हे, लीजे शासरे शोभ सवाई रे। दूजी ढाल ए पूरी कीधी रे, निज नारी ने पति सीख दीधी रे ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

माय कहे सुण नानड्या, सांभल म्हारी बात ।
चरित्र देखो नारी तणा, कुण २ चाले थारे साथ ॥ १ ॥
सेठजी मन में जाणीयो, माजी कही खूब बात ।
पाड़ूं नारी पारखो, देखूं कुण चाले म्हारी साथ ॥ २ ॥
सुख भर पोढ़ पोढ़ो लियो, खांच्यो सांसो सांस ।
नारी मन मे जाणियो, काल कियो भरतार ॥ ३ ॥
घर में धन छे अति घणो, खबर हूसी तिण बार ।
सासू सुसरा आवसी, धन ले जासी बुहार ॥ ४ ॥
क्यांने कूका हूं करूं, नीद आंख्यांरी जाय ।
मरणोवालो मर गयो, रोवे मेरी बलाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

॥ चौपीनो ॥

काल गयो जाणी भरतार, हैलो न कीयो मूल गिमार । वासण कूसण भेला किया, रखे म्हारा जाइ लूंटिया ॥ १ ॥ बैठी बैठी करे विचार, जितरे भूख तो लागी अपार । भूखां मरतां नीन्द न आवे, क्युं-हीक भूखरो जतन करावे ॥२॥ गरम रोटो फिर घी घालियो, खूब मसल कर मैदो कीयो । चकचकतो कीयो चूरमो, मांहि घालियो घी सूरमो ॥ ३ ॥ सेठजी ने तडकै ले जासी, कांध्या वाला दोपहरां

आसी । भूखां मरतां रोयो नहीं जासी, लोग लुगाई करसी म्हारी हासी ॥ ४ ॥ कुछ तडके हूं भोजन करूं, पछे धायां धायां धमेडा धरूं । झीणो झीणो ल्याऊं रोज, पीछे न राखूं रोट्यांरो सोच ॥ ५ ॥ सासू सुसरा कहसी आय, तो भी न बैठूं भांणै जाय । दिन सगलौ देस्यूं अथमाय, सांझ समै ने लेस्यूं लाडू खाय ॥ ६ ॥ दूध रखायो छै तिणै बार, भर बाटको धर्‍यो छीकै मझार । तडके ऊठि दांतण नही कियो, मार गटागट कलेवो कीयो ॥ ७ ॥ सेठजी मन मे चिन्तवन करै, पेट बिगूती सामो धरै । मोने मर्‍यो जाणी ढक दीयो, रांड वजर रो हीयो कीयो ॥ ८ ॥ सेठजी सूतो सूतो हसै, या बैठी कलेवा कसै । ऊपर सूं बाजी आधी रात, सुणज्यौ इण नारी री बात ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

कनै आय जब देखियो, दांत में छै थोडो माल ।
मुरदारै किण कामरो, रहसी छाती मै साल ॥ १ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

मेख लेबणने जावै नार, ले लोढी यो हाथ मझार । आ तो दीसे कपटण नार, रखै दांत दै सगला पाड़ ॥ १ ॥ रे रे तूं सुलक्षण नार, ले लोढी मेरा दांत न पाड । तू तो कहती जलसूं लार, दीठो म्हे थारो हेज अपार ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सेठजी मन मे जांणियो, धिग २ यो संसार ।
को किणरो तो नहीं सगो, लेसूं संजम भार ॥ १ ॥

॥ ढाल ५ मी

सेठजी मन में गुस्सो ही आण्यो, इणरो काचो सगपण जाण्यो । मोने रात रो भूखो ही राख्यो, खूब मलीदा करिने चाख्यो ॥ १ ॥ तिरिया चरित्र कोई बिरला जाणे, सुर नरं पंडित सहुय बखाणे (एआंकडी) धन तो तो ने लागो ही प्यारो, हुं तो तो ने लागो ही खारो । थारो हीयो सराऊं लुगाई, दांत तोडणने तूं पत्थर ल्याई ॥ २ ॥ ति०॥ ऐसा थारा जो पराक्रमं जाणूं, तो हूं तोने क्यौ घरमे आणूं । माय बापांरे भेलोई रेतो, लोकांमे हूं तो जस लेतो ॥ ३ ॥ ति० ॥ झलक २ नारी सनमुख जोवे, भर २ आंख्या नारी रोवे । मै अपराधण पापणि हरामी, जो अपराध क्षमीजे स्वामी ॥ ४ ॥ ति० ॥ निरमल थे छो चन्द समानो, तेज तुमारो दिनकर जाणो । कीडी परं कटकी नही कीजे, तिरिया ने झूठो दोस न दीजे ॥ ५ ॥ ति० ॥ साध पणो थे काँई लेवो, थोडा दिन तो घरमें रैवो । तुम बिन मेरे जगमें न कोई, आवो सुख विलसाँ आपाँ दोई ॥ ६ ॥ ति० ॥ बिन दीपक

मन्दर नही सोवे, बिन पूताँ परिवार न होवे। खांविन्द बिन सोभे नही तिरिया, मने मत छोडो थाने छे किरिया ॥ ७ ॥ ति० ॥ बात तो अचरिज बोली निकाशी, मोने तो आवै छे हासी। अब थारे सूं घरबासो न थासी, तूं तो गले देवै मेरे फाँसी ॥ ८ ॥ ति० ॥ परदेशी नामे राजा भारी, तिणरे सूरी कन्ता नामें नारी। मालक नें तिण हाथसूं मार्‍यो, सूतर मे प्रभु आप उच्चार्‍यो ॥ ९ ॥ ति० ॥ साधुजी नगरी मांहे आया, बाणी सुणीने सहू हरषाया। हाथ जोडी ऊठ्या सेठ तिवारो, लीधो छै तिहांसूं संजम भारो ॥ १० ॥ ति० ॥ सम्बत् अठारे बरस सैंतीसे, दक्षिण देश मझारी। जोड करी हीराचन्द सारी, सांभलज्यो सगला नर नारी ॥ ११ ॥ ॥ ति० ॥ चतुर पुरुष ए चरित त्रियानो, सांभल खोलो थे पट हीयानो। तिरिया खोटीको सङ्गत मति करज्यो, सतगुरु वचन हीया मांहे धरज्यो ॥ १२ ॥ ॥ ति० ॥ कलजुग की नारी सब खोटी, कोई कपटि अनुरागी मोटी। काची सगाई कुटुम्ब नीं जाणो, वीतराग नो धरम बखाणो ॥ १३ ॥ ति० ॥

॥ इति श्री जुवानरास तिरिया चरित्र सम्पूर्णम ॥



॥ अथ माजी रो रास ॥



तो नाम धरावे माजी, आं तो धान धीणे सूं राजी रे माजी। धर्म करणने गेली रे माजी, पाप करणने पेहली रे माजी ॥ १ ॥ धरम में ताके सेरी रे माजी, पाप करणने बड़ेरी रे माजी। पुन करणो नही भांवे रे माजी, बैठी टाबरिया रमावे रे माजी ॥ २ ॥ पाछली रातरा जागे रे माजी, बासीदा ने लागे रे माजी। कांम करती नही थाकी रे माजी, सगलां पहली मांडे चाकी रे माजी ॥ ३ ॥ माजी ने प्यारा टूकड़ा रे माजी, खावे ठण्डा टुकड़ा रे माजी। परभव रो डर भूली रे माजी, रांध खवावे मूली रे माजी ॥ ४ ॥ घरमें बहू सारे रे माजी, घर का गण्डकड़ा ताड़े रे माजी। बैठी पुरसे भाणो रे माजी, जमीकन्दरो अथाणो रे माजी ॥ ५ ॥ माजी काढ़े मूढ़ासूं गाली रे माजी, बोले आल पम्पालो रे माजी। मांजीने उरी बुलावो रे, रायता में लूण घलावो रे माजी ॥ ६ ॥ माजी जूंवा लीखां मारे रे, माजी सुधर्‍यो जनम बिगाड्यो रे। माजी कुमधण्या सूं भोली रे, माजी कर दी थाली होली रे ॥ ७ ॥

माजी दीसै डीलमे जाड़ी रे, माजी दान देवेणने आडी रे । माजी करे हरी री कतली रे, माजी छाछज घालै पतली रे माजी ॥ ८ ॥ माजी अणसोयो अनाज कूटे रे, माजी वाउकाय ने लूटे रे । माजी पात्र भणी नवी पोखे रे, माजी जीवांरा गला मोसे रे ॥ ९ ॥ माजी सबसूं बड़का बोली रे । या तो पेलां री बुद्धि तोली रे माजी, आश्रम आई चोथ रे माजी ॥ १० ॥ लालच नही हिवे पुन्यंपणानी माजी, तेह थी घरना सगला राजी रे माजी । माजी पुन्य किया बहुबारो रे, जाणे लिखमी रो अवतारो रे माजी ॥ ११ ॥ माजी ऊंची बैसै गादी रे, माजी सात पोतानी दादी रे । माजी दया धरम री नेमी रे, जिण जाया अर्जुन भीमो रे माजी ॥ १२ ॥ माजी परमाद में नही पेसे रे, माजी सामाइक लेई बैसे रे । माजी बोल चरचा चीतारे रे ॥ १३ ॥ माजी पडिकमणो सुध जोवे रे, माजी अतिचार आलोवे रे । माजी हरी काय सब त्यागी रे, माजी जिनधर्मरी बडी रागी रे ॥ १४ ॥ माजी सुद्ध सरधा पाई रे, माजी सबसे इधकी बाई रे- माजी पाछली रातरी जागे रे, तुमे सुणज्यो बाई भाई रे माजी । जिन सुकरत करसे. एमं रे, ते तो भव सागर थी तरसी रे ॥ १५ ॥ ❀

॥ इति माजी रास सम्पूर्णम ॥

॥ अथ चन्दन मलयागिरी बारता ॥



॥ दोहा ॥



हां चन्दन मलयागिरी, कहां सायर कहां नीर । ज्युं ज्युं पड़ी अवस्था, त्युं त्युं सहे सरीर ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री विक्रम पुरे, प्रणमी श्री जगदीश । तन मन जीवन सुख करण, पूरण जगत जगीश ॥ २ ॥ बर-दायक बर सरसती, मत्ति विस्तारण मात । प्रणमी मन धर मोदसों, हरण बिघन सिंघात ॥ ३ ॥ मम उपगारी परम गुरु, गुण अक्षर दातार । बन्दौं ताकें चरण जुगं, भद्रसेन मुनि सार ॥ ४ ॥ कहां चन्दन कहां मलयागिरी, कहां सायर कहां नीर । कहिये ताकी बारता, सुणियो सब बड वीर ॥ ५ ॥ नगर मनोहर कुसुमपुर, तीन भुवन विख्यात । बाग बावड़ियां है बोहत, सुरग पुरी है भ्रात ॥ ६ ॥ बसे विचक्षण लोक सब, भोगी बसे जे छयल । ठोर ठोर गावत हंसतं, खेलत करत ज सयल ॥ ७ ॥ शीतल जल सरोवर भरे, करत मधुप झणकार । पणघट पांणी भरणकूं, लाखुं वहत पणिहार ॥ ८ ॥ गढ़ मठ मन्दिर प्रोर सब, सब जैनका प्रासाद ।

फरकत ध्वजा मानुं सिखर, करत गगननसूं बाद ॥ ९ ॥ पवनवेग जित पवन जित, चलति पञ्च गति धार । तरण तेज तीखे तुरी, करत हणण हंकार ॥ १० ॥ राजत है राजा तिहां, चन्दन चन्द समान । न्यायवन्त नृप राम से, रूप रतन गुण खान ॥ ११ ॥ ताखु प्रिया मलयागिरी, शीलवन्ती शिर मोर । रूपवन्ती रति अपछरा, अैंन मैंनुकी कोर ॥ १२ ॥ मृगनयनी चन्द्राननी, पिकवैनी मृदु गात । तनु चमकत घन दामनी, दशन चन्द्रिका भांत ॥ १३ ॥ अलबेली अलबेल गति, काम कनकमइ बेल । जाणके रतिपति खेलकूं, बिरच वनवायुं खेल ॥ १४ ॥ प्रेम सरस भींनी रहत, अपने पियाके संग । उदय अस्त जाणे नही, करत केली रति अंग ॥ १५ ॥ मालती फूल मलया गिरी, पीउ उत्तम मकरन्द । मगन रहत भोगी भंवर, चन्दन चतुर नरिन्द ॥ १६ ॥ तखु सुत सायर नीर दोउं, तुल नभ चन्द दिनेश । मान हुई सरग बरज्या, गंगा तनु जग वेस ॥ १७ ॥

॥ इति श्री चन्दन मलयागिरी वारता प्रथम कलिका सम्पूर्णम ॥

॥ इक दिन चन्दन महल महि, पोढ्यो थो निस चैन । प्रगट होय कुल देवता, आय कह्यो हित वैण

॥ १८ ॥ अरे हों, चन्दन जागिहो, कहि सूतो नहि मात। कहो क्या आज्ञा होत है, आप कहो हित बात ॥ १९ ॥ (सुदेवी उवाच) चन्दन तुम जीव कष्ट है, दोई सुत त्रिया समेत। सावधान तुम्ह करणको, हूं आई इह हेत ॥ २० ॥ सुणत वैण चिन्ता बढ़ी, अति अकुलाणो राउ। चन्दन सिरिओ कष्टकों, पड्यो अचिंत्यो आउ ॥ २१ ॥ (चन्दन उवाच) राजा चन्दन दीन हुइ, बिनौ करी ग्रहि पाय। कहि विधि छूटिस मात जी, सो कछु हेत बताय ॥ २२ ॥ फिर बोली कुलदेवता, तो जे दुरिय बिनास। राज रिद्धि सुख छांडके, जे भजिहो बनवास ॥ २३ ॥ राजा मन्त्री पूछ सब, उठाई प्रियाने जाय। सूते बाल जगायके, लीये गले सें लगाय ॥ २४ ॥ राजा राणी निशिह भरी, करि जीउ सुं इकतार। अपने मन्दिर महिल जंन, छोड चले निरधार ॥ २५ ॥ रात बहुत बालक रोवत, पावत नाहि न बाट। सुते द्रुमकी ओट ले, तल न बिछावन खाट ॥ २६ ॥ ग्रह फाटी परगटी भया, मोरे मांज्या सोर। वन २ चिरिया चह चही, चकवा करत हिव कोर ॥ २७ ॥ तिहां पंथ च्यारे पडे, जिहां सहाई भाग। कहां निकसे अब कहां वसें, कितहुं न पायो थाग ॥ २८ ॥ भ्रमत २

आपदसहित, दुख देखत वस करम । आये च्यारूं कनकपुर, कुशल खेम जिन धरम ॥ २९ ॥ तहां एक मसनद जायके, रहे छोड़ मद मान । टहल दई तन धामकी, सिर लीवी चाढ सुजान ॥ ३० ॥ देव सेव चन्दन करत, राणी मञ्जत थाल । देखा हो गत करमकी, गऊ चरावत बाल ॥ ३१ ॥ इक दिन पिय कूं पूछ कर, पाय पियाको वैन । जंगल चली मलयागिरी, कोमल कठिया लेन ॥ ३२ ॥ बीन २ बन लकड़ी कियो, भार ठव्यो निज मत्थ । ले आई मलयागिरी, सौदागर के सत्थ ॥ ३३ ॥ पाकी जंगल लाकड़ी, अरु सूकी द्रुम डार । लै हो वीरा लाकड़ी, ठाढी करत पुकार ॥ ३४ ॥ या कोयल कहुंकी किहां, किस दरखत किस डाल । सौदागर आयो निकस, ख्याली देखत ख्याल ॥ ३५ ॥ तेसैं भी मलयागिरी, नागर चतुर सुजान । लेहू बीरा लाकडी, बोली मधुरी वाण ॥ ३६ ॥ मोर टेर सी ले गई, सरल सुहांणो साद । मानूं गिरधर लालकी, व्रज वंशीको नाद ॥ ३७ ॥ वंशी कोन बजाय है, खबर करो किंहि ठोर । मदकै माते बोल है, किस बन कोयल मोर ॥ ३८ ॥ लागी हो तन तीर सी, किधों करवत की धार । काढ़ कलेजो ले गई, सौदागर को

सार ॥ ३९ ॥ प्रगटी वेदन विरहकी, मदन मरोस्यो गात। सौदागर को भूल गई, सब सोदुन की बात ॥ ४० ॥ अरु ह्यो बंशीको नही, (बजाई है) ना कोयल ना मोर । कोह कहत है कठियारड़ी, साहब चितकी चोर ॥ ४१ ॥ म्हारी यासों क्या कहत है, इह नही है सांची बात । ऐसी कोउ न बोल है, म्हारी हुंनकी जात ॥ ४२ ॥ रूप रेख गुण आगली, ललित सुगति मृदु हांस । ऐसी तैसी राखिये, आंख-नहूंके पास ॥ ४३ ॥ चित चटपट लागी सुनत, मुरि २ निरखत रूप । कठियारी के दरसकी, देख-नकी भई चूप ॥ ४४ ॥ जावो मेरे यार तुम, लेवो ताकूं बुलाय। राखेगो कोउ अवर जन, विचही से बिलमाय ॥ ४५ ॥ चाकर बन्दे हुकम के, हुकम चढायो सीस। सोदागर कु आदमी, धाए हैं दश वीश ॥ ४६ ॥ री कठियारी सुनत है, वेगि भरोठो ल्याव। साहिब तोकुं टेर है, और ठोर मत जाव ॥४७॥ चलि आई मलयागिरी, सोदागरके सत्थ । डार भरोठो यूं कह्यो, श्री रामजी सत्य ॥ ४८ ॥

अथ आपदा वर्णन ।

॥ बांहे विलिये कांचको, अरु पीतरको पंगवार । कर दोउ कंकन लाखके, गलमें पोतनको हार

॥ ४९ ॥ कानन विरुवा काचकी, आनन ओपम चन्द। पहिरण चोसी डण्डियन, जग डण्डण बिंब मन्द ॥ ५० ॥ पाऊ पायल भरथकी, तरुआ का अणवट्ट। कांसीकी जे हरति हर, वर वाजणी सुघट्ट ॥ ५१ ॥ मगन होय गयो रूपमें, रंग लागो चित बोल। सोदागर बोल्यो तबै, अदभुत बोल अमोल ॥ ५२ ॥ आवो सुन्दर गुण महो, बैसो यो तुम ठाम। हमकूं कहिये आपना, बाप दादाको नाम ॥ ५३ ॥ कौन जातके तुम कौन हो, बसते हो किहुं देश। नीके मानस देखहो, यो तुम कैसा वेस ॥५४॥ तब बोली मलयागिरी, सुन सोदागर सेख। हम शिर अैसे दुखके, लिखे विधाता लेख ॥ ५५ ॥ दुइ करि हरि पूजे नही, वर तुलसी दल पान। भजन भज्यो न गुसाइयां, ताके फल दुख जान ॥ ५६ ॥ बहोत भांत सेवे बहुत, पट मण्डपके देव। साहिब सिरजन हारकी, पूरी करी न सेव ॥ ५७ ॥ दुखिया मानस जग भर्यो, गये केते दुख रोइ। अब फिरि कोउ देखि है, तो हमसे दुखिय न कोइ ॥ ५८ ॥ नाम हमारे दुखियन, कौन जात कुल ठोर। हम साहिब के चोर हैं, तुम जानोगे कछु ओर ॥ ५९॥ इहां तुमकूं आये सुने, कनक सहरमे अज्ज। मैं

कठियारी काठको, आई बेचन कज्ज ॥ ६० ॥ आये सो कीनी भली, खरे हमारे भाग । हम सब लीनी लाकड़ी, जो चाहे सो मांग ॥ ६१ ॥ प्रीति कियाना ढोयके, गांठ हिरदाकी खोल । करि कछु सोदा प्रेमका, कहि कछु सुरतिका मोल ॥ ६२ ॥ (राजारी राणी वाक्यं०) सुरति मोल ने समझहूं, प्रीत न जानूं तेम । हम कठिया बेची बहुत, कबहुं न वेचा प्रेम ॥ ६३ ॥ जान देहु अबके समै, प्रेम प्रतीत की बात । कितियेक कठिया डारि हैं, टके पांच के सात ॥ ६ ॥ साहिब बेगि दिवाइये, ढीलन को नही काम । हम घर खाव्यो खाइये, गांठ न दमरी दाम ॥ ६५ ॥ सोदागर किउं दीन्हे तबे, गणि कठियन के दाम । कठियारी आशीस दे, भलो करो तुहि राम ॥ ६६ ॥ (सोदागर उवाच) री कठियारी सुनत है, इहुं डेरो इहुं ठोर । बहुत भरोठो ल्याइ है, मति किहुं फिरियो न ओर ॥ ६७ ॥ लोभाणी मयलागिरी, भोरी भोरें भाउ । दिनकी कठिया डारि है, उठ फिर देखत दाउ ॥ ६८ ॥ इक दिन साथ चलाय सब, आप रह्यो रस हेत । दाम काज मलयागिरी, आई कृत संकेत ॥ ६९ ॥ साहिब दमरे दीजिये, तुम्ह पै रहे उधार । मुसकिल तोपै मांगि हैं, रोक पईसे च्यार ॥ ७० ॥ पिउ २

करत मलयागिरी, (अरु) डारत दृग दोउ नीर ।
घाल वहिलमें ले गयो, सोदागर बे पीर ॥ ७१ ॥
पीउ बिछुरत दृग ना मिलत, नींद उचट गई नास ।
सुध बुध सूरत सब गई, गई भूख गई प्यास ॥७२॥
चन्दन बिन मलयागिरी, दिन २ सूकत जान । ज्युं
जोगीसर जोगमें, लीन रहे इक तान ॥ ७३ ॥
सुन्दर सोवत रातकूं, छतिया पर कर लाय । हृदय
कमल चन्दन बसे, कबहूं निकस न जाय ॥ ७४ ॥
चन्दन बिन (जे) मलयागिरी, कैसे धरे जु धीर ।
झुर २ सुन्दर आपनो, पंजर कीयो शरीर ॥ ७५ ॥
(सोदागर उवाच) री कठियारी क्या झुरै, है करि
दृढ बर मोय । पान फूल बिच राखस्यूं, सुखनी
सुन्दर तोय ॥ ७६ ॥ (राणी वाक्यं) मरिहूं जइहूं
जीवतें, अवर तजूं हूं प्रान । इण भव चन्दन पिउ
बिना, शिर न धरूंगी आन ॥ ७७ ॥ जिहि मुख
(रुचि) अमृत (बिष क्युं) पीजिये, जो लख लागे
भूख । तिन मुख बिष क्यौं पीजिये, अचख्यो रस
पीयूष ॥ ७८ ॥ इणि नयने संकल्प किये, तिण मुख
पीऊं कोस । प्रीतम चन्दन ज्युं बीजो, करूं तो हम
मीबे कोस ॥ ७९ ॥ जिहां रंगे रस प्रीय कौं, भिर-
स्यो चन्दन पीव । जिहां रंग ओर न निरख हूं, जो

कोउ हम थे जीव ॥ ८० ॥ अगनि मांझ जरबो भलो, भलो ज बिषको पान । शील खण्डवो ना भलो, ना कुछ शील समान ॥ ८१ ॥ अहो वीर मोहि छोडिदे, कहत न पावे अन्त । अपनो शील न खण्डहों, कोन कोप्यो है बिरतन्त ॥ ८२ ॥ (द्दिव राजा वर्णन) गली २ देखै फिर्‌यो, ढूंढी सब बन राय । पाई कहुं न मलयागिरी, रचि पचि बैठो आय ॥ ८३ ॥ चन्दन कूं मलयागिरी, थी सुख दुखको ठाम । देव बिछोहा पारके, कोन अधरम कीयो काम ॥ ८४ ॥

॥ इति श्री चदन मलयागिरी बारता द्विती यकलिका सम्पूर्णम् ॥

॥ बिलपत सायर नीर दोउ, अरु पूछति बिललात । आज अजूहन आवही, तात हमारी मात ॥ ८५ ॥ पूत तुम्ह मइया आतु है, धीरे रहो टुक बेर । सायर नीर दोऊ खडे, तिहां रहे मातकूं हेर ॥ ८६ ॥ कैसे सायर नीर दोउ, निरख रहे गृहद्वार । जैसे बरषा रितु समै, चातक चोंच ल्ये पसार ॥ ८७ ॥ अरी हो मइया परी, छोर सकल जञ्जाल । बेर कलेवा की भई, करण हमारी सार ॥ ८८ ॥ मइया मइया करत है, सादन घेरी मइया । बाछरु कैसे जीवें, गइयां बिन दइया ॥ ८९ ॥ इक दुख त्रियके बिर-